



www.sarkarivacancy.info

**Quick
Book**



भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन

IAS, PCS सहित अन्य एकदिवसीय परीक्षाओं (जैसे- NDA, CDS, CAPF, SSC, CPO, UGC-NET इत्यादि) के लिये समान रूप से उपयोगी

घर बैठे IAS बनने का सपना करें साकार!



दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम Distance Learning Programme

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे दृष्टि संस्थान द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री, विशेष रूप से ऐसे अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर ही तैयार की गई है जो किसी कारण से दिल्ली आकर कक्षाएँ करने में असमर्थ हैं। यह पाठ्य-सामग्री सिविल सेवा परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) एवं परीक्षोपयोगी बनाया गया है।



सामान्य अध्ययन (27+3 Booklets)
(प्रा.+मुख्य परीक्षा) **₹12,000/-**

सामान्य अध्ययन (23 Booklets)
(मुख्य परीक्षा) **₹10,000/-**

सामान्य अध्ययन (27+3+8 Booklets)
+ सीसैट **₹15,000/-**

हिन्दी साहित्य- ₹6,000/-

दर्शनशास्त्र- ₹5,000/-

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें



www.facebook.com/drishtithevisionfoundation



www.twitter.com/drishtiiias



For any query please contact:

8130392354, 56, 87501-87501, 011-47532596



भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन



दृष्टि पब्लिकेशन्स

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501

Website:

www.drishtipublications.com, www.drishtiias.com

E-mail :

info@drishtipublications.com

प्रथम संस्करण- अगस्त 2017

मूल्य : ₹ 340

प्रकाशक

दृष्टि पब्लिकेशन्स,

(A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.)

641, प्रथम तल,

डॉ. मुखर्जी नगर,

दिल्ली-110009

विधिक घोषणाएँ

- ★ इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- ★ हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- ★ सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- ★ © कॉपीराइट: दृष्टि पब्लिकेशन्स (A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.), सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।
- ★ एम.पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेज़-2, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

प्रिय पाठको,

आपके समक्ष 'भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन' के रूप में 'Quick Book' शृंखला की तीसरी कड़ी प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। 'भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन' से संबंधित इस पुस्तक को संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोगों सहित विभिन्न एकदिवसीय प्रतियोगी परीक्षाओं के निर्धारित पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखकर लिखा गया है। हमें पूरा विश्वास है कि इतिहास के तीन खंडों (प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत और आधुनिक भारत) में विभाजित इस पुस्तक में जिस तरह से एन.सी.ई.आर.टी., इग्नू, एन.आई.ओ.एस. की पुस्तकों सहित सरकारी वेबसाइटों के मूल तथ्यों और विश्लेषणों का समावेश किया गया है, वह न सिर्फ अभ्यर्थियों की सफलता में 'मील का पत्थर' साबित होगा, बल्कि जिज्ञासु पाठकों की ज्ञान-पिपासा को भी तृप्त करेगा।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे जाने वाले सामान्य अध्ययन के प्रश्नपत्रों का विश्लेषण करने पर हमने यह पाया कि इतिहास के तीनों खंडों से ही सबसे अधिक प्रश्न पूछे जाते हैं। अतः यह कहने में संशय नहीं है कि सफलता के लिये 'इतिहास' विषय को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। सच तो यह है कि इस विषय की सटीक तैयारी के बिना एकदिवसीय परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करना लगभग असंभव है।

अब सवाल यह उठता है कि जब इतिहास से संबंधित पाठ्य-सामग्री की बाज़ार में कोई कमी नहीं है तो फिर एकदिवसीय परीक्षाओं में हिंदी माध्यम के परीक्षार्थियों की सफलता दर इतनी न्यून क्यों है? हमारी टीम द्वारा किये गए शोध में हमने यह पाया कि बाज़ार में इतिहास की जितनी भी पुस्तकें हैं, उनमें से अधिकतर परंपरागत पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं। साथ ही, कई पुस्तकों में दी गई जानकारीयों भ्रामक भी हैं। कुछ मानक पुस्तकों में सही जानकारी है भी तो उनकी भाषा अत्यंत क्लिष्ट है। ऐसा भी देखने को मिलता है कि प्रचलित पुस्तकों में भाषागत अशुद्धियों की भरमार है जो हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की सफलता के रास्ते में एक गंभीर बाधा है। इन्हीं कारणों से परीक्षार्थियों में विषय की सही समझ विकसित नहीं हो पाती। निःसंदेह इस लिहाज़ से बाज़ार में बिक रही ये पुस्तकें परीक्षोपयोगी नहीं हैं।

उपर्युक्त समस्याओं के समाधान का संकल्प 'दृष्टि टीम' ने लिया। इतिहास जैसे विस्तृत विषय को लगभग 330 पृष्ठों में समेट पाना दुस्साध्य था, लेकिन हमारी टीम ने इस चुनौती को स्वीकार किया और लगभग 8 महीनों के अथक परिश्रम से इस कार्य को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि इस पुस्तक में दी गई जानकारी अभ्यर्थियों के लिये 'गागर में सागर' के समान है। पुस्तक लिखने के दौरान हमारी टीम के सदस्यों के बीच कई तथ्यों को लेकर कुछ मानक पुस्तकों में दी गई भ्रामक जानकारी के कारण वैचारिक मतभेद भी रहे, लेकिन अंततः भारत सरकार द्वारा प्रमाणित पुस्तकों को आधार बनाकर उन मतभेदों को विवेकपूर्वक सुलझा लिया गया। पुस्तक में इतिहास से संबंधित घटनाओं व उनकी तिथियों को एक-दूसरे से अंतर्संबंधित करके इस तरह से लिखा गया है कि पुस्तक बोझिल न महसूस हो, बल्कि रुचिकर लगे। भाषा के स्तर पर इस बात का खास ध्यान रखा गया है कि त्रुटियाँ नगण्य हों। साथ ही, जितना ध्यान इस बात का रखा गया है कि विषय संबंधी किसी महत्वपूर्ण तथ्य से आप अनभिज्ञ न रह जाएँ, उससे कहीं ज़्यादा ध्यान इस बात का रखा गया है कि कोई अनुपयोगी जानकारी आपका समय व्यर्थ न करे। पुस्तक में संघ सहित विभिन्न राज्य लोक सेवा आयोगों में पूछे गए प्रश्नों का संकलन भी किया गया है ताकि आपको यह ज्ञात हो सके कि विभिन्न आयोगों में अध्याय संबंधी किस प्रकृति के प्रश्न पूछे जाते हैं, जिससे आपकी तैयारी के साथ सही मार्गदर्शन भी होता रहे व आप अपनी जानकारी का स्वमूल्यांकन भी कर सकें। हमें पूरा विश्वास है कि यह पुस्तक आपकी तैयारी में वरदान साबित होगी।

हमें भरोसा है कि 'भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन' के साथ 'Quick Book' शृंखला की आने वाली अन्य पुस्तकें भी आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेंगी। मेरा निवेदन है कि आप इन पुस्तकों को पाठक के साथ-साथ आलोचक की नज़र से भी पढ़ें। अगर आपको कोई भी कमी दिखे तो बेझिझक 8130392355 नंबर पर वाट्सएप मैसेज से भेज दें। आपकी टिप्पणियों और सुझावों के आधार पर ही हम इन पुस्तकों को और प्रामाणिक बना सकेंगे।

साभार,
प्रधान संपादक
दृष्टि पब्लिकेशन्स

अनुक्रम

खंड-1: प्राचीन भारत

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत एवं प्रागैतिहासिक काल	1-10
2. सिंधु घाटी सभ्यता	11-15
3. वैदिक सभ्यता	16-22
4. छठी शताब्दी ईसा पूर्व का भारत	23-27
5. प्राचीन भारत पर विदेशी आक्रमण	28-30
6. प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन	31-42
7. मौर्य साम्राज्य (322 ई.पू.-185 ई.पू.)	43-52
8. मौर्योत्तर काल	53-60
9. गुप्त साम्राज्य	61-69
10. गुप्तोत्तर काल/पूर्व मध्यकाल	70-80
11. संगम काल	81-86
12. प्राचीन भारत के विविध पहलू	87-92

खंड-2: मध्यकालीन भारत

13. मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत	93-99
14. अरबों द्वारा सिंध की विजय	100-103
15. तुर्कों के आक्रमण से पूर्व भारतीय राजवंश	104-108
16. तुर्कों का आक्रमण	109-111
17. दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.)	112-147

18. सूफी एवं भक्ति आंदोलन	148-154
19. मुगल काल	155-195
20. मराठा साम्राज्य	196-201
21. विविध	202-204

खंड-3: आधुनिक भारत

22. 18वीं शताब्दी में स्थापित नवीन स्वायत्त राज्य	205-211
23. भारत में यूरोपीयों का आगमन	212-216
24. अंग्रेजों की भारत विजय	217-226
25. भारत में ब्रिटिश शक्ति का विस्तार	227-231
26. भारत में ब्रिटिश शासकों की आर्थिक नीति एवं उसका प्रभाव	232-239
27. 1857 का विद्रोह	240-245
28. प्रमुख भारतीय विद्रोह	246-252
29. ब्रिटिश भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन	253-260
30. भारत में राजनीतिक चेतना का विकास	261-267
31. कॉन्ग्रेस की स्थापना से पूर्व राजनीतिक संस्थाएँ	268-270
32. राष्ट्रीय आंदोलन (1885-1947 ई.)	271-308
33. भारत के गवर्नर जनरल तथा वायसराय	309-317
34. भारत में संवैधानिक विकास	318-322
35. विविध	323-332

खंड-1

प्राचीन भारत



भूमिका

इतिहास अतीत में किये गए मानव-प्रयास की आनुक्रमिक कथा है। इतिहास के आवश्यक अंग हैं- अतीत, सभ्य युग, मानव-प्रयास और घटनाओं का आनुक्रमिक प्रसार। 'वर्तमान' जो अभी जीवित है, इतिहास का विषय नहीं है। यद्यपि वह शीघ्र अतीत होकर उसका अंग हो जाएगा। घटना जो संपन्न हो चुकी- चाहे अभी, चाहे सहस्राब्दियों पूर्व, इतिहास का अंग हो जाती है। इतिहास विगत घटनाओं का चिंतन करता है। जब हम ऐतिहासिक क्रम में घटनाओं का वर्णन करते हैं तब उन्हें काल-प्रसार में वितरित करते हैं और जब भौगोलिक क्रम से इनका उल्लेख करते हैं तब उन्हें स्थानानुसार रखते हैं। इतिहास और भूगोल दोनों कारण और परिणाम के साथ घटनाओं की तिथि और स्थान को व्यवस्था प्रदान करते हैं। अतः निरन्तरता व परिवर्तनीयता का समसामयिक विश्लेषण ही इतिहास है। इतिहास हमारी और हमारे समाज की दशा व दिशा का निर्धारण करता है और भविष्य को सुरक्षित बनाने का प्रयास करता है।

प्राचीन भारत का इतिहास मानव सभ्यता के उस समय का इतिहास है, जब वह अपने निर्माण की अवस्था में था। विशाल पर्वतमालाओं और नदियों की भूमिका प्राचीन भारत के इतिहास के निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण रही है। वर्तमान मानव का स्वरूप क्रमिक विकास का परिणाम है। इतिहासकारों ने अध्ययन हेतु सरलता की दृष्टि से इतिहास को कई भागों में वर्गीकृत किया है। प्राचीन भारत उसी वर्गीकरण का एक भाग है। ऐतिहासिक कालक्रमों का अध्ययन हम ऐतिहासिक सामग्री/स्रोतों के आधार पर करते हैं। चूँकि इतिहास उन बातों का वृत्तांत होता है, जो भूतकाल में हुई हों, इसलिये मूलतः महत्वपूर्ण तथ्यों को चुनकर अतीत का पुनर्निर्माण करने को ही इतिहास कहते हैं। ये महत्वपूर्ण तथ्य हमारे लिये कई रूपों में सुरक्षित हैं जिन्हें हम इतिहास की सामग्री/स्रोत कहते हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत अनेक और विविध प्रकार के हैं। हमारे इतिहास के स्रोतों के क्षेत्र में किसी नदी के तट पर एक निर्जन टीले को खोदकर निकाले गए प्रागैतिहासिक काल के मनुष्य द्वारा पत्थर को काटकर बनाए गए गँडासों से लेकर भव्य इमारतों के भग्नावशेषों और राजकवि बाण के 'हर्षचरित' तक सभी प्रकार की चीजें शामिल हैं। अपने अध्ययन की सुविधा के उद्देश्य से हम उन्हें मोटे-मोटे रूप से दो श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं- एक तो साहित्यिक और दूसरा पुरातत्त्व संबंधी सामग्री। इन दो श्रेणियों को फिर और छोटी-छोटी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

पुरातात्विक स्रोत अभिलेख

- प्राचीन भारत के अधिकांश अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तंभों, ताम्रपत्रों, दीवारों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं।
- सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के बोगजकोई से प्राप्त अभिलेख हैं। इस पर वैदिक देवता-मित्र, वरुण, इंद्र और नासत्य के नाम मिलते हैं। इनसे ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में मदद मिलती है।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं जो 300 ई. पू. के लगभग हैं। डी.आर. भंडारकर नामक विद्वान ने केवल अभिलेखों के आधार पर ही अशोक का इतिहास लिखने का सफल प्रयास किया है।
- अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी तथा अरमाइक लिपियों में मिले हैं।
- मास्की, गुर्जरा, निट्टूर एवं उदेगोलम से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है तथा अन्य अभिलेखों में उसे 'देवानापिय पियदसि' (देवों का प्यारा) कहा गया है।
- सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि में लिखित अशोक के अभिलेख को पढ़ा था।
- अशोक के बाद भी अभिलेखों की परम्परा कायम रही। अब हमें अनेक प्रशस्तियाँ मिलने लगीं जिनमें दरबारी कवियों अथवा लेखकों द्वारा अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा के शब्द मिलते हैं। इनसे संबंधित शासकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है, जिनमें प्रमुख हैं-

अभिलेख	शासक	विषय
हाथीगुम्फा अभिलेख	खारवेल	खारवेल के शासन की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण
जूनागढ़ अभिलेख (गिरनार अभिलेख)	रुद्रदामन	इसमें रुद्रदामन की विजयों, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवरण प्राप्त होता है।
नासिक अभिलेख	गौतमी बलश्री (रचनाकार)	सातवाहनकालीन घटनाओं का विवरण (गौतमीपुत्र शातकर्ण से संबंधित)
प्रयाग स्तंभ लेख	समुद्रगुप्त	इसके विजय एवं नीतियों का पूरा विवरण
ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय	हर्ष एवं पुलकेशिन द्वितीय के युद्ध का विवरण
भीतरी स्तंभ लेख	स्कंदगुप्त	इसके जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण
मंदसौर अभिलेख	मालवा नरेश यशोधर्मन	सैनिक उपलब्धियों का वर्णन

- नोट:** अभिलेखों के अध्ययन को 'एपिग्रेफी' कहा जाता है।



महापाषाण काल

- नवपाषाण युग की समाप्ति के बाद दक्षिण में जिस संस्कृति का उदय हुआ, उसे महापाषाण काल कहा जाता है। पत्थर की कब्रों को 'महापाषाण' कहा जाता था। इन कब्रों में मानवों को दफनाया जाता था। महापाषाण काल से संबद्ध लोग साधारणतः पहाड़ों की ढलान पर रहते थे। दक्कन, दक्षिण भारत, उत्तर-पूर्वी भारत तथा कश्मीर में यह प्रथा प्रचलित थी। यहाँ की कब्रों में लोहे के औजार, घोड़े के कंकाल तथा पत्थर एवं सोने के गहने भी प्राप्त हुए हैं।
- महापाषाण काल में आंशिक शवाधान की पद्धति भी प्रचलित थी जिसके तहत शवों को जंगली जानवरों के खाने के लिये छोड़ दिया जाता था। ब्रह्मगिरि, आदिचन्नलूर, मास्की, चिंगलपत्तु, नागार्जुनकोंडा आदि इसके प्रमुख शवाधान केंद्र हैं।
- महापाषाणकालीन लोग धान के अतिरिक्त रागी की खेती भी करते थे। इतिहासकारों ने महापाषाण काल का निर्धारण 1000 ई. पू. से लेकर प्रथम शताब्दी ई. पू. के बीच किया है।

अभ्यास प्रश्न

1. बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रायः चित्रित चित्रकारी है, जो
(a) अजंता में है (b) बादामी में है
(c) बाघ में है (d) एलोरा में है
IAS, 2017
2. विन्ध्य क्षेत्र के किस शिलाश्रय से सर्वाधिक मानव कंकाल मिले हैं?
(a) मोरहना पहाड़ (b) घघरिया
(c) बघही खोर (d) लेखहिया
UPPSC (Pre), 2016
3. एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल निकले हैं—
(a) सराय नाहर राय से (b) दमदमा से
(c) महदहा से (d) लंघनाज से
UPPSC (Pre), 2016
4. हड़डि से निर्मित आभूषण भारत में मध्य पाषाण काल के संदर्भ में कहाँ से प्राप्त हुए हैं?
(a) सराय नाहर राय से (b) महदहा से
(c) लेखहिया से (d) चोपानी मांडो से
UPRO/ARO (Mains), 2013
5. भीमबेटका कहाँ स्थित है?
(a) भोपाल (b) पंचमढ़ी
(c) सिंगरौली (d) अब्दुल्लागंज रायसेन
MPPSC, 2013
6. भीमबेटका किसके लिये प्रसिद्ध है?
(a) गुफाओं के लिये शैलचित्र (b) खनिज
(c) बौद्ध प्रतिमाएँ (d) सोन नदी का उपागम स्थल
UPPSC (Pre), 2016
7. निम्नलिखित में से किस स्थान पर मानव के साथ कुत्ते को दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है?
(a) बुर्जहोम (b) कोल्डिहवा
(c) चोपानी मांडो (d) माण्डो
UKPSC, 2010
8. भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य कहाँ मिलता है?
(a) नीलगिरि पहाड़ियाँ
(b) शिवालिक पहाड़ियाँ
(c) नल्लमला पहाड़ियाँ
(d) नर्मदा घाटी
UKPSC, 2006
9. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण निम्नलिखित विभागों/मंत्रालयों में से किसका संलग्न कार्यालय है?
(a) संस्कृति
(b) पर्यटन
(c) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
(d) मानव संसाधन विकास
JPSC, 2011
10. निम्नलिखित में से किसको 'चालकोलिथिक युग' भी कहा जाता है?
(a) पुरापाषाण युग (b) नवपाषाण युग
(c) ताम्रपाषाण युग (d) लौहयुग
44th BPSC, 2000
12. निम्नलिखित में से कौन-सा वेद गद्य और पद्य दोनों में रचित है?
(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद
(c) सामवेद (d) अथर्ववेद
11. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं?
(a) कोल्डिहवा से
(b) लहुरादेव से
(c) मेहरगढ़ से
(d) टोकवा से

उत्तरमाला

- | | | | | |
|---------|---------|--------|--------|---------|
| 1. (a) | 2. (d) | 3. (b) | 4. (b) | 5. (d) |
| 6. (a) | 7. (a) | 8. (d) | 9. (a) | 10. (c) |
| 11. (c) | 12. (b) | | | |

भूमिका

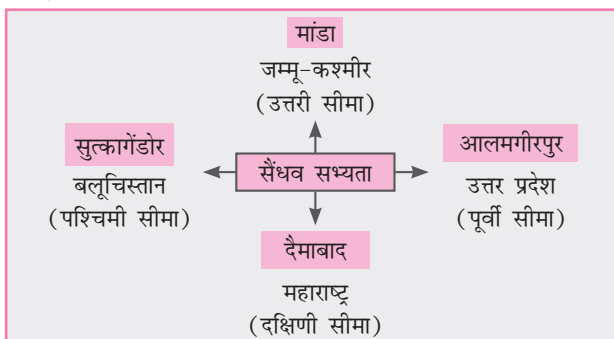
वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे। विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी। बीसवीं सदी के तृतीय दशक में दो पुरातत्वशास्त्रियों—दयाराम साहनी तथा राखालदास बनर्जी ने हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो के प्राचीन स्थलों से पुरावस्तुएँ प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि सिकंदर के आक्रमण के पूर्व भी एक सभ्यता थी, जो अपने समकालीन सभ्यताओं में सबसे विकसित थी।

कालांतर में सर जॉन मार्शल, माधव स्वरूप वत्स, के.एन. दीक्षित, अर्नेस्ट मैके, ऑरैल स्टेइन, अमलानंद घोष, जे. पी. जोशी आदि विद्वानों ने उत्खनन करके महत्वपूर्ण सामग्रियाँ प्राप्त की। उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के आधार पर इस पूरी सभ्यता को 'सिंधु घाटी सभ्यता', अथवा इसके मुख्य स्थल हड़प्पा के नाम पर 'हड़प्पा सभ्यता' कहा जाता है।

नामकरण

- सिंधु घाटी सभ्यता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक था। आरंभ में हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से इस सभ्यता के प्रमाण मिले हैं अतः विद्वानों ने इसे सिंधु घाटी सभ्यता का नाम दिया, क्योंकि ये क्षेत्र सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में आते हैं, पर बाद में रोपड़, लोथल, कालीबंगा, बनावली, रंगपुर आदि क्षेत्रों में भी इस सभ्यता के अवशेष मिले जो सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र से बाहर थे। अतः इतिहासकार, इस सभ्यता का प्रमुख केंद्र हड़प्पा होने के कारण इस सभ्यता को 'हड़प्पा की सभ्यता' नाम देना उचित मानते हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार



- सिंधु घाटी सभ्यता कांस्ययुगीन सभ्यता थी, जिसका उद्भव ताम्रपाषाण काल में भारत के पश्चिमी क्षेत्र में हुआ था और इसका विस्तार भारत के अलावा पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में भी था।

- सैधव सभ्यता का भौगोलिक विस्तार उत्तर में मांडा (जम्मू) से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी के मुहाने तक तथा पश्चिम में सुत्कागेंडोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ) तक था।
- वह उत्तर से दक्षिण लगभग 1100 किमी. तक तथा पूर्व से पश्चिम लगभग 1600 किमी. तक फैली हुई थी। अभी तक उत्खनन तथा अनुसंधान द्वारा करीब 2800 स्थल ज्ञात किये गए हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता अपने त्रिभुजाकार स्वरूप में थी जिसका क्षेत्रफल लगभग 13 लाख वर्ग किमी. है।
- सर्वप्रथम चार्ल्स मैसन ने 1826 ई. में सैधव सभ्यता का पता लगाया, जिसका सर्वप्रथम वर्णन उनके द्वारा 1842 में प्रकाशित पुस्तक में मिलता है। उसके बाद वर्ष 1921 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में पुरातत्वविद् दयाराम साहनी ने उत्खनन कर इसके प्रमुख नगर 'हड़प्पा' का पता लगाया। सर्वप्रथम हड़प्पा स्थल की खोज के कारण इसका नाम 'हड़प्पा सभ्यता' रखा गया।
- सर जॉन मार्शल के दिशानिर्देश में ही राखालदास बनर्जी द्वारा सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल मोहनजोदड़ो की खोज 1922 में की गई।
- रेडियो कार्बन-14 (C^{14}) जैसी नवीन विश्लेषण पद्धति के द्वारा हड़प्पा सभ्यता का काल निर्धारण 2500 ई.पू. से 1750 ई.पू. माना गया है। यह सभ्यता 400-500 वर्षों तक विद्यमान रही तथा 2200 ई.पू. से 2000 ई.पू. के मध्य तक यह अपनी परिपक्व अवस्था में थी। नवीन शोध के अनुसार यह सभ्यता लगभग 8,000 साल पुरानी है।
- सिंधु घाटी सभ्यता के निर्माताओं के निर्धारण का महत्वपूर्ण स्रोत उत्खनन से प्राप्त मानव कंकाल है। सबसे अधिक कंकाल मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुए हैं। इनके परीक्षण से यह निर्धारित हुआ है कि सिंधु सभ्यता में चार प्रजातियाँ निवास करती थीं— भूमध्यसागरीय, प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड, अल्पाइन तथा मंगोलॉयड।
- सबसे ज्यादा भूमध्यसागरीय प्रजाति के लोग थे।

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- सिंधु घाटी सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी, जिसका ज्ञान इसके पुरातात्विक अवशेषों तथा अनुसंधानों से होता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता थी— पर्यावरण के अनुकूल इसका अद्भुत नगर नियोजन तथा जल निकास प्रणाली।
- सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। लगभग सभी नगर दो भागों में विभक्त थे—
 - प्रथम भाग में ऊँचे दुर्ग निर्मित थे। इनमें शासक वर्ग निवास करता था।

भूमिका

सैंधव सभ्यता के पश्चात् भारत में जिस सभ्यता का प्रादुर्भाव हुआ उसे वैदिक अथवा आर्य सभ्यता के नाम से जाना जाता है। आर्य सभ्यता का ज्ञान वेदों से होता है, जिसमें ऋग्वेद सर्वप्राचीन होने के कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। सामान्यतः ऐसा माना गया है कि आर्यों ने ही सैंधव सभ्यता के नगरों को ध्वस्त कर एक नई सभ्यता की नींव रखी थी, लेकिन अभी भी इसके कोई ठोस साक्ष्य न होने के कारण इसे कल्पना ही माना जाता है।

वैदिक सभ्यता भारत की प्राचीन सभ्यता है जिसमें वेदों की रचना हुई। वैदिक शब्द 'वेद' से बना है, जिसका अर्थ होता है- 'ज्ञान'। वैदिक संस्कृति के निर्माता आर्य थे। वैदिक संस्कृति में आर्य शब्द का अर्थ- श्रेष्ठ, उत्तम, अभिजात, कुलीन तथा उत्कृष्ट होता है। सर्वप्रथम मैक्समूलर ने 1853 ई. में आर्य शब्द का प्रयोग एक श्रेष्ठ जाति के आशय से किया था। आर्यों की भाषा संस्कृत थी।

अध्ययन की सुविधा से वैदिक संस्कृति को दो भागों में बाँटा गया है-

- ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई. पू.)
- उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई. पू.)

ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)

- इस काल का तिथि निर्धारण जितना विवादास्पद रहा है, उतना ही इस काल के लोगों के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त करना। 'ऋग्वेद संहिता' की रचना इस काल में हुई थी। अतः यह इस काल की जानकारी का एकमात्र साहित्यिक स्रोत है।
- सिंधु सभ्यता के विपरीत वैदिक सभ्यता मूलतः ग्रामीण थी। आर्यों का आरंभिक जीवन पशु चारण पर आधारित था। कृषि उनके लिये गौण कार्य था।
- 1400 ई. पू. के बोगज़कोई (एशिया माइनर) के अभिलेख में ऋग्वैदिक काल के देवताओं- इंद्र, वरुण, मित्र तथा नासत्य का उल्लेख मिलता है। इससे अनुमान लगाया जाता है कि वैदिक आर्य ईरान से होकर भारत में आए होंगे।
- ऋग्वेद की अनेक बातें ईरानी भाषा के प्राचीनतम ग्रंथ अवेस्ता से मिलती हैं।

नोट: संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा 'ऋग्वेद' को विश्व मानव धरोहर के साहित्य में शामिल किया गया है।

- आर्यों के मूल निवास के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के विचार अलग-अलग हैं-

विद्वान	आर्यों का मूल निवास स्थल
प्रो. मैक्समूलर	मध्य एशिया (बैक्ट्रिया)
बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव
डॉ. अविनाश चंद्र दास	सप्त सैंधव प्रदेश
दयानंद सरस्वती	तिब्बत
नेहरिंग एवं प्रो. गार्डन चाइल्ड	दक्षिणी रूस
गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
गाइल्स महोदय	हंगरी अथवा डेन्यूब नदी घाटी
प्रो. पेंका	जर्मनी के मैदानी भाग

नोट: अधिकांश विद्वान प्रो. मैक्समूलर के विचारों से सहमत हैं कि आर्य मूल रूप से मध्य एशिया के निवासी थे।

भौगोलिक विस्तार

- आर्यों की आरंभिक इतिहास की जानकारी का मुख्य स्रोत ऋग्वेद है।
- ऋग्वेद में आर्य-निवास स्थल के लिये सप्त सैंधव क्षेत्र का उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ है- **सात नदियों का क्षेत्र**। ये नदियाँ हैं- सिंधु, सरस्वती, शतुद्रि (सतलज), विपासा (व्यास), परुष्णी (रावी), वितस्ता (झेलम) और अस्किनी (चिनाब)।
- ऋग्वेद से प्राप्त जानकारी के अनुसार, आर्यों का विस्तार अफगानिस्तान, पंजाब तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक था। सतलज से यमुना तक का क्षेत्र 'ब्रह्मवर्त' कहलाता था। मनुस्मृति में सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच के प्रदेश को 'ब्रह्मवर्त' पुकारा गया है। इसे ऋग्वैदिक सभ्यता का केंद्र माना जाता है।
- गंगा व यमुना के दोआब क्षेत्र एवं उसके सीमावर्ती क्षेत्रों पर भी आर्यों ने कब्जा कर लिया, जिसे 'ब्रह्मर्षि देश' कहा गया। कालांतर में संपूर्ण उत्तर भारत में आर्यों ने विस्तार कर लिया जिसे 'आर्यावर्त' कहा जाता है।
- वैदिक संहिताओं में 31 नदियों का उल्लेख मिलता है जिसमें से ऋग्वेद में 25 नदियों का उल्लेख किया गया है। किंतु, ध्यान देने योग्य है कि ऋग्वेद के नदी सूक्त में केवल 21 नदियों का वर्णन किया गया है। इस काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी सिंधु को बताया गया है, जबकि सर्वाधिक पवित्र नदी सरस्वती को माना गया है, जिसे 'देवीतमा', 'मातेतमा' एवं 'नदीतमा' भी कहा गया है। ऋग्वेद में गंगा नदी का एक बार, जबकि यमुना नदी का तीन बार नाम लिया गया है।

विवाह के आठ प्रकार

‘मनुस्मृति’ में विवाह के आठ प्रकारों का उल्लेख किया गया है, जिसमें प्रथम चार विवाह प्राशंसनीय तथा शेष चार निंदनीय माने जाते हैं-

प्राशंसनीय विवाह

1. **ब्रह्म**: कन्या के वयस्क होने पर उसके माता-पिता द्वारा योग्य वर खोजकर, उससे अपनी कन्या का विवाह करना।
2. **दैव**: यज्ञ करने वाले पुरोहित के साथ कन्या का विवाह।
3. **आर्ष**: कन्या के पिता द्वारा यज्ञ कार्य हेतु एक अथवा दो गाय के बदले में अपनी कन्या का विवाह करना।
4. **प्रजापत्य**: वर स्वयं कन्या के पिता से कन्या मांगकर विवाह करता था।

निंदनीय विवाह

5. **आसुर**: कन्या के पिता द्वारा धन के बदले में कन्या का विक्रय।
6. **गंधर्व**: कन्या तथा पुरुष प्रेम अथवा कामुकता के वशीभूत होकर करते थे।
7. **पैशाच**: सोई हुई अथवा विक्षिप्त कन्या के साथ सहवास कर विवाह करना।
8. **राक्षस**: बलपूर्वक कन्या का छीनकर उससे विवाह करना।

राजनीतिक स्थिति

- इस काल में पहली बार **क्षेत्रीय राज्यों का उदय** हुआ तथा कबीले पर शासन करने वाला राजा अब उस प्रदेश पर शासन करने लगा। राष्ट्र शब्द जो प्रदेश का सूचक है, पहली बार इस काल में प्रकट हुआ।
- राजा की **दैवीय उत्पत्ति का सिद्धांत** सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है।
- उत्तर वैदिक काल में राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था और सशक्त हुई। इस काल में राजा का पद वंशानुगत हो गया था।
- इस काल में राज्य का आकार बढ़ने से राजा का महत्त्व बढ़ा और उसके अधिकारों का विस्तार हुआ। अब राजा को ‘सम्राट’, ‘एकराट’ और ‘अधिराज’ आदि नामों से जाना जाने लगा।
- इस काल में **सभा, समिति** आदि प्रतिनिधि संस्थाओं का प्रभाव क्षीण हुआ। विदथ का नामोनिशान नहीं रहा, जबकि सभा और समिति अपनी जगह बनी रही, परंतु उनका स्वरूप बदल गया। अब उनमें समाज के प्रभावशाली वर्ग का वर्चस्व हो गया। सभा नामक संस्था में स्त्रियों का प्रवेश वर्जित हो गया।
- आरंभ में **पांचाल** एक कबीले का नाम था, परंतु बाद में वह प्रदेश का नाम हो गया। इस काल में पांचाल सर्वाधिक विकसित राज्य था।
- राजा का राज्याभिषेक **राजसूय यज्ञ** के द्वारा संपन्न होता था, जिसका विस्तृत वर्णन शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। यजुर्वेद में राज्य के उच्च पदाधिकारियों को ‘**रत्नी**’ कहा जाता था। ‘रत्नियों’ की सूची में राजा के संबंधी, मंत्री, विभागाध्यक्ष एवं दरबारी गण आते थे। शतपथ ब्राह्मण में 12 प्रकार के रत्नियों का विवरण मिलता है।

सेनानी - सेनापति

सूत- राजा का सारथी
ग्रामणी- गाँव का मुखिया
भागदुध- कर संग्रहकर्ता
संग्रहीता- कोषाध्याक्ष
अक्षावाप- पासे के खेल में राजा के सहयोगी
क्षता- प्रतिहारी
गोविकर्तन- जंगल विभाग का प्रधान
पालागल- विदूषक
महिषी- मुख्य रानी
पुरोहित- धार्मिक कृत्य करने वाला
युवराज- राजकुमार

- राजा न्याय का सर्वोच्च अधिकारी होता था। ब्राह्मण को मृत्युदंड नहीं दिया जाता था। ‘बलि’ ऋग्वैदिक काल में राजा को दिया जाने वाला स्वेच्छाकारी कर था, जो उत्तर वैदिक काल तक आते-आते एक नियमित कर हो गया। इसकी मात्रा 1/16वाँ भाग होती थी।

ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित शासन व्यवस्था

क्षेत्र	शासन	उपाधि
पूर्व	साम्राज्य	सम्राट
पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट
उत्तर	वैराज्य	विराट
दक्षिण	भोज्य	भोज
मध्य देश	राज्य	राजा

आर्थिक स्थिति

- इस काल में पशुपालन की जगह कृषि प्रथम पेशा बन गया। ‘शतपथ ब्राह्मण’ में कृषि से संबंधित चारों क्रियाओं— जुताई, बुआई, कटाई तथा मड़ाई का उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ में ‘विदेह माधव’ की कथा का भी उल्लेख मिलता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि आर्य संपूर्ण गंगाघाटी में कृषि करने लगे थे।
- इस काल में लोहे से बने उपकरणों के प्रयोग से कृषि क्षेत्र में क्रांति आ गई। यजुर्वेद में लोहे के लिये ‘श्याम अयस’ एवं ‘कृष्ण अयस’ शब्द का प्रयोग हुआ है। लोहे से बने उपकरणों के प्रयोग से कृषि विस्तार के साथ-साथ फसलों की संख्या में भी वृद्धि हुई और धान प्रमुख फसल बन गई। **अतरंजीखेड़ा** में पहली बार कृषि से संबंधित लौह उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- उत्तर वैदिक काल में कृषि में विस्तार, शिल्पों में कुशलता, व्यापार एवं वाणिज्य में विस्तार के परिणामस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि हुई।
- इस काल के लोग चार प्रकार के बर्तनों (मृद्भांडों) से परिचित थे - काले व लाल रंग मिश्रित मृद्भांड, काले रंग के मृद्भांड, चित्रित धूसर मृद्भांड और लाल मृद्भांड।
- ब्राह्मण ग्रंथों में ‘श्रेष्ठिन’ का भी उल्लेख मिलता है। ‘श्रेष्ठिन’ श्रेणी का प्रधान व्यापारी होता था।

महाजनपदों का उदय

आर्य जातियों के परस्पर विलीनीकरण से जनपदों का विस्तार हुआ और महाजनपद बने। महाजनपदों ने अब ईसा पूर्व छठी सदी में राज्य विस्तार किया। इसके साथ ही कला-कौशल की अभूतपूर्व अभिवृद्धि, धन-धान्य की समृद्धि, व्यापार-वाणिज्य का चमत्कारपूर्ण उत्कर्ष सामने आया। यही कारण है कि भारत के राजनैतिक इतिहास का प्रारम्भ छठी शताब्दी ई. पू. से माना जाता है। छठी शताब्दी के आसपास पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में लोहे के व्यापक प्रयोग के कारण अतिरिक्त उपज होने लगी तथा आर्थिक परिवर्तन हुए, जिसके कारण व्यापार एवं वाणिज्य को बल मिला। लोहे के हथियारों के प्रयोग से क्षत्रिय वर्ग की शक्ति में अपार वृद्धि हुई। इन परिवर्तनों के कारण ऋग्वैदिक कबीलाई जनजीवन में दूर पड़ने लगी और क्षेत्रीय भावना के जाग्रत होने से नगरों का निर्माण होने लगा। परिणामतः उत्तर वैदिक काल के जनपद, महाजनपदों में परिवर्तित हो गए।

महाजनपदों की कुल संख्या 16 थी, जिसका उल्लेख बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय', 'महावस्तु' एवं जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में मिलता है। इसमें मगध, कौशल, वत्स और अवंति सर्वाधिक शक्तिशाली थे। सोलह महाजनपदों में अश्मक ही एक ऐसा जनपद था जो दक्षिण भारत में गोदावरी नदी के किनारे स्थित था। इन 16 महाजनपदों में वज्जि एवं मल्ल में गणतंत्रात्मक व्यवस्था थी, जबकि शेष में राजतंत्रात्मक व्यवस्था थी। महापरिनिर्वाणसुत्त में 6 महानगरों की सूचना मिलती है— चंपा, राजगृह, श्रावस्ती, काशी, कौशांबी तथा साकेत। इस काल में मगध ने अन्य महाजनपदों को जीतकर मगध साम्राज्य का निर्माण किया।

महाजनपद	राजधानी
काशी	वाराणसी
कोशल	श्रावस्ती/अयोध्या (फैजाबाद मंडल)
अंग	चंपा (भागलपुर एवं मुंगेर)
मगध	राजगृह/गिरिब्रज (दक्षिणी बिहार)
वज्जि	वैशाली (उत्तरी बिहार)
मल्ल	कुशीनगर (प्रथम भाग) एवं पावा (द्वितीय भाग) (पूर्वी उत्तर प्रदेश का गोरखपुर-देवरिया क्षेत्र)
चेदि/चेति	सोनिथवती / सुक्तिमति (आधुनिक बुंदेलखंड)
वत्स	कौशांबी (इलाहाबाद एवं बांदा)
पांचाल	उत्तरी पांचाल-अहिच्छत्र (रामनगर, बरेली) एवं दक्षिणी पांचाल-काम्पिल्य (फरुखाबाद)
मत्स्य	विराट नगर [अलवर, भरतपुर (राजस्थान)]
शूरसेन	मथुरा (आधुनिक ब्रजमंडल)

अश्मक	पोतना या पोटली (दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद)
अवंति	उत्तरी उज्जयिनी, दक्षिणी महिष्मती
गांधार	तक्षशिला [पेशावर तथा रावलपिंडी (पाकिस्तान)]
कंबोज	राजपुर/हाटक (कश्मीर)
कुरु	इंद्रप्रस्थ (मेरठ तथा दक्षिण-पूर्व हरियाणा)

- वैशाली का लिच्छवी गणराज्य विश्व का प्रथम गणतंत्र माना जाता है जो वज्जि संघ की राजधानी थी। इसका गठन 500 ई.पू. में हुआ था।
- 4 शक्तिशाली महाजनपद थे— मगध, कोशल, वत्स तथा अवंति।

नोट: नालंदा विश्वविद्यालय विश्व के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में से एक है। इसकी स्थापना गुप्त वंश के शासक कुमारगुप्त प्रथम ने की थी।

- विश्व का सबसे प्राचीन वैभवशाली महानगर पाटलिपुत्र (221 ई.पू.) है।

‘अंगुत्तर निकाय’ में जिन 16 महाजनपदों का उल्लेख हुआ, उनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है—

काशी

काशी महाजनपद की राजधानी वाराणसी थी। ‘सोनंद जातक’ से ज्ञात होता है कि मगध, कोशल तथा अंग के ऊपर काशी का अधिकार था। काशी का सबसे शक्तिशाली राजा ब्रह्मदत्त था जिसने कोशल के ऊपर विजय प्राप्त की थी।

कोशल

कोशल महाजनपद की राजधानी श्रावस्ती थी। रामायणकालीन कोशल राज्य की राजधानी अयोध्या थी। यह राज्य उत्तर में नेपाल से लेकर दक्षिण में सई नदी तक तथा पश्चिम में पांचाल से लेकर पूर्व में गंडक नदी तक फैला हुआ था।

अंग

अंग राज्य की राजधानी चंपा थी। बुद्ध के समय तक चंपा की गणना भारत के छः महानगरों में की जाती थी। ‘महापरिनिर्वाणसुत्त’ में चंपा के अतिरिक्त अन्य पाँच महानगरों के नाम—राजगृह, श्रावस्ती, साकेत, कौशांबी तथा बनारस दिये गए हैं। प्राचीन काल में चंपा नगरी वैभव तथा व्यापार-वाणिज्य के लिये प्रसिद्ध थी।

मगध

मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह या गिरिब्रज थी। कालांतर में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र स्थानांतरित हुई। यह उत्तर भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद था।

प्राचीन भारत पर विदेशी आक्रमण (Foreign Invasions on Ancient India)

प्राचीन भारत पर विदेशी आक्रमण

हखामनी ईरानी आक्रमण

- प्राक्-मौर्य युग में मगध सम्राटों का अधिकार क्षेत्र भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश तक विस्तृत नहीं हो पाया था। जिस समय मध्य भारत के राज्य, मगध साम्राज्य की विस्तारवादी नीति का शिकार हो रहे थे, पश्चिमोत्तर प्रांतों में अराजकता एवं अव्यवस्था का वातावरण व्याप्त था।
- यह क्षेत्र अनेक छोटे-बड़े राज्यों में विभक्त था जिसमें कंबोज, गांधार एवं मद्र प्रमुख थे।
- इन क्षेत्रों में कोई ऐसी सार्वभौम शक्ति नहीं थी जो परस्पर संघर्षरत राज्यों को जीतकर एकछत्र शासन कर सके। यह संपूर्ण प्रदेश उस समय विभाजित थे, ऐसी स्थिति में विदेशी आक्रांताओं का ध्यान भारत के इस भू-भाग की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक ही था। परिणामस्वरूप यह प्रदेश दो विदेशी आक्रमणों का शिकार हुआ। हखामनी ईरानी आक्रमण एवं यूनानी आक्रमण।
- भारत में सर्वप्रथम विदेशी आक्रमण हखामनी वंश के राजाओं ने किया।
- इस वंश के संस्थापक साइरस द्वितीय (558 ई.पू. से 529 ई.पू.) ने भारत पर आक्रमण का असफल प्रयास किया था।

हखामनी (ईरानी) साम्राज्य के प्रमुख शासक

साइरस द्वितीय (558 ई.पू. से 529 ई.पू.)

- साइरस द्वितीय ने छठी शताब्दी ई.पू. के मध्य ईरान में हखामनी साम्राज्य की स्थापना की।
- साइरस द्वितीय एक महात्वाकांक्षी शासक था। अतः थोड़े ही समय में वह पश्चिमी एशिया का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बन गया।
- साइरस ने सिंध के पश्चिम में भारत के सीमावर्ती क्षेत्र की विजय की। प्लिनी के विवरण से ज्ञात होता है कि साइरस ने कपिश नगर को ध्वस्त किया।
- साइरस की मृत्यु कैस्पियन क्षेत्र में डरबाइक नामक एक पूर्वी जनजाति के विरुद्ध लड़ते हुए हुई तथा उसका पुत्र केम्बिसीज द्वितीय (529

यूनानी आक्रमण

ई. पू. से 522 ई. पू.) उसके साम्राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। वह गृह युद्धों में ही उलझा रहा और उसके समय में हखामनी साम्राज्य का भारत की ओर कोई विस्तार न हो सका।

दारा प्रथम (डेरियस प्रथम) (522 ई.पू. से 486 ई.पू.)

- भारत पर आक्रमण करने में प्रथम सफलता दारा प्रथम (डेरियस प्रथम) को प्राप्त हुई।
- दारा के यूनानी सेनापति स्काईलैक्स (Scylax) ने सिंधु से भारतीय समुद्र में उतरकर अरब और मकरान तटों का पता लगाया।
- दारा प्रथम ने 516 ई. पू. में सर्वप्रथम गांधार को जीतकर फारसी साम्राज्य में मिलाया था।
- भारत का पश्चिमोत्तर भाग दारा के साम्राज्य का 20वाँ प्रांत (हेरोडोटस के अनुसार) था। कंबोज एवं गांधार पर भी उसका अधिकार था।
- दारा प्रथम के तीन अभिलेखों-बेहिस्तून, पर्सिपोलिस एवं नक्शेरुस्तम से यह पता चलता है कि उसी ने सर्वप्रथम सिंधु नदी के तटवर्ती भारतीय भू-भागों को अधिकृत किया।

क्षयार्थ अथवा ज़रक्सीज (लगभग 486 ई. पू. से 465 ई. पू.)

- यह दारा का पुत्र था तथा इसने अपने पिता के साम्राज्य को सुरक्षित रखा, किंतु यह यूनानियों द्वारा परास्त किया गया था।
- इसने अपनी फौज में भारतीयों को शामिल किया।

ज़रक्सीज के उत्तराधिकारी तथा पारसीक साम्राज्य का विनाश

- ज़रक्सीज की मृत्यु के पश्चात् उसके तात्कालिक उत्तराधिकारी क्रमशः अर्तज़रक्सीज प्रथम एवं अर्तज़रक्सीज द्वितीय हुए। साक्ष्यों से पता चलता है इन उत्तराधिकारियों द्वारा दारा प्रथम द्वारा निर्मित साम्राज्य को सुरक्षित रखा गया।
- पारसीकों का अंतिम सम्राट दारा तृतीय (360 ई.पू. से 330 ई.पू.) था।
- दारा तृतीय को यूनानी सिकंदर ने अरबेला/गौगामेला के युद्ध (331 ई.पू.) में बुरी तरह परास्त किया। इस प्रकार पारसीकों का विनाश हुआ।

भूमिका

देश और काल के अंदर जब मानव जीवन अपने प्रारंभिक दौर से आगे बढ़ने लगा तब उसके मन में बहुत सारे सवाल उठने लगे, जैसे—इस दुनिया को बनाया किसने? हम जन्म क्यों लेते हैं? जन्म लेने के बाद मरते क्यों हैं? हमारी आपसी परेशानियों का कारण क्या है? ऐसे बहुत सारे सवालों के जवाब में ईसा पूर्व छठी सदी के उत्तरार्द्ध में मध्य गंगा के मैदानों में अनेक धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ। धर्मों का जन्म चौँक मानवीय जीवन के मूलभूत सवालों के जवाब में हुआ इसलिये इन धर्मों की दार्शनिक व्याख्याओं, नियम, कानून, आचार-विचार ने सामाजिक आंदोलनों की तरह काम किया। इन्होंने मानवीय जीवनशैली को बदलने में समय-समय पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उदाहरणस्वरूप—वैदिक धर्म के कारण समाज में वर्णव्यवस्था और कर्मकांडों ने जगह बनाई तो बौद्ध व जैन धर्म के उपदेशों, आचार-विचारों ने समाज में फैले भौतिकवादी रवैये को मानवीय परेशानियों का कारण बताया।

नवीन धर्मों की उत्पत्ति के कारण

छठी शताब्दी ई.पू. में भारत में नवीन धर्मों के उदय में निम्नलिखित महत्वपूर्ण कारणों ने योगदान दिया—

- **वैदिक धर्म की जटिलता/यज्ञों की परम्परा:** ऋग्वैदिककालीन वैदिक धर्म अत्यधिक सरल एवं विशुद्ध था। स्तुति-पाठ तथा यज्ञ सामूहिक किये जाते थे, किंतु उत्तर वैदिक काल में धर्म में अनेक जटिलताओं का समावेश हो गया। धर्म पर एक वर्ग-विशेष का प्रभुत्व स्थापित हो गया तथा धर्म का स्थान जटिल एवं निरर्थक कर्मकांडों ने ले लिया।
- **जाति प्रथा की जटिलता:** ऋग्वैदिक काल में आर्यों ने व्यवसाय के आधार पर वर्ण व्यवस्था की स्थापना की ताकि समाज का संचालन सुचारू रूप से किया जा सके, किंतु उत्तर वैदिक काल में वर्णव्यवस्था जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था में बदल गई। छठी शताब्दी ई.पू. तक इस प्रथा ने कठोर रूप धारण कर लिया।
- **वैदिक ग्रंथों की कठिन भाषा:** संपूर्ण वैदिक साहित्य की रचना कठिन संस्कृत भाषा में की गई थी क्योंकि इसे पवित्र भाषा समझा जाता था। अतः छठी शताब्दी ई.पू. के काल तक यह भाषा जनसामान्य की भाषा के स्थान पर केवल विद्वानों की भाषा बन गई, जिसने समाज में धार्मिक कर्मकांडों को बढ़ावा दिया।
- **नवीन कृषिमूलक अर्थव्यवस्था का विस्तार:** लगभग 600 ई.पू. के समय लोहे का प्रयोग होने लगा तथा लोहे के औजारों से जंगलों को काटकर कृषियोग्य भूमि का विस्तार किया गया, साथ ही कृषिगत क्रियाओं को सम्पन्न करने के लिये पशुधन (बैलों) की मांग बढ़ने

लगी। परिणामतः वैदिककालीन धार्मिक कर्मकांडों में दी जाने वाली पशुबलि के विरुद्ध आवाज उठाई गई।

- **वैश्य वर्ग के महत्त्व में वृद्धि:** लोहे के उपकरणों के प्रयोग से कृषि भूमि का विस्तार हुआ जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई अतः उत्पादन में वृद्धि होने के कारण व्यापार-वाणिज्य को प्रोत्साहन मिला जिससे समाज में वैश्य वर्ग का महत्त्व बढ़ने लगा। अतः वैश्य वर्ग ने समाज में अपनी स्थिति सुधारने एवं व्यापार-वाणिज्य का विस्तार करने के लिये ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था का विरोध किया। ऐसा इसलिये क्योंकि वैदिककालीन व्यवस्था ऋण पर ब्याज लेना पाप मानती थी, अतः वैश्य वर्ग ने नवीन धर्मों के उदय को प्रोत्साहित किया।
- **अनुकूल राजनीतिक दशा:** छठी शताब्दी ई.पू. की अनुकूल राजनीतिक स्थिति ने नवीन धर्मों के उदय में पर्याप्त योगदान दिया। भारत में मगध सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य था तथा इसके शासक बिम्बिसार और अजातशत्रु ब्राह्मणों के प्रभाव से मुक्त थे अतः उन्होंने नवीन धर्मों को संरक्षण प्रदान किया।

प्रमुख धार्मिक आंदोलन

जैन धर्म

- जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्द से बना है, जिसका अर्थ विजेता होता है अर्थात् जिन्होंने अपने मन, वाणी एवं काया को जीत लिया हो।
- जैन अनुश्रुतियों और परंपराओं के अनुसार जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए, परंतु इनमें से पहले 22 तीर्थंकरों की ऐतिहासिकता संदिग्ध है।
- जैन धर्म की स्थापना का श्रेय जैनियों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव या आदिनाथ को जाता है, जिन्होंने छठी शताब्दी ई.पू. जैन आंदोलन का प्रवर्तन किया। ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर) व अरिष्टनेमि (22वें तीर्थंकर) का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे, जो काशी के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे। इनका काल महावीर से 250 ई.पू. माना जाता है। इनके अनुयायियों को 'निर्ग्रंथ' कहा जाता था।
- पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित चार महाव्रत इस प्रकार हैं— सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह (धन संचय का त्याग) तथा अस्तेय (चोरी न करना)।
- पार्श्वनाथ ने नारियों को भी अपने धर्म में प्रवेश दिया क्योंकि जैन ग्रंथ में स्त्री संघ की अध्यक्षा 'पुष्पचूला' का उल्लेख मिलता है।
- पार्श्वनाथ को झारखंड के गिरिडीह जिले में 'सम्मेद पर्वत' पर निर्वाण प्राप्त हुआ।
- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे।

- बौद्ध संघ की संरचना गणतंत्र प्रणाली पर आधारित थी। बौद्ध संघ का दरवाजा हर जातियों के लिये खुला था। अतः बौद्ध धर्म ने वर्ण व्यवस्था एवं जाति प्रथा का विरोध किया।
- संघ की सभा में प्रस्ताव (नत्ति) का पाठ होता था। प्रस्ताव पाठ को 'अनुसावन' कहा जाता था। सभा की वैध कार्यवाई के लिये न्यूनतम संख्या (कोरम) 20 थी।
- प्रत्येक 15वें दिन पूर्णिमा या अमावस्या को 'सांयम उपोसथ' नामक सभा होती थी, जिसमें 'पातिमोक्ख' का पाठ किया जाता था। (पातिमोक्ख विनयपिटक की मठ संबंधी सूची है, जिसमें 226 प्रकार के अपराधों और उनके प्रायश्चित्त करने की सूची दी गई है।)
- इस सभा में प्रत्येक सदस्य इसके माध्यम से स्वयं नियमों के उल्लंघन को स्वीकार करता था। गंभीर अपराध पर वयस्कों एवं वृद्धों की समिति विचार करती थी और सदस्यों को प्रायश्चित्त करने या संघ से निकालने की आज्ञा देती थी।
- वर्षा ऋतु के दौरान मठों में प्रवास के समय भिक्षुओं द्वारा अपराध स्वीकारोक्ति समारोह 'पवरन' कहलाता था।
- बौद्धों के लिये महीने के चार दिन—अमावस्या, पूर्णिमा और दो चतुर्थी दिवस उपवास के दिन होते थे।
- बौद्धों का सबसे पवित्र एवं महत्वपूर्ण दिन या त्योहार वैशाख की पूर्णिमा है, जिसे 'बुद्ध पूर्णिमा' भी कहा जाता है। इस दिन का अत्यधिक महत्त्व है, क्योंकि इसी दिन बुद्ध का जन्म, ज्ञान की प्राप्ति एवं महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई।
- बौद्ध धर्म के अनुयायी दो वर्गों में विभाजित थे—भिक्षु एवं भिक्षुणी तथा उपासक एवं उपासिकाएँ। गृहस्थ जीवन में रहकर बौद्ध धर्म मानने वाले लोगों को 'उपासक' कहा जाता था।

स्तूप

स्तूप का शाब्दिक अर्थ है—'किसी वस्तु का ढेर।' स्तूप का विकास संभवतः मिट्टी के ऐसे चबूतरे से हुआ है, जिसका निर्माण मृतक की चिता के ऊपर अथवा मृतक की चुनी हुई अस्थियों को रखने के लिये किया जाता था। स्तूपों को मुख्यतः चार भागों में बाँटा जा सकता है—

- **शारीरिक स्तूप:** इसमें बुद्ध के शरीर, धातु, केश और दंत आदि को रखा जाता था।
- **पारिभोगिक स्तूप:** इसमें महात्मा बुद्ध के द्वारा उपयोग की हुई वस्तुएँ, जैसे—भिक्षापात्र, चीवर, संघाटी, पादुका आदि को रखा जाता था।
- **उद्देशिका स्तूप:** इनका संबंध बुद्ध के जीवन से जुड़ी घटनाओं की स्मृति से जुड़े स्थानों से था।
- **पूजार्थक स्तूप:** इसका निर्माण बुद्ध की श्रद्धा से वशीभूत धनवान व्यक्तियों द्वारा तीर्थ स्थानों पर होता था।

स्तूप के महत्वपूर्ण हिस्से

- **वेदिका (रेलिंग):** इसका निर्माण स्तूप की सुरक्षा के लिये होता था।
- **मेधि (कुर्सी):** वह चबूतरा था, जिसपर स्तूप का मुख्य हिस्सा आधारित होता था।
- **अंड-** स्तूप का अर्द्धगोलाकार हिस्सा होता था।

- **हर्मिका-** स्तूप के शिखर पर अस्थि की रक्षा के लिये।

- **छत्र-** धार्मिक चिह्न का प्रतीक।

- **सोपान-** मेधि पर चढ़ने-उतरने हेतु सीढ़ी।

चैत्य: चैत्य का शाब्दिक अर्थ होता है—चिता संबंधी। एक चैत्य एक बौद्ध मंदिर है जिसमें एक स्तूप समाहित होता है। पूजार्थक स्तूप को चैत्य कहा जाता है।

विहार: बौद्ध चैत्यों के पास भिक्षुओं के रहने के लिये आवास बनाया जाता था, जिसे 'विहार' कहा जाता था। चैत्यों के उपासना स्थल में परिवर्तित हो जाने के कारण उसके समीप ही विहार का निर्माण होने लगा।

नोट: प्रसिद्ध बौद्ध स्थल- महाबोधि मंदिर (बिहार), द वाट थाई मंदिर, महापरिनिर्वाण मंदिर (उत्तर प्रदेश), चौखंडी स्तूप, धर्मराजिका स्तूप, धमेख स्तूप (उत्तर प्रदेश), नामडोलिंग न्यिंगमापा मॉनेस्ट्री (कर्नाटक) इत्यादि।

- बौद्ध धर्म की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन भारतीय कला एवं स्थापत्य के विकास में रही। साँची, भरहुत, अमरावती के स्तूप तथा अशोक के शिला स्तम्भों, कार्ले की बौद्ध गुफाएँ, अजंता, एलोरा, बाघ व बराबर की गुफाएँ इसकी सर्वश्रेष्ठ कृति हैं।
- बुद्ध की प्रथम मूर्ति संभवतः मथुरा कला में बनी थी। सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण गांधार शैली में हुआ है।

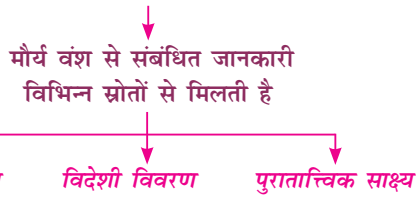
बौद्ध संगीतियाँ

बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिये चार बौद्ध संगीतियों का आयोजन किया गया।

कार्य	बुद्ध के उपदेशों को सुत्तपिटक तथा विनयपिटक में अलग-अलग संकलित किया गया।	भिक्षुओं में मतभेद के कारण बौद्ध संघ स्थविर एवं महासंघिक में विभाजित।	अभिधम्मपिटक (तीसरा पिटक) का संकलन	बौद्ध धर्म का हीनयान एवं महायान संप्रदायों में विभाजन। हीनयान में वस्तुतः स्थविरवादी तथा महायान में महासंघिक थे।
अध्यक्ष	महाकस्सप	साबकमीर (सुबुकामी)	मोगलिपुत्त-तिस्स	वसुमित्र
शासनकाल	अजातशत्रु	कालाशोक	अशोक	कनिष्क
अवधि	483 ई.पू.	383 ई.पू.	250 ई.पू.	लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी
स्थान	राजगृह (सप्तपर्णिगुफा में)	वैशाली	पाटलिपुत्र	कुंडलवन (कश्मीर)
संगीति	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ

मौर्य साम्राज्य (322 ई.पू.-185 ई.पू.) [The Maurya Empire (322 BC-185 BC)]

मौर्य साम्राज्य (322 ई.पू.- 185 ई.पू.)



- | | | |
|---|---|---|
| साहित्यिक साक्ष्य <ul style="list-style-type: none"> ■ अर्थशास्त्र ■ पुराण ■ मुद्राराक्षस नाटक ■ बौद्ध एवं जैन ग्रंथ आदि | विदेशी विवरण <ul style="list-style-type: none"> ■ मेगस्थनीज ■ स्ट्रेबो ■ कर्टियस आदि। | पुरातात्विक साक्ष्य <ul style="list-style-type: none"> ■ अशोक के अभिलेख ■ जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख ■ काली पॉलिश वाले मृदभांड ■ भवन : स्तूप एवं गुफा ■ मुद्रा : आहत मुद्रा (पंचमार्क) |
|---|---|---|

साहित्यिक साक्ष्य

- ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन साहित्य मौर्य वंश के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं।
- ब्राह्मण साहित्य में पुराण, कौटिल्य द्वारा रचित **अर्थशास्त्र**, विशाखदत्त का **मुद्राराक्षस**, सोमदेव कृत **कथासरित्सागर**, क्षेमेन्द्र कृत **बृहत्कथामंजरी** तथा पतंजलि के **महाभाष्य** आदि से जानकारी मिलती है।
- बौद्धग्रंथों में दीपवंश, महावंश, महावंश टीका, महाबोधिवंश, दिव्यावदान आदि प्रमुख हैं। इनसे चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक तथा परवर्ती मौर्य शासकों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।
- जैन ग्रंथों में प्रमुख स्रोत ग्रंथ हैं- भद्रबाहु का **कल्पसूत्र** एवं हेमचंद्र का **परिशिष्टपर्वण**।

नोट: इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण 'अर्थशास्त्र' है, जो मौर्य प्रशासन के अतिरिक्त चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन पर भी प्रकाश डालता है।

विदेशी विवरण

- विदेशी लेखकों में स्ट्रेबो, कर्टियस, डियोडोरस, प्लिनी, एरियन, जस्टिन, प्लूटार्क, नियार्कस, ऑनेसिक्रिटस व अरिस्टोब्यूलस आदि हैं जिन्होंने मौर्य वंश के बारे में लिखा है।

इण्डिका-मेगस्थनीज

मेगस्थनीज की 'इण्डिका' मौर्य इतिहास की जानकारी उपलब्ध कराने का प्रमुख स्रोत है। परंतु यह अपने मूलरूप में प्राप्त नहीं हुई है, बल्कि इसके कुछ भाग परवर्ती लेखकों के ग्रंथों से प्राप्त होते हैं। इनमें स्ट्रेबो, प्लिनी, एरियन, प्लूटार्क तथा जस्टिन के नाम उल्लेखनीय हैं।

- जस्टिन आदि यूनानी विद्वानों ने चंद्रगुप्त मौर्य को 'सेंड्रोकोट्टस' कहा है।
- सर्वप्रथम विलियम जोन्स ने ही 'सेंड्रोकोट्टस' की पहचान चंद्रगुप्त मौर्य से की है।
- मेगस्थनीज यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था, जो चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया। इसने 'इण्डिका' में पाटलिपुत्र का विस्तार से वर्णन किया।

पुरातात्विक साक्ष्य

- इस काल के पुरातात्विक साक्ष्यों में अशोक के अभिलेख अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इनसे अशोक के शासनकाल की समस्त जानकारी मिलती है।
- अशोक के 40 से अधिक अभिलेख भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए हैं।
- अशोक के अभिलेखों के अतिरिक्त शक महाक्षत्रप रुद्रदामन का जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख भी मौर्य इतिहास के विषय में जानकारी प्रदान करता है।
- मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी काली पॉलिश वाले मृदभांड तथा चांदी व तांबे के 'पंचमार्क' (आहत सिक्के) से भी मिलती है।

मौर्य साम्राज्य की स्थापना

- चौथी शताब्दी ई. पू. मगध में नंद वंश के शासक धनानंद का शासन था। साक्ष्यों से पता चलता है कि धनानंद एक क्रूर और अत्याचारी शासक था।
- मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने राजनीतिक गुरु चाणक्य के साथ मिलकर इसी नंद वंशीय शासक धनानंद को पराजित कर मगध में मौर्य वंश की स्थापना की। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।
- चंद्रगुप्त मौर्य, मौर्य वंश का प्रथम राजा और संस्थापक था। उसकी माता का नाम मूर था जिसका संस्कृत में अर्थ मौर्य होता है, इसलिये इस वंश का नाम मौर्य वंश पड़ा।
- मौर्य वंश के शासक किस 'वर्ण' के थे, इसको लेकर इतिहासकारों में मतभेद है। लेकिन बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में उसे (चंद्रगुप्त) 'मोरिय क्षत्रिय' कहा गया है। ऐसा इसलिये भी प्रामाणिक लगता है क्योंकि चंद्रगुप्त का गुरु चाणक्य वर्णाश्रम धर्म का प्रबल पोषक था जिसके अनुसार क्षत्रिय वर्ण का व्यक्ति ही राजत्व का अधिकारी हो सकता था।

मौर्य वंश के प्रमुख शासक

चंद्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू.-298 ई.पू.)

- चंद्रगुप्त मौर्य चाणक्य की सहायता से अंतिम नंद वंशीय शासक धनानंद को पराजित कर 322 ई. पू. में मगध की गद्दी पर बैठा।

थे। अशोक ने चट्टानों को काटकर कंदराओं का निर्माण करवाकर वास्तुकला में एक नई शैली आरंभ किया।

- गुहा वास्तु इस काल की अन्य देन है। अशोक के शासनकाल से ही गुहाओं का उपयोग आवास के रूप में होने लगा था।
- मौर्यकालीन स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ—
 - ◆ निर्माण कार्य में पत्थरों का इस्तेमाल;
 - ◆ लौह अयस्कों का सधा हुआ प्रयोग;
 - ◆ चमकदार पॉलिश (ओप) का प्रयोग;
 - ◆ भवन निर्माण में लकड़ी का विशेष प्रयोग।
- मौर्य काल में मूर्तियों का निर्माण चिपकवा विधि (अंगुलियों या चुटकियों का इस्तेमाल करके) या साँचे में ढालकर किया जाता था।
- पारखम (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त 7 फीट ऊँची यक्ष की मूर्ति, दिगंबर प्रतिमा (लोहानीपुर-पटना), धौली (ओडिशा) का हाथी तथा दीदारगंज (पटना) से प्राप्त यक्षिणी मूर्ति मौर्य कला के विशिष्ट उदाहरण हैं।
- सारनाथ स्तंभ के शीर्ष पर बने चार सिंहों की आकृतियाँ तथा उसके नीचे की बल्लरी-आकृति अशोक कालीन मूर्तिकला का बेहतरीन नमूना है, जो आज हमारा राष्ट्रीय चिह्न है।

मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण

मौर्य साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण थे—

- मौर्य साम्राज्य केंद्रीकृत प्रशासन पर टिका था, जिसका सबसे मजबूत आधार था—सुयोग्य एवं दूरदर्शी सम्राट। 232 ई. पू. में अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य कमजोर होने लगा और अंततः लगभग 185 ई. पू. में अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या हो गई। बृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी। बृहद्रथ की मृत्यु के साथ ही मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।
- हालाँकि मौर्य साम्राज्य जैसे विस्तृत साम्राज्य के पतन के लिये किसी एक कारण का होना पर्याप्त नहीं है। स्पष्ट साक्ष्यों के अभाव में विद्वानों ने अलग-अलग कारण प्रस्तुत किये हैं—

हरि प्रसाद शास्त्री – धार्मिक नीति (ब्राह्मण विरोधी नीति के कारण)
हेमचंद्र राय चौधरी – सम्राट अशोक की अहिंसक एवं शांतिप्रिय नीति
डी.डी. कौशांबी – आर्थिक संकटग्रस्त व्यवस्था का होना

पतन के अन्य कारणों में

- अयोग्य, निर्बल तथा अदूरदर्शी उत्तराधिकारी
- प्रशासन का अत्यधिक केंद्रीकरण
- राष्ट्रीय चेतना का अभाव
- आर्थिक एवं सांस्कृतिक असमानताएँ
- प्रांतीय शासकों के अत्याचार
- करों की अधिकता

अभ्यास प्रश्न

1. सम्राट अशोक के राजादेशों का सबसे पहले विकृत (डिसाइफर) किसने किया था?
(a) जॉर्ज बुहल (b) जेम्स प्रिंसेप
(c) मैक्स मूलर (d) विलियम जोन्स
2. भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में इतिवृत्तों, राजवंशीय इतिहासों तथा वीरगाथाओं को कंठस्थ करना निम्नलिखित में से किसका व्यवसाय था?
(a) श्रमण (b) परिव्राजक
(c) अग्रहारिक (d) मागध

IAS, 2016

3. निम्न कथनों पर विचार कीजिये:
 1. अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या उसके प्रधान सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी।
 2. सिंहली अनुश्रुति के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या कर राजसिंहासन प्राप्त किया।
 3. अशोक का उत्तराधिकारी दशरथ हुआ, जिसने 'देवानामप्रिय' की उपाधि धारण की।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

- (a) 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

IAS, 2016

4. भारतीय कला एवं पुरातात्विक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित में से किसका सबसे पहले निर्माण किया गया था?
(a) भुवनेश्वर स्थित लिंगराज मंदिर
(b) धौली स्थित शैलकृत हाथी
(c) महाबलीपुरम् स्थित शैलकृत स्मारक
(d) उदयगिरि स्थित वराह मूर्ति

IAS, 2015

5. कलिंग युद्ध का विवरण हमें ज्ञात होता है—
(a) 13वें शिलालेख द्वारा (b) रुम्मिनदेई स्तंभ लेख द्वारा
(c) ह्वेनसांग के विवरण द्वारा (d) प्रथम लघु शिलालेख द्वारा

UPPSC (Pre), 2016

6. अशोक के निम्नलिखित अभिलेखों में से किसमें दक्षिण भारतीय राज्यों का उल्लेख हुआ है?
(a) तृतीय मुख्य अभिलेख (b) द्वितीय मुख्य शिलालेख
(c) नवाँ मुख्य शिलालेख (d) प्रथम स्तंभ अभिलेख

UPPSC (Mains), 2016

7. 'इंडिका' का लेखक कौन था?
(a) प्लूटार्क (b) जस्टिन
(c) हेरोडोटस (d) मेगस्थनीज

MPPSC, 2015

मौर्योत्तर काल

देशी शासक

- शुंग वंश
- कण्व वंश
- सातवाहन वंश
- चेदि वंश/महामेघवाहन वंश

विदेशी शासक

- इंडो-ग्रीक
- शक
- पार्थियन
- कुषाण वंश

शुंग वंश

- **संस्थापक** - पुष्यमित्र शुंग
- पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई. पू. में मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या करके 'शुंग वंश' की स्थापना की।
- बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' में पुष्यमित्र को 'अनार्य' कहा है। पुष्यमित्र कट्टर ब्राह्मणवादी था।

शुंग वंश के इतिहास के बारे में जानकारी साहित्यिक एवं पुरातात्विक दोनों साक्ष्यों से प्राप्त होती है-

साहित्यिक स्रोत

- **पुराण (वायु और मत्स्य पुराण)**: इससे पता चलता है कि शुंग वंश का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था।
- **हर्षचरित**: इसकी रचना बाणभट्ट ने की थी। इसमें अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की चर्चा है। इससे पता चलता है कि पुष्यमित्र ने अंतिम मौर्य नरेश बृहद्रथ की हत्या कर सिंहासन पर अधिकार कर लिया।
- **पतंजलि का महाभाष्य**: पतंजलि पुष्यमित्र के पुरोहित थे। इस ग्रंथ में यवनों के आक्रमण की चर्चा है।
- **गार्गी संहिता**: इसमें भी यवन आक्रमण का उल्लेख है। यह एक ज्योतिष ग्रंथ है।
- **मालविकाग्निमित्रम्**: यह कालिदास का नाटक है, जिससे शुंगकालीन राजनीतिक गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त होता है।
- **दिव्यावदान**: इसमें पुष्यमित्र शुंग को अशोक के 84,000 स्तूपों को तोड़ने वाला बताया गया है।

पुरातात्विक स्रोत

- **अयोध्या अभिलेख**: इस अभिलेख को पुष्यमित्र शुंग के उत्तराधिकारी धनदेव ने लिखवाया था। इसमें पुष्यमित्र शुंग द्वारा कराए गए दो अश्वमेध यज्ञ की चर्चा है।

- **बेसनगर का अभिलेख**: यह यवन राजदूत हेलियोडोरस का है जो गरुड़ स्तंभ के ऊपर खुदा है। इससे भागवत धर्म की लोकप्रियता का पता चलता है।

- **भरहुत का लेख**: इससे भी शुंग काल के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

- उपर्युक्त साक्ष्यों के अतिरिक्त साँची, बेसनगर, बोधगया आदि स्थानों से प्राप्त स्तूप एवं स्मारक शुंगकालीन कला एवं स्थापत्य की विशिष्टता का ज्ञान कराते हैं। शुंग काल की कुछ मुद्राएँ कौशांबी, अहिच्छत्र, अयोध्या तथा मथुरा से प्राप्त हुई हैं, जिनसे तत्कालीन ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

पुष्यमित्र शुंग

- पुष्यमित्र मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ का सेनापति था।
- 'दिव्यावदान' से पता चलता है कि वह पुष्यधर्म का पुत्र था।
- धनदेव के अयोध्या अभिलेख के अनुसार, पुष्यमित्र ने दो अश्वमेध यज्ञों का अनुष्ठान किया। पतंजलि उसके अश्वमेध यज्ञ के पुरोहित थे। **पतंजलि पुष्यमित्र के राजपुरोहित थे।**
- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार पुष्यमित्र बौद्ध धर्म का उत्पीड़क था। पुष्यमित्र ने बौद्ध विहारों को नष्ट किया तथा बौद्ध भिक्षुओं की हत्या की थी।
- संभवतः पुष्यमित्र बौद्ध विरोधी था, लेकिन भरहुत स्तूप बनाने का श्रेय पुष्यमित्र शुंग को ही दिया जाता है।

विजय अभियान

- पुष्यमित्र के शासनकाल में कई विदेशी आक्रमणकारियों के द्वारा भारत पर आक्रमण किये गए।
- पुष्यमित्र के राजा बन जाने पर मगध साम्राज्य को बहुत बल मिला था। जो राज्य मगध की अधीनता त्याग चुके थे, पुष्यमित्र ने उन्हें फिर से अपने अधीन कर लिया था।
- पुष्यमित्र ने अपने विजय अभियानों से सीमा का विस्तार किया।

विदर्भ (बरार) की विजय

- विदर्भ का शासक यज्ञसेन था। वह मौर्यों की तरफ से विदर्भ के शासक पद पर नियुक्त हुआ था, परंतु मगध साम्राज्य की दुर्बलता का लाभ उठाकर उसने स्वयं को विदर्भ का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया।
- यज्ञसेन को शुंगों का 'स्वाभाविक शत्रु' बताया गया है।
- पुष्यमित्र के आदेश से अग्निमित्र ने उस पर आक्रमण किया और उसे परास्त कर विदर्भ को फिर से मगध साम्राज्य के अधीन कर लिया।

पृष्ठभूमि

- चौथी सदी ई. के प्रारंभ में भारत में कोई बड़ा संगठित राज्य अस्तित्व में नहीं था। यद्यपि कुषाण एवं शक शासकों का शासन चौथी सदी ई. तक जारी रहा लेकिन उनकी शक्ति काफी कमजोर हो गई थी और सातवाहन वंश का शासन तृतीय सदी ई. के मध्य से पहले ही समाप्त हो गया था। ऐसी राजनीतिक स्थिति में **गुप्त राजवंश का उदय** हुआ।
- कुषाणों के पतन के पश्चात् उत्तर भारत में अनेक राजतंत्रों एवं गणतंत्रों का उदय हुआ। राजतंत्रों में गुप्त, नाग, आभीर, इक्ष्वाकु तथा गणतंत्रों में आर्जुनायन, मालव, यौधेय, लिच्छवी आदि शामिल थे।
- कुषाणों के बाद लगभग चार शताब्दियों तक भारत का सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास होता रहा, जो कि मुख्यतः गुप्त राजाओं के शासनकाल से संबंधित है।
- गुप्त वंश का आरंभिक राज्य उत्तर प्रदेश और बिहार में था। संभवतः गुप्त शासकों के लिये बिहार की अपेक्षा उत्तर प्रदेश अधिक महत्व वाला प्रांत था, क्योंकि आरंभिक गुप्त मुद्राएँ और अभिलेख मुख्यतः उत्तर प्रदेश से ही पाए गए हैं।
- गुप्त संभवतः वैश्य थे तथा कुषाणों के सामंत रहे थे। कुषाणों से प्राप्त सैन्य तकनीक एवं वैवाहिक संबंधों ने गुप्त साम्राज्य के प्रसार एवं सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गुप्त राजवंश के इतिहास के स्रोत

गुप्त राजवंश का इतिहास जानने के निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण स्रोत हैं- (i) साहित्यिक स्रोत, (ii) पुरातात्विक स्रोत और (iii) विदेशी यात्रियों के विवरण।

साहित्यिक स्रोत

- विशाखदत्त के नाटक 'देवीचंद्रगुप्तम्' से गुप्त शासक रामगुप्त एवं चंद्रगुप्त द्वितीय के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसके अलावा कालिदास की रचनाएँ (ऋतुसंहार, कुमारसंभवम्, मेघदूत, मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञान शाकुंतलम्) तथा शूद्रक कृत 'मृच्छकटिकम्' और वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' से भी गुप्त काल की जानकारी मिलती है।

पुरातात्विक स्रोत

- पुरातात्विक स्रोत में अभिलेखों, सिक्कों तथा स्मारकों से गुप्त राजवंश के इतिहास का ज्ञान होता है।
- समुद्रगुप्त के 'प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख' से उसके बारे में जानकारी मिलती है।

- स्कंदगुप्त के 'भीतरी स्तंभलेख' से हूण आक्रमण के बारे में जानकारी मिलती है, जबकि स्कंदगुप्त के 'जूनागढ़ अभिलेख' से इस बात की जानकारी प्राप्त होती है कि उसने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया था।
- गुप्तकालीन राजाओं के सोने, चांदी तथा तांबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं। इस काल में सोने के सिक्कों को 'दीनार', चांदी के सिक्कों को 'रूपक' अथवा 'रूप्यक' तथा तांबे के सिक्कों को 'माषक' कहा जाता था।
- गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों का सबसे बड़ा ढेर राजस्थान प्रांत के 'बयाना' से प्राप्त हुआ है।
- मंदिरों में तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर, मध्य प्रदेश), भूमरा का शिव मंदिर (सतना, मध्य प्रदेश), नचना कुठारा का पार्वती मंदिर (पन्ना, मध्य प्रदेश), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर, उत्तर प्रदेश), देवगढ़ का दशावतार मंदिर (झाँसी, उत्तर प्रदेश) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।
- गुप्तकालीन स्मारकों, जैसे-मंदिर, मूर्तियाँ, चैत्यगृह आदि से तत्कालीन कला और स्थापत्य की जानकारी मिलती है।
- अजंता एवं बाघ की गुफाओं के कुछ चित्र भी गुप्त कालीन माने जाते हैं।

विदेशी यात्रियों के विवरण

इस काल के प्रमुख विदेशी यात्री-

फाहियान: यह चीनी यात्री था और चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आया था। इसने मध्य देश का वर्णन किया है।

ह्वेनसांग: इसने कुमारगुप्त प्रथम, बुधगुप्त, नरसिंहगुप्त 'बालादित्य' आदि गुप्त शासकों का उल्लेख किया है। इसके विवरण से ही यह पता चलता है कि कुमारगुप्त ने 'नालंदा महाविहार' की स्थापना करवाई थी।

गुप्त राजवंश: प्रारंभिक इतिहास

गुप्त राजवंश की स्थापना के संबंध में अधिकांश इतिहासकारों में मतभेद है। दो मुहरें जिनमें से एक के ऊपर संस्कृत में 'श्रीगुप्तस्य' अंकित है, से प्रतीत होता है कि 'श्रीगुप्त' नामक व्यक्ति ने इस वंश की स्थापना की थी।

गुप्त काल के प्रमुख शासक

श्रीगुप्त

- गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था, जिसने 'महाराज' की उपाधि धारण की थी।
- महाराज सामंतों की उपाधि होती थी जिससे पता चलता है कि वह किसी शासक के अधीन शासन करते थे।

गुप्त काल की प्रमुख रचनाएँ	
पुस्तक	लेखक
ऋतुसंहार	कालिदास
मेघदूत	कालिदास
कुमारसंभवम्	कालिदास
रघुवंश	कालिदास
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
अभिज्ञानशाकुंतलम्	कालिदास
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
देवीचंद्रगुप्तम्	विशाखदत्त
स्वप्नवासवदत्ता	भास
चारुदत्ता	भास
अरूढभंग	भास
हर्षचरित	बाणभट्ट
कादंबरी	बाणभट्ट
नागानंद	हर्षवर्धन
प्रियदर्शिका	हर्षवर्धन
रत्नावली	हर्षवर्धन
बृहत्संहिता	वराहमिहिर
पंचसिद्धांतिका	वराहमिहिर
ब्रह्मसिद्धांत	ब्रह्मगुप्त
आर्यभटीयम्	आर्यभट्ट
सूर्यसिद्धांत	आर्यभट्ट
न्यायावतार	सिद्धसेन
पंचतंत्र	विष्णु शर्मा

नीतिसार	कामदक
कामसूत्र	वात्स्यायन
चरक संहिता	चरक
मृच्छकटिकम्	शूद्रक
योगाचार	असंग

- गुप्त काल में सबसे अधिक प्रगति गणित एवं ज्योतिष के क्षेत्र में हुई। आर्यभट्ट इस काल के सबसे महान् वैज्ञानिक, गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री थे। आर्यभट्ट ने प्रमाणित किया है कि पृथ्वी गोल है और वह अपनी धुरी पर घूमती रहती है। शून्य की खोज भी आर्यभट्ट ने की।
- आर्यभट्ट द्वारा वर्गमूल, घनमूल निकालने की विधि तथा ज्या (Sine) सिद्धांत दिया गया।
- वराहमिहिर ने आर्यभट्ट के ज्या सिद्धांत को और अधिक परिशुद्ध किया था।
- ब्रह्मगुप्त ने चक्रिय चतुर्भुज के क्षेत्रफल और विकर्णों की लंबाई ज्ञात करने, शून्य के प्रयोग के नियम और द्विघात समीकरणों को हल करने के सूत्र दिये।
- सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का पितामह कहा जाता है। उन्होंने शल्य चिकित्सा को उपचार कलाओं में सर्वोत्तम माना। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सुश्रुत संहिता' में 121 प्रकार के शल्य उपकरणों का वर्णन किया।
- नागार्जुन रसायन विज्ञान के ज्ञाता थे। वामभट्ट ने 'अष्टांगसंग्रह' नामक आयुर्वेद ग्रंथ की रचना की।
- वराहमिहिर ने ज्योतिष के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किये। उन्होंने 'पंचसिद्धांतिका' नामक ज्योतिष ग्रंथ की रचना की।
- पुराणों का जो वर्तमान रूप आज देखने को मिलता है, उसकी रचना गुप्तकाल में हुई थी। इस काल में अनेक स्मृतियों एवं सूत्रों पर भाष्य लिखे गए। गुप्त काल में नारद, पराशर, बृहस्पति, कात्यायन आदि स्मृतियों की रचना की गई।

अभ्यास प्रश्न

1. प्राचीन भारत में हुई वैज्ञानिक प्रगति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सत्य हैं?
 1. प्रथम सदी ई. में विभिन्न प्रकार के विशिष्ट शल्य औजारों का उपयोग आम था।
 2. तीसरी सदी के आरंभ में मानव शरीर के आंतरिक अंगों का प्रत्यारोपण शुरू हो चुका था।
 3. पाँचवीं सदी ई. में कोण के ज्या का सिद्धांत ज्ञात था।
 4. सातवीं सदी ई. में चक्रीय चतुर्भुज का सिद्धांत ज्ञात था।

कूट:

- (a) 1 और 2 (b) 3 और 4
(c) 1, 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

IAS, 2012

2. 'परम् भागवत्' उपाधि धारण करने वाला प्रथम गुप्त शासक था-
 - (a) चंद्रगुप्त प्रथम
 - (b) समुद्रगुप्त
 - (c) चंद्रगुप्त द्वितीय
 - (d) रामगुप्त

UPPSC (Pre), 2015

3. 'पृथिव्या प्रथम वीर' उपाधि थी-
 - (a) समुद्रगुप्त की
 - (b) राजेंद्र प्रथम की
 - (c) अमोघवर्ष की
 - (d) गौतमीपुत्र शातकर्ण की

UPPSC (Pre), 2016

4. गुप्त सम्राट, जिसने 'हूणों' को पराजित किया था?
 - (a) समुद्रगुप्त
 - (b) चंद्रगुप्त द्वितीय
 - (c) स्कंदगुप्त
 - (d) रामगुप्त

BPS, 2011

भूमिका

छठी शताब्दी के मध्य तक लगभग गुप्त साम्राज्य विखंडित हो गया। इसके पश्चात् सामंतवाद नामक नई प्रवृत्ति के साथ विकेंद्रीकरण एवं क्षेत्रीयता की भावना का उदय हुआ। हालाँकि इस दौरान कुछ प्रमुख राजवंशों ने शासन किया, लेकिन संपूर्ण भारत को एकसूत्र में बांधा नहीं जा सका। राजनीतिक व्यवस्था की यह प्रवृत्ति तुर्क शासन की स्थापना तक जारी रही।

गुप्त वंश के पतन के बाद जिन नए वंशों का उदय हुआ, उनका विवरण निम्नलिखित है-

राजवंश	स्थान	प्रमुख शासक	उपलब्धि
मैत्रक	वल्लभी	भट्टारक, धरसेन, ध्रुवसेन प्रथम, धरनपट्ट गुहसेन, शिलादित्य प्रथम	गुप्तोत्तर काल के नवोदित राज्यों पर सबसे लंबे समय तक शासन किया।
मौखरि	कन्नौज	हरिवर्मा, ईशानवर्मा, सर्ववर्मा	इन्होंने हूणों को पराजित कर पूर्वी भारत को उनके आक्रमण से बचाया।
पुष्यभूति	थानेश्वर	पुष्यभूति, प्रभाकरवर्धन, राज्यवर्धन, हर्षवर्धन	विशाल राज्य स्थापित किया।
परवर्ती गुप्त	मगध	महासेन गुप्त, देवगुप्त, आदित्य सेन	मौखरियों से राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता रही।
चंद्र (गौड़)	बंगाल	शशांक	थानेश्वर एवं कन्नौज शासकों से इसकी शत्रुता रही।

थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश

- गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् उत्तर भारत के राजवंशों में थानेश्वर का पुष्यभूति वंश सर्वाधिक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली सिद्ध हुआ। इतिहास में यही राजवंश वर्धन वंश के नाम से प्रसिद्ध है।
- पुष्यभूति वंश का संस्थापक पुष्यभूति था। इस वंश को वैश्य जाति से संबंधित माना जाता है।
- पुष्यभूति गुप्तों के सामंत थे, किंतु हूणों के आक्रमण के बाद उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी।
- यह राजवंश हूणों के साथ हुए अपने संघर्ष के कारण प्रसिद्ध हुआ।
- इस वंश में नरवर्धन, आदित्यवर्धन तथा प्रभाकरवर्धन जैसे शासक हुए।
- प्रभाकरवर्धन के दो पुत्र राज्यवर्धन एवं हर्षवर्धन तथा पुत्री राज्यश्री थी।
- राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि वंश के शासक गृहवर्मन के साथ हुआ था।
- गौड़ शासक शशांक द्वारा राज्यवर्धन को मार दिये जाने के बाद हर्षवर्धन शासक बना।

ह्वेनसांग का विवरण

- हर्षवर्धन के शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग स्थल मार्ग से भारत आया। वह चीन से 629 ई. में चला और सारे रास्ते घूमते हुए भारत पहुँचा। भारत में लंबे अरसे तक ठहर कर 645 ई. में चीन लौट गया। वह नालंदा (बिहार) के बौद्ध विश्वविद्यालय में पढ़ने और भारत से बौद्ध ग्रंथ संग्रह करने के उद्देश्य से आया था।
- उसने अपना ग्रंथ 'सी-यू-की' के नाम से लिखा। ह्वेनसांग को 'यात्रियों का राजकुमार' तथा 'वर्तमान शाक्यमुनि' कहा गया।
- ह्वेनसांग के अनुसार, भारतीय समाज चार वर्णों में विभक्त था, जिसमें ब्राह्मण सर्वोच्च थे। उसने शूद्रों को किसान कहा था। उसके अनुसार, भारतीय लोग दाँतों पर काला निशान लगाते थे और कान में कुंडल पहनते थे।

हर्षवर्धन (606-647 ई.)

- राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद 606 ई. में 16 वर्ष की अवस्था में हर्षवर्धन थानेश्वर की गद्दी पर बैठा। ह्वेनसांग हर्ष को 'शिलादित्य' के नाम से संबोधित करता है।
- हर्ष का साम्राज्य सामंती संगठन पर आधारित था, जो हर्ष की उपाधियों- परमभट्टारक, महाराजाधिराज, सकलोत्तरापथेश्वर, चक्रवर्ती, सार्वभौम, परमेश्वर, परममाहेश्वर आदि से स्पष्ट हो जाता है।
- गुप्तों के विघटन के बाद उत्तर भारत में जिस राजनीतिक विकेंद्रीकरण के युग का प्रारंभ हुआ, हर्षवर्धन के राज्यारोहण के साथ ही उसकी समाप्ति हुई। वर्धन वंश के इस यशस्वी सम्राट ने अपने यश के द्वारा उत्तर भारत के विशाल भू-भाग को अपने साम्राज्य के अंतर्गत संगठित किया।

हर्ष का शासनकाल

- हर्ष ने शशांक (गौड़ शासक) को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया। उसने उत्तरी भारत के अन्य राजाओं को भी अपने अधीन कर लिया।
- ह्वेनसांग के विवरण के अनुसार, हर्ष ने उत्तरी भारत के पाँच राज्यों को अपने अधीन किया; संभवतः ये पाँच राज्य-पंजाब, कन्नौज, गौड़ या बंगाल, मिथिला और उड़ीसा (वर्तमान ओडिशा) थे।
- पश्चिम में उसने वल्लभी के शासक 'ध्रुवसेन द्वितीय' से अपनी पुत्री का विवाह कर शत्रुता समाप्त की और मैत्री संबंध स्थापित किया।
- हर्ष एवं पुलकेशिन द्वितीय के बीच नर्मदा नदी के तट पर युद्ध हुआ, जिसमें हर्ष की पराजय हुई। ऐहोल प्रशस्ति में इसका उल्लेख मिलता है। पुलकेशिन द्वितीय चालुक्य वंश का प्रतापी शासक था।

- कुमारपाल ने सोमनाथ मंदिर का अंतिम रूप से पुनर्निर्माण करवाया तथा जैन आचार्य हेमचंद्र के साथ सोमनाथ मंदिर में शिव की अर्चना की। 'कुमारपालचरित' नामक काव्य में जयसिंह सूरि नामक कवि ने उसका यशोगान किया है।

अजयपाल (1172-1176 ई.)

अजयपाल, कुमारपाल का उत्तराधिकारी था। उसके शासनकाल में शैव एवं जैन धर्मावलंबियों के मध्य गृहयुद्ध आरंभ हो गया, जिसके कारण अनेक जैन भिक्षुओं की हत्या कर दी गई और अनेक जैन मंदिरों को नष्ट कर दिया गया।

अन्य शासक

- मूलराज द्वितीय (1176-1178 ई.) तथा भीम द्वितीय (1178-1195 ई.) इस वंश के अन्य प्रमुख शासक थे।
- मूलराज द्वितीय ने 1178 ई. में आबू पर्वत के निकट मुहम्मद गौरी को हराया। चालुक्य वंश का अंतिम शासक भीम द्वितीय था। उसने चालुक्य शक्ति एवं प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया।
- भीमराज द्वितीय ने मुहम्मद गौरी के गुजरात आक्रमण (1178 ई.) को विफल किया। 1195 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने गुजरात पर आक्रमण कर अन्हिलवाड़ पर अधिकार कर लिया।

गुप्तोत्तरकालीन अन्य राजवंश

गौड़ वंश

- गौड़ बंगाल का प्रमुख राजवंश था। बंगाल में गौड़ राजपूतों का लंबे समय तक शासन रहा।
- शशांक गौड़ वंश का सबसे प्रतापी राजा था। वह सम्राट हर्षवर्धन का समकालीन था तथा संपूर्ण भारत पर शासन करने की महत्वाकांक्षा रखता था।
- शशांक ने हर्षवर्धन के भाई राज्यवर्धन का वध किया था। इसके पश्चात् हर्षवर्धन ने शशांक को पराजित किया और उसकी महत्वाकांक्षाओं को बंगाल तक सीमित कर दिया। शशांक के बाद गौड़ वंश का पतन हो गया। बाद में इसी वंश के किसी क्षत्रिय ने बंगाल में समुद्र और शक्तिशाली पाल वंश की नींव रखी।
- पाल वंश के अनेक शिलालेखों तथा अन्य दस्तावेजों से प्रमाणित होता है कि ये विशुद्ध सूर्यवंशी थे लेकिन बौद्ध धर्म को प्रश्रय देने के कारण ब्राह्मणवादियों ने चंद्रगुप्त तथा अशोक महान की तरह इन्हें भी 'शूद्र' घोषित करने का प्रयास किया है।

नोट: एक अन्य मान्यता के अनुसार, बंगाल का शासक शशांक (सन् 602-620 ई.) ब्राह्मण धर्म के शैव संप्रदाय का अनुयायी था और बौद्ध धर्म का कट्टर शत्रु था। उसने बोधिवृक्ष को कटवाकर उसकी जड़ों में आग लगवा दी।

वल्लभी के मैत्रक वंश

- मैत्रक वंश की स्थापना भट्टारक ने की थी। ये गुप्तों के अधीन सामंत थे। भट्टारक ने गुप्त वंश के पतन का लाभ उठाकर स्वयं को गुजरात और सौराष्ट्र का शासक घोषित कर दिया और वल्लभी को अपनी राजधानी बनाया।

- इस वंश के शासक शिलादित्य प्रथम के शासनकाल में यह वंश बहुत प्रभावशाली हो गया था। इस वंश का शासन मालवा (मध्य प्रदेश) और राजस्थान में भी फैल गया था, लेकिन बाद में मैत्रकों को दक्कन के चालुक्यों और कन्नौज के शासक हर्ष से पराजित होना पड़ा।
- इस वंश के शासक ध्रुवसेन द्वितीय से हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह किया था। भट्टारक और उसके उत्तराधिकारी धार्मिक संस्थानों के महान संरक्षक थे। वल्लभी बौद्ध धर्म एवं शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था।

कलचुरि (चेदि) वंश

- कलचुरि वंश की स्थापना कोकल्ल प्रथम ने की थी। उसने त्रिपुरी को अपनी राजधानी बनाया था। कलचुरि संभवतः चंद्रवंशी क्षत्रिय थे।
- गांगेय देव (1019-1040 ई.) इस वंश का सबसे प्रतापी राजा था, जिसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी।
- 1181 ई. तक आते-आते अज्ञात कारणों से इस वंश का पतन हो गया। कलचुरि शासक 'त्रैकूटक संवत्' का प्रयोग करते थे, जो 248-249 ई. में प्रचलित हुआ था।

पूर्वी गंग वंश

- पूर्वी गंग वंश का सर्वाधिक प्रतापी राजा अनंतवर्मा चोडगंग था। उसने 976-1048 ई. तक शासन किया।
- पूर्वी गंग वंश के शासक धर्म एवं कला के महान संरक्षक थे। अनंतवर्मा चोडगंग ने पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर का निर्माण करवाया। इसके अलावा, पूर्वी गंग वंश के शासकों के द्वारा निर्मित कोणार्क का सूर्य मंदिर भी विश्वविख्यात है।
- उनकी राजधानी का नाम 'कलिंगनगर' था, जो वर्तमान समय में आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिला का श्रीमुखलिंगम है।

काकतीय वंश

- कल्याणी के चालुक्य वंश के उत्कर्ष काल में काकतीय वंश के राजा चालुक्यों के सामंतों के रूप में अपने राज्य का शासन करते थे। चालुक्य साम्राज्य के विघटन काल में काकतीय वंशी प्रोल द्वितीय ने अपने को चालुक्यों की अधीनता से मुक्त कर लिया तथा उसने गोदावरी और कृष्ण नदियों के बीच के प्रदेश पर अपना एकछत्र शासन स्थापित कर लिया।
- रुद्र प्रथम में वारंगल को काकतीय राज्य की राजधानी बनाया था। रुद्र प्रथम काकतीय वंश के सबसे योग्य व साहसी राजाओं में से एक था। उसने अपने राज्य की सीमा का बहुत विस्तार किया।
- रुद्र प्रथम के बाद 'महादेव' व 'गणपति' शासक बने। गणपति ने विदेशी व्यापार को अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया था। उसने विभिन्न बाधक तटकरों को समाप्त कर दिया। मोटुपल्ली (आंध्र प्रदेश) उसके काल का प्रमुख बंदरगाह (समुद्र-पत्तन) था।

होयसल वंश

- होयसल वंश देवगिरि के यादव वंश के समान ही द्वारसमुद्र के यादव कुल का था। इसलिये इस वंश के राजाओं ने उत्कीर्ण लेखों में अपने को 'यादवकुलतिलकय' कहा है।
- चालुक्य नरेश सोमेश्वर तृतीय के समय में इस वंश के विष्णुवर्धन ने अपने को स्वतंत्र कर लिया और चालुक्य राज्यों को जीतकर

भूमिका

भारत के सुदूर दक्षिण के तीनों ओर समुद्र से घिरा दक्षिणतम भू-भाग प्राचीन काल में तमिलकम् या तमिलहम् नाम से विख्यात था। ऐतिहासिक युग के प्रारंभ में दक्षिण भारत का क्रमबद्ध इतिहास हमें संगम साहित्य से प्राप्त होता है। 'संगम' का अर्थ तमिल कवियों का संघ, परिषद् अथवा गोष्ठी से है, जिसे राजकीय संरक्षण प्राप्त होता था। इन्हीं कवियों द्वारा तमिल साहित्य रचा गया, जो संगम साहित्य के नाम से प्रचलित हुआ। संगम काल के बारे में हमें संगम साहित्य के अलावा अन्य स्रोतों यथा- स्ट्रैबो, पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (अज्ञात यूनानी लेखक की रचना), प्लिनी, टॉलेमी आदि की रचनाओं से भी जानकारी मिलती है।

'संगम' आयोजन में तमिल कवि एवं विद्वान एकत्रित होते थे। प्रत्येक कवि एवं लेखक अपनी रचनाओं को संगम के सामने प्रस्तुत करते थे तथा उनकी स्वीकृति के बाद ही किसी रचना का प्रकाशन संभव हो पाता था। संगम साहित्य से ही ज्ञात होता है कि ऋषि अगस्त्य एवं कौंडिन्य ने दक्षिण भारत में वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रचार-प्रसार किया। म्दुरै में मंडल अथवा सम्मेलन के रूप में तमिल कवियों का यह संगम पर्याप्त समुन्नत स्थिति में था। इसका सर्वप्रथम उल्लेख इरैयनार अगप्पोरुल के भाष्य से प्राप्त होता है। इस प्रकार तमिल कवियों के संगम पर आधारित प्राचीनतम तमिल साहित्य, संगम साहित्य कहलाता है और वह युग जिसके विषय में इस साहित्य द्वारा जानकारी प्राप्त होती है 'संगम युग' कहलाता है। संगम साहित्य का संकलन नौ खंडों में उपलब्ध है।

'संगम' अथवा सम्मेलन

प्राप्त विवरण के अनुसार पांड्य राजाओं के संरक्षण में कुल तीन संगम आयोजित किये गए-

प्रथम संगम

- संगम अथवा सम्मेलन के अंतर्गत तमिल कवि एवं विद्वान एकत्रित होते थे और अपनी रचनाएँ 'संगम' के सामने प्रस्तुत करते थे।
- प्रथम संगम पांड्य राजाओं की राजधानी म्दुरै में अगस्त्य ऋषि की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था।
- प्रथम संगम में सदस्यों की कुल संख्या 549 थी। इस संगम में 4499 लेखकों ने अपनी रचनाओं की प्रस्तुति की तथा उन्हें प्रकाशित करवाने की आज्ञा प्राप्त की।
- प्रथम संगम 89 पांड्य राजाओं के संरक्षण में हुआ, जो 4,400 वर्षों तक चला।
- प्रथम संगम में जिन ग्रंथों का संकलन हुआ, उनमें अकट्टियम, परिपदाल, मुदुनारै, मुदुकुरुकु तथा कलरि आविरै आदि प्रमुख थे। वर्तमान में इनमें से कोई भी रचना उपलब्ध नहीं है।

द्वितीय संगम

- द्वितीय संगम कपाटपुरम् (अलैवाई) में आयोजित किया गया तथा इस संगम की अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की।
- इस संगम में 3700 रचनाकारों ने अपनी रचनाओं को प्रकाशित करवाने की आज्ञा प्राप्त की।
- द्वितीय संगम 59 पांड्य राजाओं के संरक्षण में हुआ। यह संगम भी अत्यधिक लंबी अवधि तक चला।
- इस संगम में संकलित साहित्यों में तमिल व्याकरण ग्रंथ 'तोलकाप्पियम' ही एकमात्र शेष है। इस ग्रंथ की रचना का श्रेय अगस्त्य ऋषि के शिष्य तोल्काप्पियर को दिया जाता है।

तृतीय संगम

- तृतीय संगम का आयोजन पांड्य राजाओं की राजधानी म्दुरै में किया गया। इस संगम की अध्यक्षता नक्कीरर ने की थी।
- तृतीय संगम में 449 कवियों को उनकी रचना प्रकाशित करने की आज्ञा मिली। यह संगम 1,850 वर्षों तक चलता रहा।
- तृतीय संगम में संकलित की गई रचनाएँ वर्तमान में भी उपलब्ध हैं, जिनकी संख्या 49 है।
- तृतीय संगम को 49 पांड्य शासकों का संरक्षण मिला।
- इस संगम द्वारा संकलित उत्कृष्ट रचनाएँ नेदुंथोकै, कुरुंथोकै, नत्रिनई, एन्कुरनूर पदित्रुप्पट, नूत्रैबधू, परि-पादल, कूथु, वरि, पैरिसै तथा सित्रिसै हैं।
- उल्लेखनीय है कि वर्तमान में उपलब्ध तमिल ग्रंथ का संकलन इसी संगम में किया गया था।

संगम अथवा सम्मेलन

संगम	अध्यक्ष	संरक्षक	स्थल	सदस्यों की संख्या
प्रथम	अगस्त्य ऋषि	पांड्य शासक	म्दुरै	549
द्वितीय	अगस्त्य ऋषि	पांड्य शासक	कपाटपुरम्	59
तृतीय	नक्कीरर	पांड्य शासक	म्दुरै	49

संगम साहित्य

- प्राचीन संगम काल में जिन संगम ग्रंथों की रचनाएँ की गईं, उन्हें संगम साहित्य कहा गया। विषय-वस्तु की दृष्टि से संगम साहित्य में 'प्रेम' और 'राजाओं की प्रशंसा' पर अधिक जोर दिया जाता था। तमिल में प्रेम संबंधी मानवीय पहलुओं पर आधारित रचनाओं को 'अगम' तथा राजाओं की प्रशंसा, सामाजिक जीवन, नैतिकता, वीरता, रीति-रिवाजों संबंधी रचनाओं को 'पुरम' कहा जाता था।

भारत का नामकरण

- भारत को अनेक नामों से पुकारा गया है। प्राचीन काल में भारत के विशाल उपमहाद्वीप को 'भारतवर्ष' के नाम से जाना जाता था। संभवतः भारत का नामकरण ऋग्वैदिक काल के प्रमुख जन 'भरत' के नाम पर किया गया।
- भारत देश जंबूद्वीप का दक्षिणी भाग था। आर्यों का निवास स्थल होने के कारण इसका नामकरण 'आर्यावर्त' के रूप में हुआ।
- भारत का अंग्रेजी नाम 'इंडिया' की उत्पत्ति 'इंडस' (सिंधु) शब्द से हुई है जो यूनानियों द्वारा चौथी सदी से प्रचलन में है। इंडिया नाम पुरानी अंग्रेजी में 9वीं सदी से और आधुनिक अंग्रेजी में 17वीं सदी से मिलता है। चीनियों ने प्रारंभ में भारत के लिये तिऐन-चू अथवा चुआंतू शब्द का प्रयोग किया, लेकिन ह्वेनसांग के बाद वहाँ पर 'यिन-तू' शब्द का चलन हो गया।
- मध्यकालीन इतिहास लेखकों (फारसी और अरबी) ने इस देश को 'हिंद' अथवा 'हिंदुस्तान' शब्द से संबोधित किया। इत्सिंग ने भारत के लिये 'आर्य देश' और 'ब्रह्मराष्ट्र' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।
- एक प्रदेश के रूप में भारत का प्रथम सुनिश्चित उल्लेख पाणिनी लिखित 'अष्टाध्यायी' में मिलता है।

प्राचीनकालीन प्रमुख शिक्षा के केंद्र तक्षशिला

- तक्षशिला, वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी ज़िले में स्थित है। यह प्राचीन समय में राजनीति और शस्त्रविद्या की शिक्षा का प्रमुख केंद्र था।
- कोशल के राजा प्रसेनजित, मगध का राजवैद्य जीवक, सुप्रसिद्ध राजनीतिविद् चाणक्य, बौद्ध विद्वान वसुबंधु आदि ने यहाँ से शिक्षा प्राप्त की थी। चाणक्य यहाँ के प्रमुख आचार्य थे।

नालंदा

- प्राचीन भारत के शिक्षा केंद्रों में नालंदा विश्वविद्यालय का नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय है। इसकी स्थापना गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई.) ने की थी।
- इस विश्वविद्यालय में 8 बड़े कमरे तथा व्याख्यान के लिये 300 छोटे कमरे बने हुए थे। यहाँ भारत के अतिरिक्त चीन, मंगोलिया, तिब्बत, कोरिया, मध्य एशिया आदि देशों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। नालंदा महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केंद्र था।
- यहाँ लगभग 10,000 विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिये करीब 2000 शिक्षक थे।

- ह्वेनसांग ने यहाँ 18 महीने तक रहकर अध्ययन किया था। ह्वेनसांग के समय इस विश्वविद्यालय के कुलपति शीलभद्र थे।
- इत्सिंग ने यहाँ रहकर 400 संस्कृत ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ तैयार की थी। यहाँ का 'धर्मगंज' नामक पुस्तकालय तीन भव्य भवनों-रत्नासागर, रत्नोद्धि तथा रत्नरंजक में स्थित था।
- वर्तमान में नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार की राजधानी पटना से लगभग 90 किमी. दूर नालंदा ज़िले के राजगीर नामक स्थान पर स्थित है।

वल्लभी

- वल्लभी पश्चिम भारत में शिक्षा तथा संस्कृति का प्रसिद्ध केंद्र था। यह हीनयान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केंद्र था।
- इत्सिंग के अनुसार, सभी देशों के विद्वान यहाँ एकत्रित होते थे तथा विविध सिद्धांतों पर शास्त्रार्थ करके उनकी सत्यता निर्धारित किया करते थे।
- ह्वेनसांग के अनुसार, यहाँ एक सौ बौद्ध विहार थे जिनमें लगभग 6000 हीनयानी भिक्षु निवास करते थे।

विक्रमशिला

- विक्रमशिला के महाविहार की स्थापना पाल नरेश धर्मपाल (770-810 ई.) ने करवाई थी। विक्रमशिला विश्वविद्यालय में छह महाविद्यालय थे। प्रत्येक में एक केंद्रीय कक्ष तथा 108 अध्यापक थे। केंद्रीय कक्ष को 'विज्ञान भवन' कहा जाता था। यहाँ के आचार्यों में दीपंकर एवं श्रीज्ञान का नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय है।
- यहाँ के स्नातकों को अध्ययनोपरांत पाल शासकों द्वारा उपाधियाँ प्रदान की जाती थीं। स्नातकों को 'पंडित' की उपाधि दी जाती थी। महापंडित, उपाध्याय तथा आचार्य क्रमशः उच्चतर उपाधियाँ थीं। 1203 ई. में मुस्लिम आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया तथा भिक्षुओं की सामूहिक हत्या की।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

- प्राचीन भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई। खगोल विद्या में इसलिये प्रगति हुई, क्योंकि ग्रह देवता माने जाने लगे थे। ग्रहों का संबंध ऋतुओं और मौसमों के परिवर्तनों से था तथा इन परिवर्तनों का संबंध खेती से था।
- प्राचीन काल में व्याकरण और भाषाविज्ञान का उद्भव इसलिये हुआ, क्योंकि ब्राह्मण एवं पुरोहित वेद की ऋचाओं और मंत्रों के उच्चारण की शुद्धता को बहुत अधिक महत्त्व देते थे।

उत्तर कैलाश मंदिर	तंजौर (तमिलनाडु)	10वीं-11वीं शताब्दी, राजराज-I
शिव देवालय	पुलुन्नरुबा (श्रीलंका)	10वीं-11वीं शताब्दी, राजराज-I
ऐरावतेश्वर मंदिर	दारासुरम (तमिलनाडु)	12वीं शताब्दी राजराज-II
त्रिभुवनेश्वर मंदिर या कपहरेश्वर मंदिर	त्रिभुवनम (तमिलनाडु)	12वीं-13वीं शताब्दी कुलोतुंग-III
वैष्णव मंदिर	नेल्लोर (आंध्र प्रदेश)	12वीं शताब्दी, बुक्का प्रथम
पंपावती का मंदिर	विजयनगर (कर्नाटक)	15वीं शताब्दी, देवराय-II
पार्वती मंदिर	चिदंबरम (तमिलनाडु)	15वीं शताब्दी, देवराय-II
वरदराज पेरुमल मंदिर	कांचीपुरम (तमिलनाडु)	15वीं शताब्दी, देवराय-II
जलगोदेश्वर मंदिर	बेल्लूर (तमिलनाडु)	15वीं शताब्दी, देवराय-II
विट्टलस्वामी मंदिर	विजयनगर (कर्नाटक)	16वीं शताब्दी, कृष्णदेव राय
हजारा राम मंदिर	विजयनगर (कर्नाटक)	16वीं शताब्दी, कृष्णदेव राय
मीनाक्षी मंदिर	मदुरई (तमिलनाडु)	नायक वंश

प्रमुख संवत्

प्राचीन भारतीय लेखों में उल्लिखित अधिकांश तिथियाँ किसी-न-किसी संवत् से संबद्ध हैं। प्रमुख संवत्तों का उल्लेख निम्नवत् है-

विक्रम संवत्

विक्रम संवत् का आरंभ 57 ई.पू. में हुआ था। इतिहासकारों के एक समूह की मान्यता है कि विक्रम संवत् का आरंभ उज्जैन के शासक विक्रमादित्य द्वारा शकों पर विजय प्राप्त करने के बाद किया गया था, वहीं इतिहासकारों के दूसरे वर्ग के अनुसार इस संवत् का प्रारंभ 'मालव गणराज्य' द्वारा किया गया थो कालांतर में गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा मालवा विजय के पश्चात इसका नाम विक्रम संवत् रखा गया।

शक संवत्

शक संवत् या शालिवाहन संवत् का आरंभ 78 ई. से माना जाता है। पारम्परिक मान्यता के अनुसार यह माना जाता है कि इसका प्रचलन सम्राट कनिष्क ने शकों पर विजय प्राप्त करने या सिंहासनारुढ़ होने के उपरांत किया था। भारत का वर्तमान राष्ट्रीय पंचांग (कैलेंडर) इसी संवत् पर आधारित है। 365 दिन के सामान्य वर्ष में शक संवत् में वर्ष का पहला दिन 1 चैत्र, ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार, प्रतिवर्ष 22 मार्च या अधिवर्ष में 21 मार्च को पड़ता है।

कलचुरि-चेदि संवत्

संभवतः इसकी शुरुआत 248-49 ई. के लगभग पश्चिमी भारत के आमीर नरेश ईश्वरसेन द्वारा की गई थी। मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के कलचुरि शासकों द्वारा उनके लेखों में इसी संवत् का प्रयोग किया गया।

गुप्त संवत्

गुप्त संवत् की शुरुआत गुप्त वंश के शासक चंद्रगुप्त प्रथम ने 319 ई. में की थी। अतः चक्रवर्ती गुप्त राजाओं तथा उनके सामंतों के लेखों में गुप्त संवत् का प्रयोग मिलता है।

वल्लभी संवत्

वल्लभी संवत् की जानकारी अलबरूनी के विवरण से मिलती है। वह लिखता है कि वल्लभ नामक राजा ने शक काल के 241 वर्ष बाद

वल्लभी संवत् का प्रवर्तन किया था। इस प्रकार इसकी स्थापना तिथि 78 + 241 = 319 ई. निकाली जाती है। यही तिथि गुप्त संवत् की भी है। अतः दोनों संवत् एक प्रतीत होते हैं।

हर्ष संवत्

हर्ष संवत् का संबंध वर्धन वंश के शासक हर्षवर्धन से है। हर्ष के लेखों, समकालीन उत्तरगुप्त राजाओं तथा नेपाल के लेखों में इस संवत् का प्रयोग पाया जाता है। हर्ष के लेखकों द्वारा राज्यारोहण की तिथि 606 ई. बताई गई है। अतः संभवतः हर्ष संवत् का प्रारंभ इसी समय हुआ होगा।

प्राचीन काल के प्रमुख राजवंश, संस्थापक एवं राजधानी		
राजवंश	संस्थापक	राजधानी
हर्यक वंश	बिम्बिसार	राजगृह, पाटलिपुत्र
शिशुनाग वंश	शिशुनाग	पाटलिपुत्र, वैशाली
नंद वंश	महापद्मनंद	पाटलिपुत्र
मौर्य वंश	चंद्रगुप्त मौर्य	पाटलिपुत्र
शुंग वंश	पुष्यमित्र शुंग	पाटलिपुत्र
कण्व वंश	वासुदेव	पाटलिपुत्र
सातवाहन वंश	सिमुक	प्रतिष्ठान
कुषाण वंश	कुजुल कडफिसस प्रथम	पुरुषपुर (पेशावर), मथुरा
गुप्त वंश	श्रीगुप्त	पाटलिपुत्र
पुष्यभूति वंश	पुष्यभूति	थानेश्वर, कन्नौज
पल्लव वंश	सिंहविष्णु	कांचीपुरम्
पाल वंश	गोपाल	मुंगेर
गुर्जर प्रतिहार वंश	हरिश्चंद्र	कन्नौज
सेन वंश	सामंत सेन	राढ़
गहड़वाल वंश	चंद्रदेव	कन्नौज
चौहान वंश	वासुदेव	अजमेर
चंदेल वंश	नन्नुक	खजुराहो
गंग वंश	वज्रहस्त पंचम	पुरी

खंड-2

मध्यकालीन भारत



भूमिका

प्राचीन भारतीय इतिहास की तुलना में मध्यकालीन भारतीय इतिहास से संबंधित ऐतिहासिक सामग्री प्रचुर मात्रा में है। इसका मुख्य कारण प्राचीन काल में ऐतिहासिक ग्रंथों का अभाव या फिर उनकी उपलब्धता की कमी है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास जानने के लिये ऐतिहासिक स्रोतों की कमी नहीं है। इतिहास लेखन में मुस्लिम सुल्तान और उलेमा रुचि रखते थे। मुस्लिम इतिहासकारों ने सुल्तान और उनकी भारतीय विजयों का विस्तृत विवरण दिया है। साहित्यिक स्रोतों के अतिरिक्त मध्यकालीन भारत में विदेशी यात्रियों के यात्रा वृत्तांत, शिक्षित सुल्तानों की आत्मकथा, विजय अभियानों के बाद स्थापित विजय स्मारक, विजय स्तंभ आदि ऐतिहासिक स्रोतों से भी पर्याप्त जानकारी मिलती है।

सल्तनत काल में फारसी और अरबी पुस्तकों की रचना की गई। हालाँकि इनके लेखकों को हम वैज्ञानिक इतिहासकारों की श्रेणी में नहीं रख सकते, क्योंकि वे केवल तात्कालिक शासकों के कार्यकलापों तक ही सीमित थे, परंतु इन रचनाओं से सल्तनतकालीन इतिहास और कालक्रम की पर्याप्त जानकारी मिलती है।

सल्तनतकालीन प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत

साहित्यिक साक्ष्य

फारसी तथा अरबी साहित्य

तुर्क-अफगान शासक मूलतः सैनिक थे और स्वयं शिक्षित नहीं थे। हालाँकि उन्होंने इस्लामी विधाओं और कलाओं को प्रोत्साहन दिया। प्रत्येक सुल्तान के दरबार में फारसी लेखकों, विद्वानों तथा कवियों का जमावड़ा लगा रहता था। उनकी रचनाओं से उस काल के इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

तारीख-उल-हिंद

- इस पुस्तक की रचना अलबरूनी द्वारा की गई। वह महमूद गज़नवी के आक्रमण के समय भारत आया था। वह अरबी और फारसी भाषा का ज्ञाता था।
- अपनी इस पुस्तक में उसने 11वीं शताब्दी के प्रारंभ में हिंदुओं के साहित्य, विज्ञान तथा धर्म का आँखों देखा सजीव वर्णन किया है। इस पुस्तक के अध्ययन से तात्कालिक सामाजिक दशा का पर्याप्त ज्ञान होता है। यह पुस्तक 'किताब-उल-हिंद' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

चचनामा

- यह अरबी भाषा में लिखी गई है। मुहम्मद अली-बिन-अबूबकर कुफी ने नासिरुद्दीन कुवाचा के समय में इसका फारसी में अनुवाद किया।
- 'चचनामा' अरबों की सिंध-विजय की जानकारी का मूल स्रोत है।

ताज-उल-मासिर

- इसकी रचना हसन निजामी द्वारा की गई। इस पुस्तक में 1192 ई. से 1228 ई. तक के भारत की घटनाओं का विवरण दिया गया है। इसमें राजनीतिक घटनाओं के साथ-साथ सामाजिक तथा धार्मिक जीवन का उल्लेख भी किया गया है। दिल्ली सल्तनत के प्रारंभिक दिनों का प्रामाणिक इतिहास इस पुस्तक में पर्याप्त रूप से मिलता है।
- यह अरबी एवं फारसी दोनों भाषाओं में लिखी गई है।

तारीख-ए-फिरोज़शाही

- 'तारीख-ए-फिरोज़शाही' ज़ियाउद्दीन बरनी की कृति है। वह तुगलक शासकों का समकालीन था। 'तारीख-ए-फिरोज़शाही' में बलबन के सिंहासनारोहण से लेकर फिरोज़शाह तुगलक के शासनकाल के छठे वर्ष तक का वर्णन है। इस रचना में उस काल के सामाजिक, आर्थिक जीवन तथा न्याय सुधारों का वर्णन किया गया है।
- चूँकि, बरनी राजस्व अधिकारी के पद पर कार्यरत था अतः उसने अपनी पुस्तक में राजस्व स्थिति का वर्णन स्पष्ट एवं विस्तारपूर्वक किया है। उसने इस ग्रंथ में तत्कालीन संतों, दार्शनिकों, इतिहासकारों, कवियों, चिकित्सकों आदि के विषय में भी लिखा है। इसके साथ ही अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल की सामाजिक तथा आर्थिक दशा का इस पुस्तक में सजीव वर्णन मिलता है।
- इस पुस्तक की एक सीमा धार्मिक पक्षपात है। हालाँकि समकालीन इतिहास वर्णन की दृष्टि से इसका ऐतिहासिक महत्त्व है।

फुतूहात-ए-फिरोज़शाही

- इसमें फिरोज़शाह तुगलक के शासन प्रबंध के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। इसमें फिरोज़शाह तुगलक के सैन्य अभियानों का वर्णन किया गया है। इसके विषय में कहा जाता है कि स्वयं फिरोज़शाह तुगलक ने इसे लिखा है।

जैनुल अखबार

- इस पुस्तक के लेखक अबी सईद थे। इसमें ईरान के इतिहास का वर्णन किया गया है।
- इस पुस्तक से महमूद गज़नवी के जीवन तथा क्रियाकलापों की जानकारी मिलती है।

तबकात-ए-नासिरी

- इस पुस्तक का लेखक मिन्हाज-उस-सिराज है, जिसने मुहम्मद गौरी की भारत विजय से लेकर 1259-60 ई. तक का वर्णन किया है।

मध्यकालीन ऐतिहासिक रचना और उनके रचनाकार		
रचना	रचनाकार	विषय-वस्तु
किताब-उल-हिंद	अलबरूनी	इसमें भारत के धार्मिक और सामाजिक जीवन के विस्तृत वर्णन के साथ यहाँ के ज्ञान-विज्ञान की भी विस्तृत व्याख्या की गई है।
राजतरंगिणी	कल्हण	इसमें कश्मीर के क्षेत्रीय इतिहास का सजीव वर्णन किया गया है।
गौडवहो	वाक्पति	कन्नौज के शासक यशोवर्मन के बारे में जानकारी मिलती है।
रामचरित	संध्याकर नंदी	पाल वंश के शासक रामपाल के जीवन के संबंध में चर्चा की गई है।
तबकात-ए-नासिरी	मिन्हाज-उस-सिराज	इस रचना में इस्लाम के उदय से पूर्व काल के पैगंबरों का वर्णन और मुसलमानों का इतिहास भी वर्णित है।
तारीख-ए-फिरोज़शाही	ज़ियाउद्दीन बरनी	इसमें बलबन के सत्ता में आने से आरंभ होने वाली घटनाओं का विवरण मिलता है।
खज्जायन-उल-फुतूह	अमीर खुसरो	अलाउद्दीन खिलजी के विजयों का वर्णन है।
तुगलकनामा	अमीर खुसरो	तुगलक वंश के सत्तारुढ़ होने की घटनाओं का वर्णन है।
नूहसिपहर	अमीर खुसरो	भारत की जलवायु, रहन-सहन, कृषि, वेशभूषा आदि का वर्णन है।
फुतूह-उस-सलातीन	इसामी	गज़नी राज्य के उदय से लेकर बहमनी राज्य की संस्थापना तक की घटनाओं का वर्णन है।
फतवा-ए-जहाँदारी	ज़ियाउद्दीन बरनी	इसमें सल्तनतकालीन राजनैतिक दर्शन और प्रशासन का उल्लेख है।
किताब-उल-रेहला	इब्न बतूता (मोरक्कन अफ्रीकी)	मुहम्मद बिन तुगलक के व्यक्तिगत जीवन, प्रशासन, सामाजिक जीवन आदि का उल्लेख है।
तारीख-ए-शेरशाही	अब्बास खाँ शेरवानी	अकबर के आदेश पर उसी के दरबार में लिखी गई। शेरशाह के शासन और प्रशासनिक कार्यों की जानकारी का यह सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है।
अकबरनामा	अबुल फजल	यह तीन भाग में है। प्रथम भाग में अकबर के पूर्वगामी शासकों का इतिहास एवं दूसरे भाग में अकबर के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं का वर्णन है तथा तीसरा भाग 'आइन-ए-अकबरी' कहलाता है, जिसमें अकबर द्वारा प्रतिपादित शासन प्रणाली, कानून, नियम आदि की जानकारी है।
पादशाहनामा	मुहम्मद अमीन काज़विनी, अब्दुल हामीद लाहौरी तथा मुहम्मद वारिस	शाहजहाँ के काल का इतिहास। मुहम्मद अमीन काज़विनी ने शाहजहाँ के प्रथम 10 वर्षों का इतिहास लिखा, उसके पश्चात् अगले दस वर्षों का विवरण अब्दुल हामिद लाहौरी ने किया तथा मुहम्मद वारिस ने शाहजहाँ के संयुक्त इतिहास का वर्णन किया, परंतु बीस वर्षों के बाद का इतिहास उसने स्वतंत्र होकर लिखा।
नुस्खा-ए-दिलकुशा	भीमसेन	औरंगज़ेबकालीन दक्षिण भारत के इतिहास का वर्णन तथा मुगल-मराठा संघर्ष का उल्लेख।
बल्लालचरित	आनंद भट्ट	इसमें बंगाल के सेन वंश का वर्णन मिलता है।
पृथ्वीराजरासो	चंदबरदाई	इसमें पृथ्वीराज चौहान के जीवन का वर्णन तथा संयोगिता संग उनके प्रेम का वर्णन एवं मुहम्मद गौरी द्वारा उसे बंदी बनाकर गज़नी ले जाने तथा शब्दभेदी बाण द्वारा मुहम्मद गौरी को मारने का वर्णन है।

भूमिका

अरब एवं बाद में तुर्कों द्वारा भारत पर आक्रमण भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। अरबों द्वारा धन की लूट के लिये सिंध एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में आक्रमण किये गए। भारत पर सर्वप्रथम मुस्लिम आक्रमण 711 ई. में उबैदुल्लाह के नेतृत्व में हुआ। इसके बाद 711 ई. में ही बुदेल के नेतृत्व में दूसरा आक्रमण हुआ। ये दोनों ही आक्रमण असफल हुए। अंततः 712 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में पहला सफल मुस्लिम आक्रमण भारत पर हुआ। उस समय सिंध पर दाहिर का शासन था। सिंध विजय के बावजूद अरब आक्रमणकारी भारत में उस प्रकार का साम्राज्य नहीं बना पाए जैसा कि उस समय उन्होंने एशिया, अफ्रीका और यूरोप के विभिन्न भागों में बनाया था।

712 ई. में अरबों से पराजय तथा आगामी चुनौतियों का सामना करने के लिये कई नई शक्तियाँ (गुर्जर प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चालुक्य आदि) का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने भारत में आगामी 300 वर्षों तक शासन किया। अरब आक्रमण के बाद भारतीय प्रायद्वीप एक लंबे समयांतराल तक विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रहा, लेकिन 1000 ई. के आसपास भारत में एक बार पुनः विकेंद्रीकरण और विभाजन की स्थितियाँ सक्रिय हो उठीं। परिणामतः तुर्कों ने महमूद गज़नवी के नेतृत्व में भारत पर (कुल 17 बार) आक्रमण किये। भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना का श्रेय अरबों की अपेक्षा तुर्कों को दिया जाता है।

आठवीं शताब्दी के आरंभ में भारत की राजनीतिक दशा

इस समय देश में कोई सर्वोच्च केंद्रीय शक्ति नहीं थी। भारत विभिन्न छोटे-छोटे राज्यों का संग्रह था और प्रत्येक राज्य स्वतंत्र एवं सार्वभौम था। आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रमुख राज्य निम्न थे—

अफगानिस्तान

- अरब आक्रमण के समय अफगानिस्तान में एक ब्राह्मण वंश का शासन था। मुसलमान लेखकों ने इस वंश को हिंदुशाही साम्राज्य अथवा 'काबुल' या 'जाबुल' का साम्राज्य कहा है।

कश्मीर

सातवीं शताब्दी में कश्मीर में दुर्लभवर्धन ने कार्कोट वंश की स्थापना की। ह्वेनसांग ने उसके शासनकाल में कश्मीर की यात्रा की। दुर्लभवर्धन का उत्तराधिकारी दुर्लभक (632-682 ई.) हुआ, जिसने 'प्रतापादित्य' की उपाधि धारण की।

कश्मीर के शासकों में ललितादित्य मुक्तापीड, जो लगभग 724 ई. में सिंहासन पर बैठा उसका साम्राज्य पूर्व में बंगाल, दक्षिण में कोंकण,

उत्तर-पश्चिम में तुर्कमेनिस्तान और उत्तर-पूर्व में तिब्बत तक विस्तृत था। वह अपने वंश का प्रतापी शासक था। उसके समय में सूर्य देवता के लिये 'मार्तंड मंदिर' बनवाया गया। 740 ई. के लगभग उसने कन्नौज के राजा यशोवर्मन को पराजित किया।

नेपाल

सातवीं शताब्दी में नेपाल, जिसके उत्तर में तिब्बत व दक्षिण में कन्नौज का राज्य था, हर्ष के साम्राज्य में मध्यवर्ती राज्य था। अंशुवर्मन ने नेपाल में वैश्व ठाकुरी वंश की नींव रखी। उसने तिब्बत के साथ मैत्री संबंध स्थापित किये। उसने अपनी कन्या का विवाह तिब्बत के शासक के साथ किया। हर्ष की मृत्यु के बाद तिब्बत व नेपाल की सेना ने चीन के राजदूत वांग ह्यूंगसे (Wang-hiuen-tse) को कन्नौज के सिंहासन का अपहरण करने वाले अर्जुन के विरुद्ध सहायता प्रदान की।

कामरूप (असम)

हर्ष के समय कामरूप में भास्कर वर्मन का शासन था। हर्ष की मृत्यु के उपरांत उसने अपने राज्य की स्वतंत्रता की घोषणा की। यह प्रतीत होता है कि वह अधिक समय तक स्वाधीन न रह सका।

- भास्कर वर्मन ने लगभग 650 ई. तक शासन किया। भास्कर वर्मन के बाद उसका वंश समाप्त हो गया। कालांतर में कामरूप पाल साम्राज्य का अंग बन गया।

कन्नौज

- हर्ष की मृत्यु के पश्चात् अर्जुन (एक स्थानीय शासक) ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया। उसने चीन के राजदूत वांग ह्यूंगसे का विरोध किया, जो हर्ष की मृत्यु के उपरांत वहाँ पहुँचा था। वांग ह्यूंगसे पुनः असम, तिब्बत व नेपाल की सैन्य सहायता लेकर लौटा। युद्ध में अर्जुन की हार हुई। अर्जुन को बंदी बनाकर चीन ले जाया गया तत्पश्चात् वहीं कारागार में उसकी मृत्यु हो गई।
- आठवीं शताब्दी के आरंभ में यशोवर्मन कन्नौज के सिंहासन पर बैठा। अपने पराक्रम से उसने पुनः कन्नौज को अपने अतीत का गौरव प्रदान किया। वह सिंध के राजा दाहिर का समकालीन था।
- इसके उपरांत कन्नौज पर आधिपत्य के लिये 8वीं शताब्दी की तीन बड़ी शक्तियों— पाल, गुर्जर प्रतिहार व राष्ट्रकूटों के मध्य एक संग्राम हुआ, जिसे 'त्रिपक्षीय संघर्ष' के नाम से जाना जाता है। कुछ समय के लिये कन्नौज पर प्रतिहारों का आधिपत्य स्थापित हो गया, परंतु बाद में उनका स्थान पाल वंश ने ले लिया। अंततोगत्वा इस युद्ध में प्रतिहारों की विजय हुई। इसके बाद प्रतिहार उत्तर भारत की एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभर कर आए।

भूमिका

712 ई. में अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध एवं मुल्तान दोनों राज्यों पर विजय प्राप्त की, हालाँकि बाद में दमिश्क में आंतरिक अशांति और खलीफ़ा के सत्ता परिवर्तन के कारण 871 ई. तक ये दोनों राज्य स्वतंत्र हो गए। ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में मुल्तान में करमाथी जाति का शासक फतेह दाऊद का शासन था। तुर्क आक्रमण के समय सिंध में अरब के मुसलमान स्वतंत्र शासन करते थे।

अरबों का भारत पर प्रभुत्व एक सीमा विशेष तक ही रहा और धीरे-धीरे वे प्रभावहीन हो गए। लेकिन तात्कालिक राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो कहा जा सकता है कि अरबों ने एक ऐसी चुनौती पेश की, जिसका सामना करने के लिये कालांतर में अनेक शक्तियाँ उदित हुईं, जो भारत में आगामी 300 वर्षों अथवा तुर्कों के आक्रमण से पूर्व तक बनी रही।

इस अध्याय के अंतर्गत हम तुर्कों के आक्रमण से पूर्व प्रमुख भारतीय राजवंशों का संक्षिप्त अध्ययन करेंगे।

हिंदुशाही राज्य

- उत्तरी भारत का यह एक विशाल राज्य था जो कश्मीर की सीमा से मुल्तान की सीमा तक फैला हुआ था और चेनाब नदी से लेकर हिंदुकुश पर्वतमाला तक विस्तृत था।
- अरब के शासक इस राज्य को लगभग 200 साल के भरसक प्रयासों के बाद भी न जीत सके। अंत में उन्हें अफगानिस्तान और काबुल छोड़ना पड़ा।
- दसवीं शताब्दी के अंत में जयपाल यहाँ का शासक बना। वह अपनी वीरता और योग्यता के लिये प्रसिद्ध था, किंतु विदेशी तुर्कों का सामना करने में वह असफल रहा।

जेजाकभुक्ति का चंदेल वंश

- 9वीं सदी के आरंभ में बुंदेलखंड क्षेत्र में इनका उदय हुआ। संभवतः ये जनजातीय (गोंड) मूल के थे।
- इस वंश का प्रमुख शासक ननुक था। उसके पौत्र जयसिंह अथवा जेजा के नाम पर उनका राज्य 'जेजाकभुक्ति' कहलाया।
- चौहान राजा पृथ्वीराज के हाथों 1182 ई. में परमर्दिदेव की पराजय के बाद इनकी शक्ति का पतन हो गया।

बादामी या वातापी के चालुक्य

- छठी शताब्दी के मध्य से लेकर आठवीं शताब्दी के मध्य तक दक्षिणपथ पर जिस चालुक्य वंश की शाखा का आधिपत्य रहा,

उसका उत्कर्ष स्थल बादामी या वातापी होने के कारण उसे 'बादामी' या 'वातापी का चालुक्य' कहा जाता है।

- पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख से वातापी के चालुक्यों के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। ऐहोल अभिलेख (एक प्रशस्ति के रूप में) की रचना रविकीर्ति ने की थी।
- वातापी के चालुक्य वंश का संस्थापक पुलकेशिन प्रथम था।
- कीर्तिवर्मन प्रथम (566-597 ई.) को 'वातापी का प्रथम निर्माता' कहा जाता है।
- पुलकेशिन द्वितीय (609-642 ई.) चालुक्य वंश के शासकों में सर्वाधिक प्रतापी शासक हुआ। ऐहोल अभिलेख से पता चलता है कि पुलकेशिन द्वितीय का हर्ष से नर्मदा नदी के तट पर युद्ध हुआ। इस युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष को पराजित किया।
- कालांतर में विक्रमादित्य द्वितीय के बाद 746 ई. के लगभग कीर्तिवर्मन द्वितीय विशाल चालुक्य साम्राज्य का स्वामी बना, हालाँकि वह अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित साम्राज्य को कायम रखने में असमर्थ रहा। दंतिदुर्ग नामक राष्ट्रकूट शासक ने उसे परास्त कर महाराष्ट्र में राष्ट्रकूट वंश की नींव डाली।

गुजरात (अन्हिलवाड़) का चालुक्य अथवा सोलंकी वंश

- दसवीं सदी के अंत में मूलराज प्रथम ने गुजरात में चालुक्य वंश की नींव डाली।
- जयसिंह सिद्धराज और कुमारपाल के प्रयत्नों से यह राज्य पश्चिमी भारत का एक महान शक्तिशाली राज्य बन गया। इस राज्य की सीमा के अंदर गुजरात, सौराष्ट्र, मालवा, आबू, नंदौला और कोंकण स्थित थे।
- भीम प्रथम (1022-1064) इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। इसके शासनकाल में गुजरात पर महमूद गजनवी का आक्रमण (1025-26 ई.) हुआ।
- 1187 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने गुजरात पर आक्रमण करके अन्हिलवाड़ पर अधिकार कर लिया।
- परांतक प्रथम के बाद अगले लगभग 30 वर्षों तक का समय चोलों की अवन्ति का काल था, जिसमें परांतक द्वितीय या सुंदर चोल तथा उत्तम चोल ने शासन किया।

कल्याणी के चालुक्य

- कल्याणी के चालुक्य वंश की स्वतंत्रता का जन्मदाता तैलप (तैल, तैलप, तैलपप्पा) द्वितीय था।
- सोमेश्वर प्रथम, 1043 ई. में शासक बना। उसने अपनी राजधानी मान्यखेत से कल्याणी में स्थानांतरित की।

भूमिका

712 ई. में अरबों के आक्रमण और उसकी प्रतिक्रियास्वरूप भारत में कई प्रभावशाली साम्राज्यों का उदय हुआ। हालाँकि 300 वर्षों तक भारत सहित सिंहल द्वीप, जावा, सुमात्रा में शासन करने वाले सम्राट, अपने आपसी संघर्ष, देश में केंद्रीकृत शक्ति का अभाव, सत्तालोभ के लिये तुर्कों की सहायता आदि के कारण तुर्क-मुसलमानों के आक्रमण को विफल करने में असफल रहे। अर्थात् कहा जा सकता है कि अरबों का प्रारंभ किया हुआ कार्य तुर्कों ने पूरा किया। भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना का श्रेय तुर्कों को जाता है। इस अध्याय के अंतर्गत हम भारत पर तुर्क आक्रमण, तुर्क आक्रमण के बाद भारत की राजनीतिक स्थिति में बदलाव, तुर्कों की विजय का प्रभाव आदि संदर्भों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

तुर्क मुसलमान

- तुर्क, चीन की उत्तरी-पश्चिमी सीमाओं पर निवास करने वाली एक लड़ाकू एवं बर्बर जाति थी।
- तुर्क, उमैय्यावंशी शासकों के संपर्क में आने के बाद इस्लाम धर्म के संपर्क में आए।
- कालांतर में उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। उनका उद्देश्य एक विशाल मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करना था।

अलप्तगीन

- अलप्तगीन बुखारा के सामानी वंश के शासक अब्दुल मलिक (954-961 ई.) का तुर्क दास था। बाद में उसकी योग्यता और दूरदर्शिता के कारण 956 ई. में उसे खुरासान का राज्यपाल नियुक्त किया गया।
- 961 ई. में अब्दुल मलिक के देहांत के बाद उत्तराधिकार के संघर्ष (अब्दुल मलिक के भाई और चाचा) में अलप्तगीन ने उसके चाचा की सहायता की, परंतु अब्दुल मलिक का भाई मंसूर सिंहासन पाने में सफल रहा।
- अलप्तगीन इन परिस्थितियों में अपने लगभग 800 वफादार सैनिकों के साथ अफगान प्रदेश के गजनी नगर में बस गया और यहाँ स्वतंत्र गजनी वंश की स्थापना की। अलप्तगीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र इस्हाक और उसके बाद बलक्तगीन गद्दी पर बैठे।
- बलक्तगीन की मृत्यु के बाद पीराई ने गजनी पर अधिकार कर लिया पर वह एक अयोग्य शासक था, जिसे हटाकर सुबुक्तगीन गद्दी पर बैठे।

सुबुक्तगीन

- सुबुक्तगीन प्रारंभ में अलप्तगीन का गुलाम था। गुलाम की प्रतिभा से प्रभावित होकर उसने उसे अपना दामाद बना लिया और 'अमीर-उल-उमरा' की उपाधि से सम्मानित किया।

- सुबुक्तगीन एक योग्य तथा महत्वाकांक्षी शासक सिद्ध हुआ। उसने अपनी शक्ति को बढ़ाया और साथ ही राज्य का विस्तार भी शुरू कर दिया।
- सुबुक्तगीन ही प्रथम तुर्की था, जिसने हिंदूशाही शासक जयपाल को पराजित किया।
- सुबुक्तगीन के देहांत के बाद उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी महमूद गजनी (998-1030 ई.) गजनी की गद्दी पर बैठे।
- पिता की मृत्यु के बाद महमूद गजनी के पास एक विशाल और सुसंगठित साम्राज्य था। इसमें कोई संदेह नहीं कि सुबुक्तगीन एक वीर और गुणवान शासक था। उसने अपने राज्य का शासन 20 वर्षों तक विवेक, सुनीति और उदारता के साथ किया।
- भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम तुर्क (मुस्लिम) शासक सुबुक्तगीन ही था।

महमूद गजनी (998-1030 ई.)

- सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र महमूद गजनी 998 ई. में शासक बना। राज्यारोहण के समय उसकी आयु मात्र 27 वर्ष की थी। महमूद गजनी ने 1000 ई. से 1027 ई. तक भारत में कुल 17 बार आक्रमण किया। उसके आक्रमण का मुख्य उद्देश्य भारत की संपत्ति को लूटना था।
- महमूद ने 1000 ई. में भारत पर आक्रमण शुरू किये तथा सीमावर्ती क्षेत्रों के दुर्गों/किलों को जीता। तत्पश्चात् 1001 ई. में हिंदुशाही शासक जयपाल को पेशावर के निकट पराजित किया। महमूद ने धन लेकर जयपाल को छोड़ दिया परंतु अपमानित महमूस करते हुए जयपाल ने अपने पुत्र आनंदपाल को राज्य सौंपकर आत्महत्या कर ली।
- महमूद का महत्त्वपूर्ण आक्रमण मुल्तान पर हुआ तथा रास्ते में भेरा के निकट जयपाल के पुत्र आनंदपाल को पराजित किया और 1006 ई. में मुल्तान पर विजय प्राप्त की।
- 1008 ई. में महमूद ने पुनः मुल्तान पर आक्रमण किया और उसे अपने राज्य में मिला लिया।
- 1009 ई. में हिंदुशाही राजा आनंदपाल से बैहंद के निकट महमूद का युद्ध हुआ परंतु आनंदपाल पराजित हुआ और सिंध से नगरकोट तक महमूद का आधिपत्य स्थापित हो गया।
- 1014 ई. में महमूद ने थानेश्वर पर आक्रमण किया। दिल्ली के राजा ने पड़ोसी राजाओं के साथ मिलकर महमूद को रोकने का प्रयत्न किया, परंतु विफल रहे।
- 1018 ई. में महमूद ने कन्नौज क्षेत्र पर आक्रमण किया। वहाँ गुर्जर-प्रतिहार शासक के प्रतिनिधि राज्यपाल का शासन था। मार्ग में बरन (बुलंदशहर) के राजा हरदत्त ने आत्मसमर्पण किया तथा मथुरा

ममलूक वंश (1206-1290 ई.) Mamluk Dynasty (1206-1290 AD.)

भूमिका

तुर्की आक्रमणों के पश्चात् भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई, जिसके अंतर्गत अलग-अलग शासकों ने शासनभार संभाला। इस क्रम में सर्वप्रथम कुतुबुद्दीन ऐबक का नाम आता है, जिसने 'ममलूक वंश' की नींव रखी। आरंभ में इसे 'दास वंश' भी कहा जाता था। किंतु दास वंश के नाम पर कई इतिहासविदों ने आपत्ति व्यक्त की। इसका अंतर्निहित कारण 'दास' और 'ममलूक' शब्दों के सटीक निर्धारण की वजह से था। दरअसल, 'ममलूक' और 'दास' में पारिभाषिक तौर पर एक अंतर था। 'दास' शब्द का अभिप्राय 'जन्मजात दास' माना जाता था जबकि 'ममलूक' शब्द का अभिप्राय 'स्वतंत्र माता-पिता की संतान था। अतः हबीबुल्लाह द्वारा प्रस्तावित 'ममलूक वंश' ही सर्वाधिक मान्य हुआ।

कुछ इतिहासकारों ने इस वंश को 'इल्बरी वंश' की संज्ञा दी। किंतु यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि सभी शासक इल्बरी वंश से संबंधित नहीं थे। मसलन, कुतुबुद्दीन ऐबक इल्बरी तुर्क नहीं था। अतः इस वंश को इल्बरी वंश की संज्ञा देना भी अनुचित होगा। वस्तुतः 1206 से 1290 ई. तक भारत पर शासन करने वाले शासकों को आमतौर पर 'ममलूक' नाम से ही जाना जाता है। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है—

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

- मुहम्मद गौरी की मृत्यु के पश्चात् ऐबक को सिंध और मुल्तान छोड़कर मुहम्मद गौरी द्वारा विजित उत्तर भारत का संपूर्ण क्षेत्र (सियालकोट, लाहौर, अजमेर, झाँसी, दिल्ली, मेरठ, कोल (अलीगढ़), कन्नौज, बनारस, बिहार तथा लखनौती के क्षेत्र आदि) प्राप्त हुआ था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने उत्तराधिकार युद्ध की चुनौतियों का सामना अपनी कुशल वैवाहिक नीति से किया। उसने मुहम्मद गौरी के एक अन्य विश्वस्त अधिकारी ताजुद्दीन यलदोज की पुत्री से विवाह किया। उसने अपनी बहन का विवाह नासिरुद्दीन कुबाचा से किया, जो सिंध का प्रभावी अधिकारी था। उसने अपनी पुत्री का विवाह तुर्की दास अधिकारी इल्तुतमिश से किया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने गौरी की मृत्यु के बाद शासन अपने हाथ में ले लिया, लेकिन उसने न तो अपने नाम से सिक्के चलवाए और न ही खुल्वा पढ़वाया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने 'मलिक' और 'सिपहसालार' की उपाधियों से शासन प्रारंभ किया तथा 'सुल्तान' की पदवी धारण नहीं की।

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने लाहौर से शासन का संचालन किया तथा लाहौर ही उसकी राजधानी थी।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से अचानक गिर जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद आरामशाह लगभग एक साल के लिये राजगद्दी पर बैठा।

कुतुबुद्दीन ऐबक के व्यक्तित्व का मूल्यांकन

- कुतुबुद्दीन ऐबक एक योग्य सेनापति, अचूक तीरंदाज, साहसी तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति था। एक गुलाम की अवस्था से उठकर सुल्तान के पद पर पहुँचना उसकी योग्यता तथा प्रतिभा का ही परिचय था।
- ऐबक ने साम्राज्य विस्तार से अधिक ध्यान राज्य के सुदृढ़ीकरण पर दिया। यलदोज एवं कुबाचा के प्रति उसकी नीति राजनीतिक कुशलता का प्रमाण है।
- कुतुबुद्दीन एक उदार शासक था। अतः उसकी उदारता के कारण उसे 'लाखबख्श' (लाखों का दान करने वाला) कहा गया।
- सैन्य योग्यता के साथ-साथ, वह साहित्य और कला-प्रेमी भी था। उसने दो मस्जिद 'कुव्वत-उल-इस्लाम' (महरौली, दिल्ली) और 'अद्वई दिन का झोंपड़ा' (अजमेर) का निर्माण करवाया। उसने प्रसिद्ध सूफी संत 'ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी' की स्मृति में दिल्ली में कुतुबमीनार की नींव रखी, जिसे बाद में इल्तुतमिश ने पूरा करवाया।

आरामशाह (1210 ई.)

- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद सैनिक वर्ग में असंतोष, साधारण जनता में अशांति व उपद्रव रोकने के लिये लाहौर के सरदारों ने कुतुबुद्दीन ऐबक के पुत्र आरामशाह को गद्दी पर बैठाया। (हालाँकि आरामशाह के ऐबक का पुत्र होने के संबंध में विवाद है।)
- दुर्भाग्यवश आरामशाह एक कमजोर एवं अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। अतः दिल्ली के लोगों ने उसे अपना शासक स्वीकार करने से इनकार कर दिया।
- आरामशाह को सत्ता से हटाने के उद्देश्य से बदायूँ के प्रांताध्यक्ष इल्तुतमिश को एक निमंत्रण-पत्र भेजा गया।
- इल्तुतमिश ने निमंत्रण स्वीकार किया और दिल्ली के निकट जड (Jud) नामक स्थान पर आरामशाह को परास्त किया। आरामशाह के 8 माह के शासन के बाद इल्तुतमिश ने दिल्ली की सत्ता पर अधिकार कर लिया।

बलबन के उत्तराधिकारी

- बलबन दिल्ली सल्तनत के निर्माता शासकों में से एक था। उसने सल्तनत को स्थायित्व प्रदान किया तथा आंतरिक प्रशासन की व्यवस्था की, परंतु अपने उत्तराधिकारियों के लिये वह कुछ न कर सका।
- उसके जीवनकाल में ही युवराज शहजादा मुहम्मद की मंगोलों से युद्ध करते हुए मृत्यु और दूसरे पुत्र बुगरा खाँ की सुल्तान पद से उदासीनता के कारण अपनी मृत्यु के पूर्व उसने शहजादा मुहम्मद के पुत्र कैकुसरो को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।
- बलबन की मृत्यु के बाद उसके विश्वस्तों ने ही उसके आदेश की अवहेलना करते हुए बुगरा खाँ के अल्पवयस्क विलासी पुत्र कैकुबाद को सुल्तान बना दिया।

- कैकुसरो की हत्या करवा दी गई और कुलीन अमीर और गैर-अमीर वर्ग आपस में संघर्ष करने लगे।
- अंततः पक्षाघात से त्रस्त कैकुबाद को एक सामान्य तुर्क मलिक फिरोज़ खिलजी (बाद में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी) ने यमुना में फेंकवा दिया और तीन महीने तक उसके पुत्र शमसुद्दीन क्यूमर्स का संरक्षण और जून 1290 में उसकी हत्या कर मलिक फिरोज़ खिलजी दिल्ली सल्तनत का अगला सुल्तान बना।
- इस सत्ता परिवर्तन के साथ ही ममलूक या गुलाम वंश का अंत हो गया और दिल्ली सल्तनत पर सामान्य कुल के खिलजियों का शासन स्थापित हो गया।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.) The Khilji Dynasty (1290 - 1320 AD.)

खिलजी वंश

खिलजी वंश की स्थापना मध्यकालीन भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण कालखंड को रेखांकित करती है। वस्तुतः इस वंश की स्थापना जलालुद्दीन फिरोज़शाह खिलजी द्वारा 1290 ई. में की गई थी। इस वंश के अंतर्गत कुल पाँच शासकों, यथा- जलालुद्दीन फिरोज़ खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी, शिहाबुद्दीन उमर, कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी व नासिरुद्दीन खुसरोशाह ने 30 वर्षों तक शासन किया। इस काल की मुख्य विशेषता यह रही कि इस दौरान तत्कालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संरचना में मूलभूत परिवर्तन हुए। यही कारण है कि खिलजी वंश को एक क्रांति के रूप में देखा जाता है।

- खिलजी क्रांति का सामान्य अर्थ है- जाति व नस्ल आधारित शासन व्यवस्था की समाप्ति, क्योंकि अब उच्च समझे जाने वाले इल्बरी तुर्कों के स्थान पर निम्न तुर्क खिलजियों ने सत्ता संभाल ली।
- इसके कुछ अप्रत्यक्ष अर्थ भी हैं-
 - ◆ धर्म का राजनीति से अलगाव;
 - ◆ प्रतिभा या योग्यता के आधार पर अधिकारियों का चयन;
 - ◆ प्रशासन का सामाजिक विस्तार (अब प्रशासन में भारतीय मुसलमान, मंगोलों को शामिल किया गया)।
- मोहम्मद हबीब ने तुर्कों के आगमन को 'नगरीय क्रांति' से जोड़ा था तो अलाउद्दीन खिलजी के कार्यों से वह 'ग्रामीण क्रांति' की बात करते हैं।

खिलजी वंश के प्रमुख शासक

जलालुद्दीन फिरोज़ खिलजी (1290-96 ई.)

- खिलजी वंश का संस्थापक फिरोज़ खिलजी था, जिसने भारत में सत्ता स्थापना के बाद जलालुद्दीन की पदवी धारण की।
- खिलजी वंश के संस्थापक तुर्क थे, हालाँकि इतिहासकारों में इस बात को लेकर मतभेद है।

- जलालुद्दीन खिलजी ने बलबन के कार्यकाल में एक अच्छे सेनानायक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की थी। उसने कई अवसरों पर मंगोल आक्रमणकारियों का मुकाबला किया और सफलता प्राप्त की।
- जलालुद्दीन का राजनीतिक उत्कर्ष कैकुबाद (1286 - 1290 ई.) के समय में प्रारंभ हुआ। कैकुबाद के समय वह 'समाना' का सूबेदार तथा सर-ए-जहाँदार (शाही अंगरक्षक) के पद पर नियुक्त था। कैकुबाद ने उसको 'शाइस्ता खाँ' की उपाधि दी।
- 1290 ई. में कैकुबाद द्वारा निर्मित किलोखरी के महल में जलालुद्दीन ने अपना राज्याभिषेक कराया और दिल्ली का सुल्तान बना। इसने किलोखरी को अपनी राजधानी बनाया। राज्याभिषेक के समय जलालुद्दीन की आयु 70 वर्ष थी।
- बलबन की 'रक्त और लौह' की नीति त्यागकर इसने उदार नीति अपनाई और मध्यकाल का पहला शासक बना, जिसने जनता की इच्छा को शासन का आधार बनाया। वस्तुतः जलालुद्दीन ने 'अहस्तक्षेप की नीति' को अपनाया।
- जलालुद्दीन के समय 1292 ई. में अब्दुल्ला के नेतृत्व में मंगोलों ने आक्रमण किया। इसी के समय एक और मंगोल आक्रमण हलाकू के पौत्र उलूग खाँ के नेतृत्व में हुआ।
- जलालुद्दीन के काल में लगभग 4 हजार मंगोल इस्लाम धर्म को स्वीकार कर दिल्ली के निकट मुगलपुर/मंगोलपुरी में बस गए, जो 'नवीन मुसलमान' कहलाए।
- जलालुद्दीन के शासनकाल में ही अलाउद्दीन ने देवगिरी (शासक-रामचंद्र देव) का सफल अभियान किया।
- जुलाई 1296 ई. में अली गुर्शास्प (अलाउद्दीन खिलजी) ने सुल्तान जलालुद्दीन को कड़ा-मानिकपुर बुलाकर गले मिलते समय धोखे से चाकू मारकर हत्या कर दी और सत्ता पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

- उपभोक्ताओं को आज्ञा पत्र के आधार पर ही वस्तुएँ मिलती थीं।
- शहना-ए-मंडी बाज़ार का दरोगा होता था।

शासकीय भंडारण व्यवस्था

- अलाउद्दीन खिलजी को 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली' का जनक कहा जाता है।
- अलाउद्दीन यह बात अच्छी तरह समझता था कि मूल्य नियंत्रण से ही वस्तुएँ कम कीमत में नहीं बिक सकतीं, वरन् उनका भंडारण भी आवश्यक है। अतः उसने अनाज के भंडारण के लिये बड़े-बड़े गोदाम बनवाए। गोदामों का अनाज केवल आपातकालीन परिस्थितियों में ही निकाला जाता था।
- ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि अलाउद्दीन ने राशन की व्यवस्था भी लागू की। अकाल के समय प्रत्येक घर को आधा मन अनाज प्रतिदिन दिया जाता था।

बाज़ार के कर्मचारी

- बाज़ार नियंत्रण को सफल बनाने के लिये अलाउद्दीन ने योग्य, ईमानदार तथा अनुभवी लोगों को नियुक्त किया।
- बाज़ार का सबसे बड़ा अधिकारी 'सदर-ए-रियासत' कहलाता था, जिसकी नियुक्ति सुल्तान करता था।
- सदर-ए-रियासत के अधीन तीन अधिकारी- 1. शहना (निरीक्षक), 2. बरीद (गुप्तचर अधिकारी), 3. मुन्हीयाँ (गुप्तचर) नियुक्त किये गए।

अलाउद्दीन खिलजी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन

- अलाउद्दीन के चरित्र एवं कार्यों के संबंध में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। कुछ इतिहासकार उसके शासनकाल को गौरवपूर्ण मानते हैं और उसे सफल शासक की कोटि में रखते हैं, लेकिन कुछ इतिहासकार उसे बर्बर, अत्याचारी एवं अन्यायी शासक मानते हैं।
- एल्फिंस्टन के अनुसार, "उसका शासन गौरवपूर्ण था। अनेक मूर्खतापूर्ण एवं क्रूर नियमों के बावजूद भी वह सफल शासक था, उसने अपनी शक्ति का प्रयोग उचित रूप से किया।"

खिलजी वंश का पतन

- अलाउद्दीन की मृत्यु (1316 ई.) के बाद क्रमशः शिहाबुद्दीन उमर, कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी तथा नासिरुद्दीन खुसरो शाह जैसे अयोग्य शासक सत्ता पर बैठे।
- कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी (1316-1320 ई.) पहला सुल्तान शासक था, जिसने अपने आप को खलीफ़ा घोषित किया। 1317 ई. में देवगिरी की पुनर्विजय उसकी एक बड़ी उपलब्धि थी।
- बाद के दिनों में वह विलासी प्रवृत्ति का हो गया और दरबार में भी स्त्रियों की पोशाकें धारण करने लगा। गयासुद्दीन तुगलक ने खिलजी वंश के अंतिम सुल्तान नासिरुद्दीन खुसरो शाह की हत्या कर स्वयं को सुल्तान घोषित किया और तुगलक वंश की नींव डाली।
- मुबारक शाह खिलजी की हत्या कर खुसरो शाह शासक बना। वह अपने आप को 'पैगंबर का सेनापति' कहता था।

तुगलक वंश (1320-1414 ई.) The Tughlaq Dynasty (1320-1414 AD.)

तुगलक वंश

1320 ई. में गयासुद्दीन तुगलक ने खिलजी वंश के अंतिम शासक नासिरुद्दीन खुसरो शाह की हत्या कर दिल्ली सल्तनत में एक नए वंश-तुगलक वंश की स्थापना की। इस वंश ने 1414 ई. तक दिल्ली की सत्ता पर राज किया।

इस अध्याय के अंतर्गत तुगलक वंश की स्थापना, उसके प्रमुख सुल्तान, उनके कार्य और अंततः 94 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद तुगलक वंश के पतन के कारणों का अध्ययन करेंगे। ध्यातव्य है कि दिल्ली सल्तनत का इस काल में चरम विस्तार व विघटन दोनों हुआ।

प्रमुख शासक

गयासुद्दीन तुगलक शाह (1320-1325 ई.)

- गयासुद्दीन तुगलक या गाज़ी मलिक 'तुगलक वंश' का संस्थापक था। यह वंश 'कराना तुर्क' के वंश के नाम से भी प्रसिद्ध था, क्योंकि गयासुद्दीन तुगलक का पिता कराना तुर्क था।

गयासुद्दीन का उत्कर्ष

- गाज़ी मलिक का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। उसकी माता पंजाब की एक जाट महिला थी और पिता बलबन का तुर्की दास था।

- गाज़ी मलिक अपनी योग्यता व कठिन परिश्रम के कारण अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में होने वाले सैन्य अभियानों का अध्यक्ष तथा दीपालपुर का राज्यपाल नियुक्त किया गया।
- मंगोलों को पराजित करने के कारण गयासुद्दीन तुगलक 'मलिक-उल-गाज़ी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- 3 सितंबर, 1320 ई. को गयासुद्दीन तुगलक गद्दी पर बैठा। दिल्ली का वह प्रथम सुल्तान था, जिसने 'गाज़ी' (काफ़िरों का घातक) की उपाधि धारण की।

गयासुद्दीन तुगलक के समक्ष चुनौतियाँ

- शासनकाल के प्रारंभिक समय में गयासुद्दीन तुगलक के समक्ष कई चुनौतियाँ थीं। प्रांतों में विद्रोह हो रहे थे। बंगाल और सिंध पर नाममात्र का शासन रह गया था तथा गुजरात के क्षेत्रों में भी विद्रोह जारी था। राजपूत शासक अपनी शक्ति का विस्तार करने में लगे हुए थे, जबकि दक्षिण के राज्यों में अशांति और उपद्रव का वातावरण व्याप्त था। पूर्व खिलजी शासक नासिरुद्दीन खुसरो शाह द्वारा अमीरों और उलेमाओं को संतुष्ट करने के लिये राजकोष खाली कर दिया गया था, जिससे राज्य में वित्तीय संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

सैय्यद एवं लोदी वंश (1320-1414 ई.) The Tughlaq Dynasty (1320-1414 AD.)

भूमिका

1414 ई. में खिज़्र खाँ ने दौलत खाँ को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार किया और एक नए वंश की नींव डाली, जिसे 'सैय्यद वंश' (1414-51 ई.) के नाम से जाना जाता है। इस काल में न तो खिलजी काल की तरह साम्राज्य विस्तार के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई और न ही तुगलक काल की तरह व्यापक प्रशासनिक सुधार। सैय्यद वंश के पश्चात् लोदी वंश की स्थापना हुई। इस वंश का संस्थापक बहलोल लोदी था। इस अध्याय के अंतर्गत हम इन्हीं दो वंशों का अध्ययन करेंगे।

सैय्यद वंश

सैय्यद वंश का संस्थापक खिज़्र खाँ था। सैय्यदों के 37 वर्ष के शासनकाल में कुल चार शासक हुए।

खिज़्र खाँ (1414-21 ई.)

- खिज़्र खाँ केवल सैय्यद वंश का संस्थापक ही नहीं, वरन् सैय्यद वंश का सबसे प्रतापी शासक भी था।
- 'तारीख-ए-मुबारकशाही' में खिज़्र खाँ को सैय्यद बताया गया है। सैय्यद से आशय है पैगम्बर मुहम्मद (सल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वंशज। हालाँकि इतिहासकारों के बीच इसे लेकर मतभेद है।
- खिज़्र खाँ मुल्तान के गवर्नर मलिक सुलेमान का पुत्र था। मलिक सुलेमान की मृत्यु के पश्चात् खिज़्र खाँ को मुल्तान का गवर्नर नियुक्त किया गया। फिरोज़ तुगलक ने खिज़्र खाँ को मुल्तान की जागीर दे रखी थी, परन्तु जब फिरोज़ तुगलक की मृत्यु के बाद अव्यवस्था फैल गई तो मल्लू इकबाल के भाई सारंग खाँ ने खिज़्र खाँ को घेर लिया और बंदी बना लिया। खिज़्र खाँ जल्द ही उसके चंगुल से निकलकर भाग गया। 1398 ई. में तैमूर के भारत आक्रमण के समय खिज़्र खाँ ने उसकी सहायता की। परिणामतः तैमूर ने भारत वापसी पर उसे मुल्तान, लाहौर एवं दीपालपुर का सूबेदार नियुक्त किया। तत्पश्चात् 1414 ई. में वह दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा।

1414 की स्थिति

- खिज़्र खाँ 1414 ई. में जब सुल्तान बना उस समय राजधानी में सत्ता के लिये कई शक्तियाँ संघर्ष कर रही थीं।
- दोआब, इटावा, कटेहर, कन्नौज और बदायूँ के सरदार केंद्रीय सरकार की शक्ति को चुनौती दे रहे थे।
- जौनपुर, मालवा और गुजरात दिल्ली के आधिपत्य से मुक्त हो चुके थे और वे आपस में लड़ रहे थे।

खिज़्र खाँ का शासन

- शासक बनने के बाद खिज़्र खाँ ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि खुद को 'रैय्यत-ए-आला' कहा अर्थात् तैमूर का 'मातहत'।
- खिज़्र खाँ ने सिक्कों पर तुगलक सुल्तानों के नाम रहने दिये। नए सिक्कों पर उसने तैमूर तथा उसके पुत्र शाहरुख मिर्जा का नाम अंकित करवाया।

- खिज़्र खाँ का शासनकाल क्षेत्रीय राजवंशों के उदय और चुनौतियों में ही बीत गया। इतिहासकार फरिश्ता ने इसे न्यायप्रिय व उदार शासक बताया।
- सात वर्ष शासन करने के पश्चात् मई 1421 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

मुबारक शाह (1421-34 ई.)

- खिज़्र खाँ के पश्चात् उसका पुत्र मुबारक शाह सुल्तान की उपाधि धारण कर शासक बना।
- मुबारक शाह एक योग्य सेनाध्यक्ष था, उसने अनेक विद्रोहों का दमन किया।
- मुबारक शाह ने 'खुल्बा' पढ़वाया और अपने नाम के सिक्के चलवाए। साथ ही खुल्बे से तैमूर के वंशजों व सिक्कों से तुगलक वंश के शासकों का नाम हटवा दिया। उसने सिक्कों पर अपना नाम 'मुईज-उद्-दीन मुबारक शाह' खुदवाया।
- यमुना नदी किनारे मुबारकाबाद की स्थापना मुबारक शाह ने की थी।
- मुबारक शाह ने 'तारीख-ए-मुबारकशाही' के लेखक 'याहिया बिन अहमद सरहिंदी' को संरक्षण प्रदान किया।
- फरवरी 1434 ई. में मुबारकशाह की हत्या कर दी गई।

मुहम्मद शाह (1434-45 ई.)

- मुबारक शाह का कोई पुत्र नहीं था। सरवर-उल-मुल्क के नेतृत्व में अमीरों और सरदारों ने मुहम्मद शाह को गद्दी पर बैठाया, जो उसके भाई फरीद खाँ का पुत्र था।
- मुबारक शाह की हत्या में प्रमुख भूमिका निभाने वाले सरवर-उल-मुल्क को दंड की बजाय सुल्तान ने उसे वजीर का पद दिया। मुहम्मद शाह के काल में वास्तविक शक्ति सरवर-उल-मुल्क के पास ही थी।
- सरवर-उल-मुल्क द्वारा अपने विरोधियों को नष्ट करने के प्रयास के कारण अमीर वर्ग उसके विरुद्ध हो गया। फलतः सल्तनत में अराजकता का वातावरण फैलने लगा।
- सुल्तान ने सरवर-उल-मुल्क की बढ़ती महत्वाकांक्षा को देखते हुए अमीरों की सहायता से उसकी हत्या करवा दी। लेकिन अभी भी दिल्ली में विद्रोही शक्तियाँ अराजकता पैदा कर रही थीं।
- दिल्ली सल्तनत पर मालवा के शासक महमूद खिलजी ने आक्रमण किया, किंतु उचित समय पर सरहिंद (पंजाब) के अफगान राज्यपाल बहलोल लोदी की सैन्य सहायता के कारण दिल्ली सल्तनत महमूद खिलजी के आक्रमण से बच गई।
- सुल्तान मुहम्मद शाह ने बहलोल लोदी का सम्मान किया और उसे अपना 'पुत्र' कहकर पुकारा और उसे 'खान-ए-खाना' की उपाधि से विभूषित किया।
- 1445 ई. में मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गई।
- मुहम्मद शाह एक असफल शासक सिद्ध हुआ। उसके समय से ही सैय्यद वंश का पतन आरंभ हो गया।

- कैकोल्लार (जुलाहे), कंबलत्तर अर्थात् चपरासी तथा शस्त्रवाहक, नाई और आंध्र क्षेत्र में रेड्डी कुछ महत्वपूर्ण समुदायों में गिने जाते थे।

नोट: विजयनगर साम्राज्य में दस्तकार श्रेणी में बढ़ई को विशेष स्थान प्राप्त था।

- सदाशिव राय ने नाइयों पर से कर हटा लिया था।

महिलाओं की स्थिति

- तुलनात्मक रूप से महिलाओं की स्थिति अच्छी मानी जाती है।
- महिलाएँ निम्नलिखित भूमिका निभाती थीं—
 - ◆ राजा के कार्यों को लिखना; ◆ आय-व्यय की गणना;
 - ◆ मल्ल युद्ध में भाग लेना; ◆ ज्योतिष;
 - ◆ अंगरक्षक व पहरेदार; ◆ न्यायाधीश;
 - ◆ नृत्य व गायन-वादन।
- साम्राज्य में गणिकाओं की भी उपस्थिति थी जो पहले से ही दक्षिण भारत में सामाजिक व्यवस्था का अंग बन चुकी थी। विशेष यह है कि इन पर अध्यारोपित कर के द्वारा ही पुलिस को वेतन दिया जाता था।
- सामाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था।
- सती प्रथा का उल्लेख विभिन्न विदेशी यात्रियों ने भी किया, जिसमें बारबोसा, नूनिज व सीजर फ्रेडरिक विशिष्ट हैं।
- सती प्रथा को पवित्र माना गया, किंतु यह नायकों तथा राज परिवारों में ही सीमित थी, चेष्टियों व ब्राह्मणों में नहीं।
- सती होने वाली स्त्रियों की स्मृति में 'प्रस्तर स्मारक' बनाये जाते थे।

- बाल विवाह का भी प्रचलन था, जिसके कारण दहेज प्रथा का भी विकास हुआ किंतु राज्य ने दहेज को कुप्रथा मानते हुये असंवैधानिक घोषित करने का निर्णय लिया, जिसमें ब्राह्मणों की भी स्वीकारोक्ति प्राप्त थी।
- विधवा विवाह मान्य होता था। संभवतः इस पर भी टैक्स लगता था, जिसे कृष्णदेव राय ने समाप्त कर दिया।
- मंदिरों में देवपूजा के लिये रहने वाली स्त्रियों को देवदासी कहा जाता था। इन्हें आजीविका के लिये या तो भूमि दे दी जाती थी अथवा नियमित वेतन दिया जाता था।
- विजयनगर में दास प्रथा प्रचलित थी। मनुष्यों के क्रय-विक्रय को वेस-वग कहा जाता था।
- युद्ध में वीरता दिखाने वाले पुरुष को 'गंडपेद्र' नामक आभूषण पैरों में पहनाया जाता था, जो कड़े की भाँति होता था।
- मनोरंजन के क्षेत्र में विजयनगर राज्य में विविधता थी। बोल्लाट छाया नाटक था, जिसे मंडपों में आयोजित किया जाता था। रक्षणान का विकास विजयनगर में ही हुआ था।
- विजयनगर साम्राज्य में शतरंज और पासा अत्यंत लोकप्रिय खेल थे। स्वयं कृष्णदेवराय शतरंज में विशेष रुचि लेता था।
- राज्य में रामनवमी, महानवमी तथा नवरात्र आदि त्यौहार मनाए जाते थे। महानवमी सबसे बड़ा त्यौहार था, जिसमें राजा की उपस्थिति अनिवार्य होती थी। इस पर्व पर बड़ी संख्या में बलि दी जाती थी।
- राज्य में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये अनेक कार्य किये जाते थे। मठों, अग्रहारों और मंदिरों में शिक्षा प्रदान की जाती थी। अग्रहारों में मुख्यतः वेदों की शिक्षा दी जाती थी।

सल्तनतकालीन परिदृश्य (Landscape of Sultanate Period)

सल्तनतकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

खलीफ़ा से संबंध

- सल्तनत काल में प्रशासनिक प्रणाली के तहत सबसे महत्वपूर्ण संबंध सुल्तान व खलीफ़ा के थे। वास्तव में हलाकू ने अंतिम अब्बासी खलीफ़ा का 1258 ई. ही वध कर दिया था, किंतु सैद्धांतिक रूप से इस्लामिक मान्यता को जीवंत बनाए रखने के लिये सल्तनत शासकों ने उनसे संबंध बनाए रखे और अपने सिक्कों पर खलीफ़ा के प्रतिनिधि 'नासिर-ए-अमीर-उल-मोमनिन' का अंकन करवाया।
- इल्तुतमिश पहला सुल्तान था जिसने खलीफ़ा से मान्यता प्राप्त की, किंतु उसी समय खलीफ़ा ने बंगाल के विद्रोही गयासुद्दीन ऐबाज को भी मान्यता दे दी और इल्तुतमिश ने उस पर आक्रमण करने में कोई संकोच नहीं किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने शासकों की परंपरागत उपाधि के साथ ही अपने आप को खलीफ़ा का दायाँ हाथ अर्थात् 'यामिनी-उल-ख़िलाफ़त' कहा। यहाँ उल्लेखनीय है कि अलाउद्दीन खिलजी ने खिल्लत प्राप्त करने की कोशिश तो नहीं की, किंतु सैद्धांतिक रूप से इस परंपरा को जीवित रखा।

- मुबारक खिलजी ने स्वयं को ही 'खलीफ़ा' कहकर सिद्धांत व व्यवहार दोनों में इस परंपरा का उल्लंघन कर दिया।
- प्रारंभ में मुहम्मद बिन तुगलक ने खलीफ़ा की स्वीकृति को महत्वपूर्ण नहीं माना किंतु बाद में न केवल उसने खिल्लत प्राप्त की वरन् सिक्कों पर से अपने नाम हटवाकर खलीफ़ा का नाम लिखवाया।
- फ़िरोज़शाह तुगलक ने दो बार खिल्लत प्राप्त की और अपने आप को 'खलीफ़ा का नायब' घोषित किया।

उलेमा से संबंध

- प्रशासनिक व्यवस्था में शरीयत का पालन हो सके, इसलिये मुस्लिम साम्राज्यों में उलेमाओं की उपस्थिति सैद्धांतिक तौर पर उपस्थित रही, किंतु सल्तनत काल में ही अलाउद्दीन खिलजी व मुहम्मद बिन तुगलक जैसे शासकों ने उनके हस्तक्षेप पर अंकुश लगा दिया।

इक्ता व्यवस्था

- इक्ता का शब्दिक अर्थ है- 'हस्तांतरणीय लगान अधिन्यास'।
- इक्ता की सर्वप्रथम परिभाषा निज़ामुल-मुल्क-तूसी द्वारा रचित 'सियासतनामा' में दी गई। इक्ता एक ऐसा भू-क्षेत्र होता था जो

अभ्यास प्रश्न

- कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का सुल्तान कब बना?
 - 1204 ई.
 - 1205 ई.
 - 1206 ई.
 - 1207 ई.
- दिल्ली में गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक किसे माना जाता है?
 - कुतुबुद्दीन ऐबक
 - इल्तुतमिश
 - बलबन
 - अलाउद्दीन खिलजी
- 'चालीसा मंडल' का गठन किस शासक ने किया?
 - बलबन
 - कुतुबुद्दीन ऐबक
 - इल्तुतमिश
 - रजिया बेगम
- रजिया के पतन का सबसे मुख्य कारण 'एल्फिंस्टन' ने माना है?
 - उसका स्त्री होना
 - याकूत से प्रेम करना
 - पर्दा-प्रथा त्यागना
 - तुर्की अमीरों का विरोध
- 'राजत्व का सिद्धांत' किसने स्थापित किया?
 - कुतुबुद्दीन ऐबक
 - इल्तुतमिश
 - बलबन
 - रजिया बेगम
- निम्नलिखित में से कौन सल्तनतकालीन विद्वान नहीं था?
 - अमीर खुसरो
 - अमीर हसन
 - अब्बास खाँ शेरवानी
 - मिनहाज-उस-सिराज
- 'चालीसा मंडल' को निम्नलिखित में से कौन-से सुल्तान ने भंग किया?
 - इल्तुतमिश
 - कुतुबुद्दीन ऐबक
 - रजिया सुल्तान
 - बलबन
- सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:

सूची-I

- दीवान-ए-अर्ज
- सिजदा
- पाबोस
- अफराशियाब

कूट:

	A	B	C	D
(a)	4	3	1	2
(b)	3	2	1	4
(c)	3	1	2	4
(d)	1	2	3	4

सूची-II

- दंडवत् होने की प्रथा
- कदम चूमने की प्रथा
- सैन्य विभाग
- वंश

- निम्नलिखित में से कौन-सा शासक इल्बरी तुर्क नहीं था?
 - इल्तुतमिश
 - कुतुबुद्दीन ऐबक
 - बलबन
 - रुक्नुद्दीन फिरोजशाह
- अरबी परंपरा के आधार पर भारत में नई मुद्रा व्यवस्था लागू करने का श्रेय निम्नलिखित में से किसको है?
 - इल्तुतमिश
 - कुतुबुद्दीन ऐबक
 - बलबन
 - अलाउद्दीन मसूदशाह

- सल्तनत काल में 'अमीर-ए-आखूर' कहलाता था?
 - सैन्य विभाग का प्रमुख
 - अश्वशाला का प्रमुख
 - राजस्व विभाग का प्रमुख
 - धार्मिक प्रमुख
- 'तबकात-ए-नासिरी' किसकी कृति है?
 - ज़ियाउद्दीन बरनी
 - मिनहाज-उस-सिराज
 - अमीर हसन
 - अमीर खुसरो
- 'गुलाम का गुलाम' किसे कहा गया था?
 - मुहम्मद गौरी
 - कुतुबुद्दीन ऐबक
 - बलबन
 - इल्तुतमिश
- निम्नलिखित में से कौन-सी इल्तुतमिश के राज्यकाल में सल्तनत की राजधानी थी?
 - आगरा
 - लाहौर
 - बदायूँ
 - दिल्ली
- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु कैसे हुई?
 - उनके एक महत्वाकांक्षी कुलीन व्यक्ति ने कपट से छूरा मारकर उनकी हत्या कर दी।
 - पंजाब पर अधिकार जमाने के लिये गजनी के शासक ताजुद्दीन यलदोज के साथ हुए युद्ध में उनकी मृत्यु हुई।
 - बुंदेलखंड के किले कालिंजर को घेरा डालते समय उन्हें चोटें लगीं जिसके कारण बाद में उनकी मृत्यु हो गई।
 - चौगान की क्रीड़ा के दौरान अश्व से गिरने के पश्चात् उनकी मृत्यु हो गई।

IAS (Pre), 2003

- 'अढ़ाई का झोंपड़ा' क्या है?

- मस्जिद
- मंदिर
- संत की झोंपड़ी
- मीनार

56th to 59th BPSC (Pre), 2015

- दिल्ली सल्तनत का कौन-सा सुल्तान 'लाखबख्श' के नाम से जाना जाता है?

- इल्तुतमिश
- बलबन
- मुहम्मद बिन तुगलक
- कुतुबुद्दीन ऐबक

Jharkhand PSC (Pre), 2003

- निम्नलिखित में से कौन मध्यकालीन भारत की प्रथम महिला शासिका थी?

- रजिया सुल्तान
- चांदबीबी
- दुर्गावती
- नूरजहाँ

UPPSC (Mains), 2004, UPPSC (GIC), 2010

- मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खाँ भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर निम्न में से किसके काल में आया था?

- अलाउद्दीन खिलजी
- इल्तुतमिश
- बलबन
- ऐबक

UPPSC (Pre), 1993

संतों तथा सूफियों के प्रयासों से जो भक्ति एवं सूफी आंदोलन आरंभ हुए उनसे मध्ययुगीन भारत के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में एक नवीन शक्ति एवं गतिशीलता का संचार हुआ। भक्ति आंदोलन के परिणामों में मुख्य रूप से भक्ति के प्रति आस्था का विकास, लोकभाषाओं में साहित्य रचना का आरंभ, इस्लाम के साथ सहयोग के परिणामस्वरूप सहिष्णुता की भावना का विकास हुआ जिसकी वजह से जाति व्यवस्था के बंधनों में शिथिलता आई और विचार तथा कर्म दोनों स्तरों पर समाज का उन्नयन हुआ। जहाँ तक सूफीवाद का संबंध है, उसने उन तत्त्वों (सृजनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक शक्तियों) को अपनी ओर आकृष्ट किया जो सामाजिक और सांस्कृतिक क्रांति के वाहक के रूप में उभरकर सामने आये। तुर्की आधिपत्य के काल में जब देश का जनजीवन घुटन का अनुभव कर रहा था तब सूफी खानकाह ने सामाजिक संदेश फैलाने एवं सुधारवादी राजनीति का उन्माद पैदा करने का काम किया।

सूफी आंदोलन

- सूफी मत, इस्लाम धर्म में उदार, रहस्यवादी और संश्लेषणात्मक प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाली विचारधारा हैं सूफी शब्द की उत्पत्ति के संबंध में इतिहासकारों में मतभेद है। विभिन्न विद्वानों ने 'सूफी' शब्द की व्युत्पत्तिमूलक व्याख्या भिन्न-भिन्न दृष्टियों से की है।
- सबसे प्रसिद्ध मत के अनुसार सूफी शब्द 'सूफ' से विकसित हुआ है जिसका तात्पर्य है- ऊन या ऊनी कपड़ा। सूफी साधक आरंभिक समय में भेड़ या बकरी की ऊन से बने कपड़े धारण किया करते थे। संभवतः इसीलिये उन्हें सूफी कह दिया गया।
- दूसरे मत के अनुसार, सूफी शब्द की उत्पत्ति 'सफा' से हुई है जिसका अर्थ है- पवित्रता या शुद्धि की अवस्था। इस व्याख्या के अनुसार आचरण की पवित्रता और शुद्धता के कारण ही इन लोगों को सूफी कहा गया।
- कुछ विद्वानों ने सफा शब्द की एक और व्याख्या की। उनके अनुसार मोहम्मद पैगम्बर द्वारा मदीना की मस्जिद के बाहर 'सफा' अर्थात् मक्का की एक पहाड़ी पर जिन लोगों ने शरण ली, वही आगे चलकर सूफी कहलाए।
- वस्तुतः इस विवाद का कोई भी सर्वमान्य निर्णय करना कठिन है। ज्यादा संभावना इस बात की है कि सूफी शब्द की उत्पत्ति 'सूफ' अर्थात् 'ऊन' से ही हुई होगी क्योंकि प्रथम दृष्टया बाह्य विशेषताएँ ही समाज को नज़र आती हैं। आगे चलकर बाकी व्याख्याएँ क्रमशः विकसित होती गई होंगी। कुछ भी हो, आजकल इसका अर्थ 'तसव्वुफ़' को मानने वाले साधक ('इश्क मजाज़ी' और 'इश्क

हकीकी' के सिद्धांत को मानते हुए सभी धर्मों से प्रेम करना) से ही लिया जाता है।

भारत में प्रमुख सूफी सिलसिले

चिश्ती सिलसिला

- भारत में चिश्ती संप्रदाय सबसे अधिक लोकप्रिय व प्रसिद्ध हुआ।
- भारत में चिश्ती परंपरा के प्रथम संत शेख उम्मान के शिष्य ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती थे। मोईनुद्दीन चिश्ती 1192 ई. में मुहम्मद गौरी के साथ भारत आए थे। इन्होंने 'चिश्तिया परंपरा' की नींव रखी थी।
- मोईनुद्दीन चिश्ती ने अजमेर को अपना केंद्र (खानकाह) बनाया। उनकी दरगाह अजमेर में स्थित है और 'ख्वाजा साहब' के नाम से प्रसिद्ध है।
- वस्तुतः बाबा फरीद (गंज-ए-शकर) के कारण चिश्ती सिलसिले को भारत में अत्यधिक प्रसिद्धि मिली। इनकी प्रसिद्धि के प्रभाव से सिख गुरु अर्जुन देव ने 'गुरुग्रंथ साहिब' में इनके कथनों को संकलित कराया है।
- बाबा फरीद, ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के शिष्य थे और ख्वाजा बख्तियार, मोईनुद्दीन चिश्ती के प्रमुख शिष्य थे।
- चिश्ती संतों में सबसे लोकप्रिय संत निजामुद्दीन औलिया, बाबा फरीद के शिष्य थे। माना जाता है कि निजामुद्दीन औलिया ने दिल्ली के सात सुल्तानों का शासनकाल देखा था, किंतु वे किसी भी सुल्तान के दरबार में उपस्थित नहीं हुए।
- निजामुद्दीन औलिया के प्रिय शिष्य अमीर खुसरो थे।
- दक्षिण भारत में चिश्ती सिलसिले को प्रारंभ करने का श्रेय निजामुद्दीन औलिया के शिष्य 'शेख बुरहानुद्दीन गरीब' को जाता है। इन्होंने दौलताबाद को अपने प्रचार-प्रसार का केंद्र बनाया।
- मुगल शासक अकबर फतेहपुर सीकरी के चिश्ती संत शेख सलीम चिश्ती के प्रति आदर भाव रखता था तथा अपने पुत्र जहाँगीर को उनका ही आशीर्वाद समझता था। 'फतेहपुर सीकरी' में अकबर ने शेख सलीम चिश्ती के मकबरे का निर्माण कराया।

चिश्ती सिलसिले की विशेषता

- चिश्ती सिलसिले के संत प्रवृत्ति से अत्यंत उदार थे। उन्होंने ऊँच-नीच, धर्म-जाति और जन्म के भेदभाव को त्यागकर मानव सेवा व प्रेम को प्रमुखता दी।
- चिश्ती सिलसिले से संबंधित संत सुल्तान या अमीरों से कोई वास्ता नहीं रखते थे। एक बार अलाउद्दीन खिलजी ने निजामुद्दीन औलिया

बाबर और हुमायूँ (1526-1556 ई.) Babur and Humayun (1526-1556 AD.)

मुगल वंश की स्थापना

तैमूर ने मध्य एशिया के क्षेत्र में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण चौदहवीं सदी में किया था, किंतु उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य विघटित हो गया और उसमें अनेक छोटी-छोटी शक्तियों का उदय हुआ। तैमूर वंशजों में बाबर भी एक था, जो मुगल साम्राज्य का संस्थापक बना। बाबर का पैतृक राज्य 'फरगना' था। मध्य एशिया के उज्बेक शासकों ने लंबे संघर्ष के बाद बाबर को फरगना से निकाल दिया। बाबर ने 1504 ई. में काबुल का राज्य जीत लिया और कुछ समय बाद कंधार और समरकंद की विजय में भी सफल हुआ, हालाँकि ये दोनों ही विजय क्षणिक सिद्ध हुई। तत्पश्चात् बाबर ने दक्षिण-पूर्व की ओर अर्थात् भारत की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया।

बाबर (1526-1530 ई.)

- भारत में मुगल सत्ता का संस्थापक बाबर था। बाबर का वास्तविक नाम 'जहीरुद्दीन मुहम्मद' था। तुर्की भाषा में बाबर का अर्थ 'बाघ' होता है। अतः जहीरुद्दीन मुहम्मद अपने पराक्रम एवं निर्भीकता के कारण 'बाबर' कहलाया तथा बाद में उसका यही नाम प्रचलित हो गया।
- बाबर के पिता तैमूर वंशज और माता मंगोल वंशज थी। इस प्रकार उसमें तुर्की एवं मंगोलों दोनों के रक्त का मिश्रण था।
- बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 ई. को फरगना के एक छोटे से राज्य में हुआ था, जो अब उज्बेकिस्तान में है।
- बाबर ने जिस नवीन वंश की नींव डाली, वह तुर्की नस्ल का 'चंगताई' वंश था। जिसका नाम चंगेज खाँ के द्वितीय पुत्र के नाम पर पड़ा, परंतु आमतौर पर उसे 'मुगल वंश' पुकारा गया है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के बाद 11 वर्ष की अल्पायु में 1494 ई. में फरगना की गद्दी पर बैठा।
- बाबर ने अपने फरगना के शासनकाल में 1501 ई. में समरकंद पर अधिकार किया, जो मात्र आठ महीने तक ही उसके कब्जे में रहा। 1504 ई. में काबुल विजय के उपरांत बाबर का काबुल और गजनी पर अधिकार हो गया। 1507 ई. में बाबर ने 'पादशाह' (बादशाह) की उपाधि धारण की। पादशाह की उपाधि धारण करने से पूर्व बाबर 'मिर्जा' की पैतृक उपाधि धारण करता था।

बाबर के भारत पर आक्रमण का कारण

- बाबर का भारत पर आक्रमण मध्य एशिया में शक्तिशाली उज्बेकों से बार-बार पराजय, शक्तिशाली सफवी तथा उस्मानी वंश के भय का प्रतिफल था।
- बाबर की भारत-विजय की आकांक्षा का एक कारण यह भी था कि काबुल से बहुत मामूली आमदनी होती थी, जिससे सेना की जरूरतें पूरी नहीं होती थी। इसीलिये धन की लालसा के कारण उसने भारत का रुख किया।
- बाबर के भारत पर आक्रमण का एक अन्य कारण भारत में अवसर की उपलब्धता भी था। बाबर के आक्रमण से पूर्व भारत परस्पर प्रतिद्वंद्विता रखने वाले अनेक राज्यों में विभक्त था। देश में कोई सार्वभौमिक सत्ता नहीं थी और प्रभुत्व के लिये संघर्ष चल रहा था। भारत किसी शत्रु का, जो कि अपने लिये साम्राज्य बनाने का साहस और महत्वाकांक्षा रखता हो संगठित रूप से सामना करने की स्थिति में नहीं था।

बाबर का भारत पर आक्रमण

- बाबर का भारत के विरुद्ध किया गया प्रथम अभियान 1518-1519 ई. में 'युसूफजाई' जाति के विरुद्ध था। इस अभियान में बाबर ने 'बाजौर' और 'भेरा/भीरा' को अपने अधिकार में किया।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा (बाबरनामा) में लिखा है कि इस किले (बाजौर) को जीतने में उसने बारूद एवं तोपों का प्रयोग किया था।
- 1519 ई. में बाबर ने खैबर दर्रे (पेशावर) को पार किया। किंतु बाबर जल्द ही पेशावर से वापस लौट गया।
- 1520 ई. में बाबर ने 'बाजौर और भेरा/भीरा' को पुनः जीता, साथ ही 'स्यालकोट' एवं 'सैय्यदपुर' को भी अपने अधिकार में कर लिया।
- 1524 ई. में बाबर के पेशावर अभियान के समय, बाबर को इब्राहिम लोदी व दौलत खाँ के मध्य मतभेद की खबर मिली, जिसके कारण दौलत खाँ (जो उस समय पंजाब का गवर्नर था) ने पुत्र दिलावर खाँ को बाबर के पास भारत पर आक्रमण करने के लिये संदेश भिजवाया। संभवतः इसी समय राणा सांगा ने भी बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिये निमंत्रण भेजा था।

पानीपत का प्रथम युद्ध (अप्रैल 1526 ई.)

- पानीपत युद्ध के समय इब्राहिम लोदी दिल्ली का सुल्तान था।

- 1555 ई. में अफगान सेना और मुगल सेना के बीच 'सरहिंद का युद्ध' हुआ। अफगान सेना का नेतृत्व सुल्तान सिकंदर शाह सूर एवं मुगल सेना का नेतृत्व बैरम खाँ ने किया। इस युद्ध में अफगानों की पराजय हुई।
- सरहिंद विजय के पश्चात् 1555 ई. में एक बार पुनः दिल्ली के तख्त पर हुमायूँ को बैठने का सौभाग्य मिला।

हुमायूँ की मृत्यु

- हुमायूँ को दूसरी बार बादशाह बनने के एक साल बाद जनवरी 1556 ई. में 'दीनपनाह' के पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।
- हुमायूँ की कब्र ईरानी संस्कृति से प्रभावित है, जिसका वास्तुकार

मिर्जा ग्यास बेग था। यह उसकी पत्नी हमीदा बानो बेगम की हुमायूँ को अमूल्य भेंट थी। यह मकबरा दिल्ली में स्थित है।

हुमायूँ का मूल्यांकन

- राज्याभिषेक से लेकर हुमायूँ अपनी मृत्यु के समय तक संघर्षों में ही अपना जीवन व्यतीत करता रहा। यही कारण है कि हुमायूँ की मृत्यु के बाद इतिहासकार लेनपूल ने कहा है कि "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए ही मर गया।"
- ऐसा माना जाता है कि हुमायूँ ज्योतिष में अत्यधिक विश्वास करता था, इसलिये उसने सप्ताह के सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाए। वह मुख्यतः रविवार को पीला रंग, शनिवार को काला रंग एवं सोमवार को सफेद रंग के कपड़े पहनता था।

शेरशाह सूरी (1540-1545 ई.) Shershah Suri (1540 - 1545 AD.)

प्रारंभिक जीवन

- शेरशाह सूरी या शेर खाँ, भारत में 'सूर' राजवंश का संस्थापक था। शेरशाह का जन्म 1472 ई. (इतिहासकार कानूनगो के अनुसार 1486 ई.) में नरनौल परगने में हसन खाँ सूर की अफगान पत्नी के गर्भ से हुआ था।
- शेरशाह सूरी के बचपन का नाम फरीद खाँ था और उसके पिता को सहसराम और खवासपुर की जागीरें प्राप्त थीं।
- शेरशाह के प्रशासनिक कौशल से प्रभावित होकर उसके पिता ने अपनी जागीर-प्रबंधन का कार्य उसे सौंप दिया था। लेकिन कुछ कारणों की वजह से वह इसे छोड़कर दौलत खाँ की सेवा में आगरा चला गया।
- 1522 ई. में वह दक्षिण बिहार के सूबेदार बहार खाँ लोहानी के यहाँ नियुक्त हुआ। यहीं पर शेरशाह द्वारा एक शेर को मार डालने के कारण बहार खाँ लोहानी ने उसे 'शेर खाँ' की उपाधि दी तथा अपने पुत्र जलाल खाँ का संरक्षक नियुक्त किया।
- 1528 ई. में चंदेरी के युद्ध में वह बाबर की सेना में शामिल हुआ एवं मुगलों के साथ लड़ा। 1529 ई. में घाघरा के युद्ध में वह महमूद लोदी के साथ हो लिया, किंतु लड़ने के बजाय बाबर को निष्क्रिय रहने का संदेश भिजवाया। इसी समय बाबर ने हुमायूँ को इससे सतर्क रहने की सलाह दी।
- 1539 में चौसा के युद्ध में मुगल सम्राट हुमायूँ का शेरशाह सूरी से आमना-सामना हुआ, जिसमें शेरशाह सूरी विजयी हुआ और उसने शाही उपाधि 'शेरशाह सुल्तान-ए-आदिल' धारण की।
- हुमायूँ द्वारा अपने खोए क्षेत्रों की पुनर्प्राप्ति के क्रम में दोनों का टकराव चलता रहा। 1540 में बिलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में दोनों का आमना-सामना हुआ। इस युद्ध में हुमायूँ को पुनः हार का सामना करना पड़ा। इसी के साथ शेरशाह ने मुगल साम्राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया।

- शेरशाह ने अपने शासन का विस्तार जारी रखा और कुछ ही समय में अपने राज्य का विस्तार पूर्व में बंगाल तथा पश्चिम में सिंध तक कर लिया।

राज्याभिषेक

बिलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में विजय प्राप्त करके 1540 ई. में शेरशाह का दिल्ली व आगरा पर अधिकार हो गया। 68 वर्ष की आयु में 1540 ई. में वह दिल्ली की गद्दी पर बैठा। इस प्रकार उसने 1540 ई. में उत्तर भारत में 'सूर वंश' अथवा 'द्वितीय अफगान साम्राज्य' की स्थापना की।

शेरशाह सूरी के राजनैतिक अभियान

- **गक्खरों से युद्ध-** 1541 ई. में शेरशाह का गक्खर जाति के लोगों से युद्ध हुआ, जिसमें शेरशाह उनकी शक्ति को खत्म तो न कर सका पर उनकी रोकथाम के लिए उसने पश्चिमोत्तर सीमा पर रोहतासगढ़ के किले का निर्माण करवाया। गक्खर लोग अपनी वीरता एवं साहस हेतु प्रसिद्ध थे एवं लूटपाट करते थे।
- **मालवा का अभियान-** शेरशाह ने 1542 ई. में मालवा पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया, क्योंकि उस समय मालवा कमजोर एवं बिखरा हुआ था।
- **रायसीन का अभियान-** 1543 ई. में शेरशाह ने रायसीन पर आक्रमण किया। माना जाता है कि शेरशाह ने इस अभियान में धोखे से राजपूत शासक पूरनमल को मार डाला। पूरनमल की मृत्यु के बाद राजपूत स्त्रियों ने जौहर कर लिया। रायसीन की यह घटना शेरशाह के चरित्र पर एक कलंक माना जाता है।
- **मारवाड़ का अभियान-** 1544 ई. में शेरशाह ने मारवाड़ के शासक मालदेव पर आक्रमण किया। मालदेव, जो 1532 ई. में गद्दी पर बैठा था, सारे पश्चिम और उत्तर-राजस्थान को अपने कब्जे में कर लिया था। मालदेव ने जैसलमेर के भट्टियों की मदद से अजमेर को भी

जहाँगीर (1605-1627 ई.) Jahangir (1605-1627 AD.)

प्रारंभिक जीवन व राज्याभिषेक

- जहाँगीर का जन्म अगस्त 1569 ई. में शेख सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से अकबर की पत्नी मरियम उज्जमानी से हुआ था, इसलिये इसका नाम सलीम रखा गया।
- अक्टूबर 1605 ई. में अकबर की मृत्यु के पश्चात् सलीम, 'नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी' की उपाधि से मुगल साम्राज्य का शासक बना।
- जहाँगीर का राज्यारोहण विवादास्पद ढंग से हुआ था। अकबर के दरबार के कुछ सामंत जहाँगीर की जगह पर उसके बड़े बेटे राजकुमार खुसरो को सम्राट बनाने के पक्ष में थे। उनमें राजा मानसिंह और मिर्जा अजीज कोका प्रमुख थे।
- मानसिंह और मिर्जा अजीज कोका के दल की संख्या कम होने के कारण शहजादा सलीम उत्तराधिकारी चुन लिया गया। अपनी मृत्यु के पूर्व स्वयं अकबर ने सलीम के सिर पर शाही ताज रखकर उसको राज्य का उत्तराधिकारी माना।

जहाँगीर के प्रारंभिक कार्य

- जहाँगीर ने सर्वप्रथम अपनी नीति की घोषणा प्रसिद्ध नियमों (दस्तूर-उल-अमल) में की, ये नियम निम्नलिखित थे-
 - ◆ करों (जकात, तमगा आदि) का निषेध;
 - ◆ आम रास्ते पर डकैती तथा चोरी के संबंध में नियम;
 - ◆ मृत व्यक्तियों की संपत्ति उसके उत्तराधिकारी के अभाव में सार्वजनिक निर्माण कार्य, यथा- भवनों, कुओं, तालाबों आदि के निर्माण पर खर्च किया जाए;
 - ◆ मदिरा तथा सभी प्रकार के मादक द्रव्यों की बिक्री का निषेध;
 - ◆ अपराधियों के घरों की कुर्की तथा उनके नाक और कान काटे जाने पर निषेध;
 - ◆ संपत्ति पर बलपूर्वक अधिकार करने का निषेध;
 - ◆ अस्पतालों का निर्माण तथा रोगियों की देखभाल के लिये वैद्यों की नियुक्ति;
 - ◆ सप्ताह में दो दिन गुरुवार (जहाँगीर के राज्याभिषेक का दिन) एवं रविवार (अकबर का जन्मदिन) को पशुहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध;
 - ◆ सड़कों के किनारे सराय, मस्जिद एवं कुओं का निर्माण;
 - ◆ मनसबों तथा जागीरों का सामान्य प्रमाणीकरण;
 - ◆ आइमा (मदद-ए-माश) भूमि का प्रमाणीकरण;
 - ◆ दुर्गों तथा प्रत्येक प्रकार के बंदीगृहों के सभी बंदियों को क्षमादान।
- जहाँगीर ने आगरा के किले की शाह बुर्ज के मध्य एक न्याय की जंजीर लगवाई ताकि दुःखी जनता अपनी शिकायतों को सम्राट के सम्मुख रख सके।

- इस प्रकार जहाँगीर ने अपनी आरंभिक समस्याओं (राज्याभिषेक के समय) को हल करते हुए शुरुआती कार्यकाल में ही प्रशासनिक सुधार किये, जिससे प्रजा का उसके प्रति स्नेह बना रहे। जहाँगीर को एक समृद्ध एवं विशाल साम्राज्य अपने पिता के द्वारा मिला हुआ था।

शहजादा खुसरो का विद्रोह (1606 ई.)

- जहाँगीर के गद्दी पर बैठने के पश्चात् शहजादा खुसरो (जिसको राजा मानसिंह और मिर्जा अजीज कोका का समर्थन प्राप्त था) ने विद्रोह कर दिया।
- जहाँगीर के राज्याभिषेक के समय खुसरो के विद्रोह को दबाते हुए उसे आगरा के किले में बंदी बनाकर रखा गया था। कालांतर में वह अपनी चतुराई के कारण आगरा के किले से भागने में सफल रहा। तत्पश्चात् अपने कुछ समर्थकों के साथ खुसरो ने पुनः विद्रोह कर दिया। सिख गुरु अर्जुन देव ने भी समर्थन किया।
- बादशाह जहाँगीर ने सिखों के पाँचवें गुरु अर्जुन देव को शहजादा खुसरो को समर्थन देने के कारण मौत के घाट उतार दिया। इसी वजह से सिखों और मुगलों के मध्य अत्यंत कड़वाहट पैदा हो गई।
- खुर्रम के साथ दक्षिण अभियान के समय खुसरो की हत्या कर दी गई। बाद में इसका शव इलाहाबाद में लाकर दफना दिया गया।

नूरजहाँ की राजनीतिक भूमिका

- नूरजहाँ, जहाँगीर की पत्नी थी। इन दोनों का विवाह 1611 ई. में हुआ था। विवाह के बाद उसे 'नूरमहल' की उपाधि प्राप्त हुई। बाद में यह उपाधि 'नूरजहाँ' (संसार की रोशनी) कर दी गई।
- नूरजहाँ के बचपन का नाम मेहरुनिसा था। उसका पिता ग्यास बेग पर्सिया का निवासी था। जहाँगीर ने ग्यास बेग को 'एत्मादुद्दौला' की उपाधि प्रदान की।
- जहाँगीर के शासनकाल में नूरजहाँ गुट का प्रभाव था जिसमें उसके (नूरजहाँ) पिता एत्मादुद्दौला, माता अस्मत बेगम, भाई आसफ ख़ाँ तथा शहजादा खुर्रम सम्मिलित थे।
- नूरजहाँ ने जहाँगीर के एक पुत्र शहरयार के साथ अपनी पुत्री लाडली बेगम (जो उसके पहले पति शेर अफगान की पुत्री थी) का विवाह किया तथा शहरयार को अपने गुट में खुर्रम की जगह प्रोत्साहित किया।
- नूरजहाँ, जहाँगीर के साथ झरोखा दर्शन देती थी। सिक्कों पर बादशाह के साथ उसका भी नाम अंकित होता था।
- माना जाता है कि शाही आदेशों पर बादशाह के साथ नूरजहाँ के भी हस्ताक्षर होते थे।

राजनैतिक अभियान

मेवाड़ अभियान (1605-1615 ई.)

- 1605 से 1615 ई. के मध्य मेवाड़ में निरंतर सैनिक अभियान कराए गए।

रचनाएँ

- सफीनत-उल-औलिया - सूफी संतों की जीवनी तथा उनके विचारों का संग्रह।
 - सकीनत-उल-औलिया - मियां मीर व 'मुल्लाशाह बदाकशी' का जीवन चरित।
 - मज्म-उल-बहरीन - अर्थ- दो समुद्रों का मिलन अर्थात् हिंदू और मुस्लिम धार्मिक दार्शनिक विचारों के समन्वय पर।
 - सिर्र-ए-अकबर - उपनिषदों का फारसी अनुवादी संग्रह
- इसके अतिरिक्त दारा की देखरेख में दो पवित्र हिंदू ग्रंथों 'योग वशिष्ठ' व 'भगवत गीता' का भी अनुवाद हुआ है।

जहाँआरा

- शाहजहाँ की विदुषी पुत्री जो उत्तराधिकार के युद्ध में दारा शिकोह की समर्थक थी।
- औरंगजेब द्वारा इसे गिरफ्तार भी करवाया गया।
- आजीवन अविवाहित।
- सूफी संत मुल्ला शाह पर 'साहिबिया' नामक पुस्तक लिखी।
- दुर्घटना में आग से जल गई थी।
- औरंगजेब ने इन्हें साम्राज्य की प्रथम महिला का ओहदा दिया।

औरंगजेब (1658-1707 ई.) Aurangzeb (1658-1707 AD.)**प्रारंभिक जीवन एवं राज्याभिषेक**

- औरंगजेब का जन्म 1618 ई. में उज्जैन के निकट 'दोहद' नामक स्थान पर मुमताज महल के गर्भ से हुआ था, लेकिन उसके बचपन का अधिकांश समय नूरजहाँ के पास बीता।
- औरंगजेब का विवाह फारस के राजघराने के शाहनवाज की पुत्री दिलरास बानो बेगम (राबिया बीबी) से हुआ। औरंगजेब की पुत्री का नाम मेहरुनिसा था।
- औरंगजेब को सर्वप्रथम युद्ध का अनुभव ओरछा के ज़ुलर सिंह के विरुद्ध हुआ। वह 1636 ई. से 1644 ई. एवं 1652 ई. से 1657 ई. तक दो बार दक्षिण का सूबेदार नियुक्त हुआ। इसके अतिरिक्त गुजरात, मुल्तान एवं सिंध का गवर्नर भी रहा।
- औरंगजेब ऐसा मुगल शासक था जिसने दो बार राज्याभिषेक करवाया।
- राज्याभिषेक के अवसर पर औरंगजेब ने 'अब्दुल मुजफ्फर मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर पादशाह गाज़ी' की उपाधि धारण की।

नोट: व्यक्तिगत चरित्रिक गुणों के कारण औरंगजेब को 'ज़िंदा पीर' के नाम से जाना जाता था।

- औरंगजेब ने जहाँआरा (औरंगजेब की बहन) को 'सहिबात-उज्ज-ज़मानी' की उपाधि प्रदान की।

राजनैतिक अभियान**महत्त्वपूर्ण विजय****दक्षिण विजय**

कारण- 1656-57 ई. की संधि का उल्लंघन किया जाना विशेषतः बीजापुर द्वारा 1 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष न देना।

- बीजापुर द्वारा शिवाजी की मदद और गोलकुंडा द्वारा मुगलों के विरुद्ध बीजापुर की मदद।
- दक्षिण की आर्थिक संपन्नता और इन राज्यों का शिया अनुयायी होना।

- दक्षिण में औरंगजेब के अभियान को दो भागों में बाँटा जा सकता है-
 - ◆ 1660-81 ई.- जिसमें वह विभिन्न सेनापतियों को भेजता है।
 - ◆ 1681 ई. के बाद उसने स्वयं नेतृत्व किया।
- दक्षिण अभियान में नेतृत्व का क्रम:
 - ◆ शाइस्ता ख़ाँ → जयसिंह → मुअज़्ज़म → बहादुर ख़ाँ → शाह आलम → स्वयं औरंगजेब

बीजापुर

- 1656 की संधि को पूर्ण न कर पाने के आरोप में जयसिंह के नेतृत्व में बीजापुर पर आक्रमण किया गया। इस समय तक जयसिंह ने शिवाजी के साथ पुरंदर की संधि (1665 ई.) के तहत यह आश्वासन ले लिया था कि शिवाजी मुगलों की सहायता करेगा।
- 1666 ई. तक जयसिंह का यह अभियान असफल हो गया क्योंकि गोलकुंडा व मराठों की मदद भी बीजापुर को मिलती रही। इस कारण औरंगजेब जयसिंह से नाखुश हो गया और उसे वापस बुलवा लिया।
- 1672-73 ई. में जब सिकंदर आदिलशाह शासक बना तो उसके समय दरबार दो गुटों में बँट गया, जिसमें एक गुट का नेतृत्व ख्वास ख़ाँ और दूसरे का बहलोल ख़ाँ कर रहा था।
- इस गुटबंदी ने वहाँ की राजनैतिक एकता को प्रभावित किया। अंततः 1686 ई. में औरंगजेब ने स्वयं नेतृत्व किया और बीजापुर को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- औरंगजेब से पहले बहादुर ख़ाँ, दिलेर ख़ाँ, शाहआलम (संभवतः इसने बीजापुर से समझौता कर लिया था) और शाहजादा आजम को भी भेजा गया था।

गोलकुंडा

- 1678 ई. तक यहाँ अब्दुल्ला कुतुबशाह का शासन था और वह किसी भी तरीके से अपने साम्राज्य को बचाने में सफल रहा। किंतु जब अबुल हसन शासक बना तो प्रशासन की वास्तविक जिम्मेदारी दो ब्राह्मण भाइयों मदन्ना और अखन्ना पर थी, जिनका शिवाजी से मित्रवत संबंध था।

- ◆ मोहम्मद वारिस - शाहजहाँ के शासन के 21-30 वर्ष तक का वर्णन।

शाहजहाँनामा

- यह पुस्तक उसके एक अधिकारी इनायत खाँ द्वारा लिखी गई।
- दूसरी 'शाहजहाँनामा' शादिक खाँ द्वारा लिखी गई।

चहार चमन

- इस पुस्तक की रचना चंद्रभान द्वारा की गई।
- इसमें शाहजहाँ द्वारा स्थापित व्यवस्थाओं व शासन-प्रणाली का उल्लेख है।

औरंगज़ेब

आलमगीरनामा (आलमगीरी)

- इसके लेखक मोहम्मद काज़िम शिराज़ी हैं।
- औरंगज़ेब के प्रारंभिक 10 वर्षों तक का विस्तृत ऐतिहासिक वर्णन क्योंकि इसके बाद औरंगज़ेब इतिहास लेखन को प्रतिबंधित कर देता है।
- मोहम्मद काज़िम को औरंगज़ेब का आधिकारिक इतिहासकार कहा जाता है। बाद में हातिम खाँ ने भी 'आलमगीरनामा' नाम से पुस्तक लिखी।

मासिर-ए-आलमगीरी

- इसके लेखक शाकी मुस्तद खाँ हैं।
- जदुनाथ सरकार ने इस पुस्तक को 'मुगल साम्राज्य का गजेटियर' कहा है।
- इसमें सतनामी विद्रोह का उल्लेख मिलता है।
- यह पुस्तक औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद लिखी गई।

मुन्तख़ब-उल-लुबाव

- इसके लेखक ख़फी खाँ हैं।
- इसमें औरंगज़ेब के शासनकाल का आलोचनात्मक विवरण दिया गया है।

- इसे ख़फी खाँ ने छुपकर गुप्त तरीके से लिखा था।
- इसमें औरंगज़ेब के शासनकाल में व्याप्त भ्रष्टाचार पर चोट की गई है।

फुतूहात-ए-आलमगीरी

- इसके लेखक ईश्वरदास नागर हैं।
- औरंगज़ेब के शासनकाल के 34वें साल तक का वर्णन।
- औरंगज़ेब व राजपूतों के बीच बदलते संबंधों का विवरण मिलता है।

फतवा-ए-आलमगीरी

- शेख निज़ाम की अध्यक्षता में 6 विद्वानों द्वारा रचित।
- इसमें इस्लामिक कानून व प्रशासनिक नियमों का उल्लेख है।
- इसे मुस्लिम विधि का सबसे बड़ा डाइजैस्ट (Digest) कहा जाता है।

खुलासत-उत-तवारीख़

- इसके लेखक सुजनराय भंडारी हैं।
- इसमें मुगलों की राजनैतिक, प्रशासनिक व भौगोलिक स्थितियों का वर्णन है।

नुस्ख-ए-दिलकुशा

- यह भीमसेन द्वारा रचित है।
- इसमें मुगल-मराठा संघर्ष का उल्लेख मिलता है तथा मुगलों की सेवा में दक्कन सामंतों की उपस्थिति को सामान्य बताया गया है।

नोट: पहले भीमसेन मुगलों की सेवा में थे, किंतु बाद में बुंदेलों की सेवा में चले गए।

वाक्यात-ए-आलमगीरी

- यह आकिल खाँ द्वारा रचित है।
- उत्तराधिकार के युद्ध या सिंहासन की लड़ाई का विस्तृत उल्लेख।

उत्तर मुगल काल (Post Mughal Period)

भूमिका

अकबर के शासनकाल से आरंभ हुआ मुगल साम्राज्य का उत्कर्ष औरंगज़ेब की मृत्यु के उपरांत पतन की ओर अग्रसर होने लगा। यह अयोग्य उत्तरवर्ती उत्तराधिकारी, कमजोर प्रशासनिक नीतियाँ, बदलते राजनैतिक परिदृश्यों का समय परिणाम था। इस दौरान लघु अंतराल पर शासकों का परिवर्तन होता रहा जिनके बारे में हम इस अध्याय में क्रमवार अध्ययन करेंगे।

- औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् उसके तीनों पुत्र-मुअज़्ज़म, मुहम्मद आजम तथा मुहम्मद कामबख्श में उत्तराधिकार के लिये युद्ध हुआ, जिसमें बहादुर शाह (मुअज़्ज़म) विजयी रहा।
- औरंगज़ेब की मृत्यु के समय मुअज़्ज़म काबुल, आजम गुजरात और कामबख्श बीजापुर का सूबेदार था।

- जून 1707 ई. में जाज़ऊ (आगरा व धौलपुर के मध्य) नामक स्थान पर हुए उत्तराधिकार के संघर्ष में मुअज़्ज़म की सेना ने आजम को पराजित कर मुगल सिंहासन पर अधिकार किया।
- 1707 ई. में मुअज़्ज़म उत्तराधिकार के युद्ध में सफल होने के बाद बहादुर शाह प्रथम की उपाधि धारण करके दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ। सत्ता प्राप्ति के बाद 1709 ई. में बहादुर शाह (मुअज़्ज़म) ने अपने तीसरे भाई कामबख्श को बीजापुर के निकट पराजित किया।

बहादुर शाह प्रथम (मुअज़्ज़म) (1707-1712 ई.)

- बहादुर शाह प्रथम एक योग्य एवं विद्वान व्यक्ति था। वह समझौते तथा मेल-मिलाप की नीति का अनुसरण करके शाही दरबार के अधिकांश गुटों का सहयोग प्राप्त करने में सफल रहा।

अभ्यास प्रश्न

- मध्यकालीन भारत के मुगल शासक वस्तुतः थे-
(a) फारसी (ईरानी) (b) अफगान
(c) चगताई तुर्क (d) मंगोल
UPUDA/LDA (Pre), 2010
- पानीपत का प्रथम युद्ध किसके बीच हुआ था?
(a) बाबर और राणा सांगा के बीच
(b) हेमू और अकबर के बीच
(c) हुमायूँ और शेर खाँ के बीच
(d) बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच
UPPSC (Mains), 2012, CGPSC (Pre), 2005; UPPSC (Pre), 1996
- निम्न में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(a) पानीपत का प्रथम युद्ध : 1526 ई.
(b) खानवा का युद्ध : 1527 ई.
(c) घाघरा का युद्ध : 1529 ई.
(d) चंदेरी का युद्ध : 1530 ई.
UPPSC (Pre), (Re-exam) 2015
- निम्नलिखित पर विचार कीजिये:
बाबर के भारत में आने के फलस्वरूप
1. उपमहाद्वीप में बारूद के उपयोग की शुरुआत हुई।
2. इस क्षेत्र की स्थापत्य कला में मेहराब और गुंबद बनने की शुरुआत हुई।
3. इस क्षेत्र में तैमूरी वंश स्थापित हुआ।
नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3
IAS (Pre), 2015
- 1527 ई. में 'खानवा के युद्ध' में बाबर ने मेवाड़ के किस राजा को हराया था?
(a) राणा प्रताप (b) मानसिंह
(c) सवाई उदय सिंह (d) राणा सांगा
UPPSC (Mains), 2004
- 'तुजुक-ए-बाबरी' किस भाषा में लिखा गया था?
(a) फारसी (b) अरबी
(c) तुर्की (d) उर्दू
56th to 59th BPSC (Pre), 2015
- हुमायूँ द्वारा लड़े गए चार प्रमुख युद्धों का तिथि अनुसार सही क्रम अंकित करें-
(a) चौसा, दोहरिया, कन्नौज, सरहिंद
(b) दोहरिया, कन्नौज, चौसा, सरहिंद
(c) सरहिंद, दोहरिया, चौसा, कन्नौज
(d) दोहरिया, चौसा, कन्नौज (बिलग्राम), सरहिंद
41st BPSC (Pre), 1996
- निम्नलिखित में से किसने अपने बादशाह पति के लिये मकबरे का निर्माण कराया था?
(a) शाह बेगम ने (b) हमीदा बानो बेगम
(c) मुमताज महल ने (d) नूरुनिसा बेगम ने
48th to 52nd BPSC (Pre), 2008
- हुमायूँ ने चुनाव दुर्ग पर प्रथम बार आक्रमण कब किया?
(a) 1532 ई. (b) 1531 ई.
(c) 1533 ई. (d) 1536 ई.
48th to 52nd BPSC (Pre), 2008
- निम्नलिखित युद्धों में से किस एक में बाबर ने 'जिहाद' की घोषणा की थी?
(a) पानीपत का युद्ध (b) खानवा का युद्ध
(c) घाघरा का युद्ध (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
UPPSC (Mains), 2009
- बाबर ने सर्वप्रथम 'पादशाह' की पदवी धारण की?
(a) फरगना में (b) काबुल में
(c) दिल्ली में (d) समरकंद में
UPPSC (Mains), 2015
- भारत के मुगल शासक बनने पर जहीरुद्दीन मोहम्मद ने _____ नाम रखा।
(a) बाबर (b) हुमायूँ
(c) जहाँगीर (d) बहादुरशाह
CHG/PS (Pre), 2003
- बाबर के साम्राज्य में सम्मिलित थे-
(1) काबुल का क्षेत्र
(2) पंजाब का क्षेत्र
(3) आधुनिक उत्तर प्रदेश का क्षेत्र
(4) आधुनिक राजस्थान का क्षेत्र
नीचे दिये गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए?
(a) 1 व 2 (b) 2 व 3
(c) 1, 2 व 3 (d) 2, 3 व 4
UKPSC (Pre), 2003
- नीचे दो कथन दिये गए हैं जिनमें से एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) कहा गया है-
कथन (A): बाबर ने 'बाबरनामा' तुर्की में लिखा।
कारण (R): तुर्की मुगल दरबार की राजभाषा थी।
ऊपर के दोनों वक्तव्यों के संदर्भ में बताइये कि निम्नलिखित में से कौन-सा सत्य है?
(a) A और R दोनों सही हैं और A की सही व्याख्या R करता है।
(b) A और R दोनों सही हैं और A की सही व्याख्या R नहीं करता है।
(c) A सही है, R गलत है।
(d) A गलत है, R सही है।
IAS (Pre), 2003
- शेरशाह सूरी के बचपन का नाम था?
(a) टीपू (b) शेर खाँ
(c) फरीद खाँ (d) इनमें से कोई नहीं

94. मुगलकाल में सेना का प्रधान निम्न में से कौन था?
 (a) शहना-ए-पील (b) मीर बख्शी
 (c) वज़ीर (d) सवाहेनिगार
UPPSC (Pre), 1992
95. मुगल प्रशासन में मुहत्तसिब था-
 (a) सेना अधिकारी
 (b) विदेश विभाग का मुख्य
 (c) लोक आचरण अधिकारी
 (d) पत्र भिन्न व्यवहार विभाग का अधिकारी
47th BPSC (Pre), 2005
96. मुगल प्रशासन के दौरान जिले को किस नाम से जाना जाता था?
 (a) अहर (b) विश्वास
 (c) सूबा (d) सरकार
Uttarkhand PSC (Pre), 2004
97. कथन (A) : मुगलकाल में मनसबदारी प्रथा विद्यमान थी।
 कारण (R) : मनसबदारों का चयन योग्यता के आधार पर होता था।
 (a) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की स्पष्ट व्याख्या करता है।
 (b) कथन और कारण दोनों सही हैं, परंतु कारण कथन की स्पष्ट व्याख्या नहीं करता है।
 (c) कथन सही है, परंतु कारण गलत है।
 (d) कथन गलत है, परंतु कारण सही है।
Chattisgarh PSC (Pre), 2008
98. मुगल मनसबदारी व्यवस्था के बारे में निम्न कथनों पर विचार कीजिये एवं नीचे दिये कूट से सही उत्तर चुनिये-
 1. 'जात' एवं 'सवार' पद प्रदान किये जाते थे।
 2. मनसबदार आनुवंशिक अधिकारी होते थे।
 3. मनसबदारों के तीन वर्ग थे।
 4. दीवान कार्यालय द्वारा इसको वेतन दिया जाता था।
 कूट:
 (a) चारों कथन सही हैं। (b) चारों कथन गलत हैं।
 (c) केवल 1, 2 और 3 सही हैं। (d) केवल 1 और 3 सही हैं।
UPUDA/LDA (SPL) (Mains), 2010
99. औरंगज़ेब की 1707 ई. में मृत्यु होने के बाद सत्ता किसने संभाली?
 (a) बहादुर शाह प्रथम ने (b) जहाँदार शाह ने
 (c) मुहम्मद शाह ने (d) अकबर द्वितीय ने
UPPSC (Mains), 2012
100. मुगल बादशाह, जो 'शाहे-बेखबर' के उपनाम से जाना जाता था?
 (a) बहादुर शाह प्रथम (b) बहादुर शाह द्वितीय
 (c) जहाँदार शाह (d) मुहम्मद शाह
101. मुगल सम्राट बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई.) ने किस सिख गुरु के सम्मान में उच्च मनसब प्रदान किये?
 (a) बंदाबहादुर (b) गुरु अर्जुनदेव
 (c) गुरु गोबिंद सिंह (d) गुरु तेगबहादुर
102. 'लंपट मूर्ख' किस मुगल बादशाह को कहा जाता था?
 (a) फर्रुखसियर (b) जहाँदार शाह
 (c) अहमदशाह (d) बहादुर शाह प्रथम

103. किस मुगल बादशाह ने राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि दी?
 (a) बहादुर शाह द्वितीय (b) शाह आलम द्वितीय
 (c) आलमगौर द्वितीय (d) अकबर द्वितीय
104. किस मुगल बादशाह को सैय्यद बंधुओं ने अपने खिलाफ़ षड्यंत्र रचने के कारण हत्या करा दी?
 (a) फर्रुखसियर (b) मुहम्मद शाह
 (c) जहाँदार शाह (d) अकबर द्वितीय
105. सैय्यद बंधु थे-
 (a) फारस और खुरासन के अमीर
 (b) हिंदुस्तानी मूल के विदेशी मुसलमान अमीर
 (c) मध्य एशियाई मूल के अमीर
 (d) मुगल राजदरबार के सिपाही
106. किस मुगल बादशाह के कार्यकाल में औरंगज़ेब द्वारा लगाए गए जज़िया कर को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया?
 (a) फर्रुखसियर (b) अहमदशाह
 (c) शाहआलम द्वितीय (d) अकबर द्वितीय
107. किस मुगल बादशाह के कार्यकाल में 'ईरान का नेपोलियन' के नाम से प्रसिद्ध 'नादिरशाह' ने भारत पर आक्रमण किया?
 (a) अहमदशाह (b) मुहम्मद शाह
 (c) फर्रुखसियर (d) जहाँदार शाह
UPPSC SPL (Mains), 2004
108. मुगल बादशाह मुहम्मद शाह (1719-1748) को किस उपनाम से जाना जाता था?
 (a) घृणित कायर (b) लंपट मूर्ख
 (c) रंगीला (d) शाहे-बेखबर

उत्तरमाला

1. (c)	2. (d)	3. (d)	4. (b)	5. (d)
6. (c)	7. (d)	8. (b)	9. (a)	10. (b)
11. (b)	12. (a)	13. (c)	14. (c)	15. (c)
16. (c)	17. (b)	18. (b)	19. (a)	20. (a)
21. (c)	22. (b)	23. (a)	24. (b)	25. (d)
26. (a)	27. (c)	28. (a)	29. (d)	30. (a)
31. (d)	32. (c)	33. (d)	34. (a)	35. (c)
36. (a)	37. (b)	38. (d)	39. (a)	40. (a)
41. (b)	42. (c)	43. (a)	44. (b)	45. (c)
46. (b)	47. (c)	48. (c)	49. (a)	50. (a)
51. (c)	52. (b)	53. (d)	54. (c)	55. (c)
56. (b)	57. (d)	58. (d)	59. (d)	60. (a)
61. (c)	62. (b)	63. (d)	64. (a)	65. (c)
66. (b)	67. (c)	68. (b)	69. (b)	70. (c)
71. (a)	72. (b)	73. (b)	74. (c)	75. (b)
76. (d)	77. (d)	78. (d)	79. (d)	80. (b)
81. (b)	82. (d)	83. (a)	84. (a)	85. (d)
86. (a)	87. (c)	88. (b)	89. (c)	90. (a)
91. (b)	92. (c)	93. (a)	94. (b)	95. (c)
96. (d)	97. (b)	98. (d)	99. (a)	100. (a)
101. (c)	102. (b)	103. (d)	104. (a)	105. (b)
106. (a)	107. (b)	108. (c)		

भूमिका

मुगल शासनकाल के उत्तरवर्ती दौर में वर्तमान महाराष्ट्र और उसके आसपास के क्षेत्र में मराठों के रूप में एक सशक्त क्षेत्रीय शक्ति का उदय हो रहा था। उनके इस उत्थान के पीछे तात्कालिक परिस्थितियाँ और कुछ अन्य कारक उत्तरदायी थे। ध्यातव्य है कि भक्ति आंदोलन के दौर में मराठा क्षेत्र की उल्लेखनीय भागीदारी हो रही थी। तत्कालीन मराठा संतों और कवियों ने जनसामान्य में हिंदू गौरव एवं एकता की भावना को जागृत किया। विषम भौगोलिक क्षेत्रों में जीवन व्यतीत करने से मराठे बचपन से ही बेहद जुझारू, साहसी और युद्ध कौशल में पारंगत हो जाते थे। सामाजिक दृष्टि से समाज में सदभाव व्याप्त था जो क्षेत्रीय एकता के निर्माण का कारण बना। औरंगजेब की हिंदू विरोधी नीतियों ने मराठों के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इन मराठा शासकों में छत्रपति शिवाजी का नाम अग्रणीय है जिनके दौर में मराठा शक्ति ने नई ऊँचाइयाँ हासिल कीं।

शिवाजी

- शिवाजी के पिता का नाम शाहजी भोंसले था। वे पहले अहमदनगर की सेवा में थे। किंतु, शाहजहाँ द्वारा 1633 ई. में अहमदनगर की विजय के पश्चात् बीजापुर की सेवा में चले गये और उन्होंने अपने अधीन आने वाली पूना की जागीर शिवाजी को सौंप दी।
- शिवाजी की माता का नाम जीजाबाई था तथा उनके संरक्षक दादोजी कोंडदेव थे।
- शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु रामदास थे। उनके विचारों के चलते शिवाजी के व्यक्तित्व को व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।
- दादोजी कोंडदेव की मृत्यु के बाद शिवाजी ने पूना की जागीर का कार्यभार स्वयं संभाला।
- 1646 ई. में शिवाजी ने पूना के पास स्थित तोरण के किले और 1648 ई. में पुरंदर के किले को जीता।
- 1656 ई. में मराठा सरदार चंद्रराव मोर से जावली का किला जीता।
- इस समय मुगलों का बीजापुर से संघर्ष चल रहा था। अतः शिवाजी ने मुगलों के साथ मैत्री करने का प्रयास किया, किंतु औरंगजेब ने इसमें रुचि नहीं दिखाई। बीजापुर से संधि करने के पश्चात् औरंगजेब ने बीजापुर को शिवाजी की अधीन आने वाले क्षेत्रों को वापस लेने की सलाह दी।
- बीजापुर शासक ने अपने सेनापति अफजल खाँ को शिवाजी को कैद करने या मार डालने के लिये भेजा। किंतु, शिवाजी ने चतुराई से उसकी हत्या कर दी और बीजापुर के कई अन्य क्षेत्रों को भी जीत लिया जैसे- 'पन्हाला का किला', 'कोल्हापुर' और 'उत्तरी कोंकण'।

- इसके पश्चात् औरंगजेब ने शिवाजी के अधीन आने वाले उन क्षेत्रों को वापस लेने का निश्चय किया जो अहमदनगर की संधि के तहत बीजापुर को दे दिये गए थे। इसके लिये मुगल गवर्नर शाइस्ता खाँ को भेजा गया। प्रारंभिक रूप से शाइस्ता खाँ ने पूना, कल्याण और चाकन इत्यादि के किले पर अधिकार कर लिया तथा शिवाजी को वहाँ से हटने के लिये विवश किया।
- शिवाजी ने शाइस्ता खाँ के शिविर पर छापामार हमला किया तथा शाइस्ता खाँ को घायल कर दिया।
- इसके पश्चात् औरंगजेब ने शाइस्ता खाँ को वापस बुला लिया और आमेर के जयसिंह को शिवाजी से निपटने का दायित्व सौंपा। शाइस्ता खाँ को बंगाल का गवर्नर बनाकर भेज दिया गया।
- जयसिंह ने शिवाजी से निपटने के लिये एक नई नीति तैयार की, जिसके तहत शिवाजी को चारों तरफ से घेरा जाना था। इसके लिये जयसिंह ने बीजापुर के साथ समझौता करने का प्रयास किया तथा बीजापुर ने अपनी सेना की एक टुकड़ी को जयसिंह की तरफ से भेजा।
- 1665 में शिवाजी को पुरंदर में घेर लिया गया।
- विवश होकर शिवाजी को 1665 में पुरंदर की संधि करनी पड़ी।

संधि के तहत प्रावधान

- ◆ शिवाजी को अपने 23 किले, जिनकी आय 4 लाख हूण प्रति वर्ष थी, मुगलों को सौंपने थे। इसके अतिरिक्त 12 किले, जिसकी वार्षिक आमदनी 1 लाख हूण थी, शिवाजी को अपने पास रखने थे।
- ◆ औरंगजेब द्वारा शिवाजी के पुत्र शंभाजी को मुगल दरबार में भेजा जाना था। उसे 5 हजार का मनसब प्रदान किया गया।
- ◆ इसके पश्चात् बीजापुर के विरुद्ध अभियान प्रारंभ हुआ, किंतु औरंगजेब का सही से समर्थन न मिल पाने की वजह से इस अभियान में विशेष सफलता नहीं प्राप्त हुई।
- ◆ इसके पश्चात् जयसिंह ने शिवाजी को व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिये आगरा भेजा, किंतु वहाँ औरंगजेब से विवाद हो गया और शिवाजी को कैद कर लिया गया।
- ◆ 1666 में वे औरंगजेब की कैद से फरार हो गए।
- ◆ इसके बाद शिवाजी ने पुनः मुगलों के किले जीतने का फैसला किया। 1670 में उन्होंने पुनः सूरत को लूटा।
- ◆ शिवाजी ने 1674 में अपना राज्याभिषेक रायगढ़ के किले में किया। राज्याभिषेक की प्रक्रिया काशी के पंडित गंगाभट्ट द्वारा संपन्न की गई। इस अवसर पर शिवाजी ने 'छत्रपति', 'हैदव

विजयनगर आने वाले प्रमुख विदेशी यात्री

यात्री	देश	शासक
निकोलो डी कॉण्टी	इटली	देवराय-I
अब्दुर्रज्जाक	फारस	देवराय-II
नूनिज	पुर्तगाल	अच्युतराय
डोमिंगो पायस	पुर्तगाल	कृष्णदेव राय
बारबोसा	पुर्तगाल	कृष्णदेव राय

विजयनगर साम्राज्य के प्रमुख पदाधिकारी

नायक	सैनिक भू-सामंत
दंडनायक	सैनिक विभाग का प्रमुख तथा सेनापति।
रायसम्	सचिव
कर्णिकम्	लेखाधिकारी
अमर-नायक	सैन्य मदद देने वाला सामंतों का वर्ग
आयंगर	वंशानुगत ग्रामीण अधिकारी
पलाइयागार	जमींदार
स्थानिक	मंदिरों की व्यवस्था करने वाला अधिकारी
मुद्राकर्ता	शाही मुद्रा रखने वाला अधिकारी
तलस	ग्राम का रखवाला (चौकीदार)
गौड	नगर प्रशासक
परुपत्यगार	राजा या गवर्नर का प्रतिनिधि

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

इमारतें	निर्माणकर्ता
कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, मेहरौली (दिल्ली)	कुतुबुद्दीन ऐबक
कुतुबमीनार, मेहरौली (दिल्ली)	कुतुबुद्दीन ऐबक व इल्तुतमिश
अढ़ाई दिन का झोंपड़ा (अजमेर)	कुतुबुद्दीन ऐबक
सुल्तानगढ़ी (दिल्ली)	इल्तुतमिश
जामी मस्जिद, बदायूँ	इल्तुतमिश
अलाई दरवाजा (दिल्ली)	अलाउद्दीन खिलजी
मोठ की मस्जिद (दिल्ली)	मियाँ भोइया (भुआँ)
कोटला फिरोजशाह	फिरोजशाह तुगलक

भक्ति आंदोलन के प्रमुख प्रवर्तक और उनके सिद्धांत

प्रवर्तक	सिद्धांत
शंकराचार्य	अद्वैतवाद
रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैतवाद
निंबार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद या भेदाभेदवाद
वल्लभाचार्य	शुद्धाद्वैतवाद
मध्वाचार्य	द्वैतवाद
रामानंद	रामभक्ति
नामदेव	विठोबा भक्ति (वारकरी संप्रदाय)
सूरदास	कृष्ण भक्ति
दादू	दादू पंथ
तुकाराम	वारकरी पंथ
चैतन्य	अचिंत्यभेदाभेद

भक्ति आंदोलन के संत एवं उनके संप्रदाय

संत	संप्रदाय
रामानुजाचार्य	श्री संप्रदाय
मध्वाचार्य	ब्रह्म संप्रदाय
वल्लभाचार्य	रुद्र संप्रदाय
गोविंद प्रभु	महानुभाव पंथ
निंबार्क	सनक संप्रदाय
स्वामी हरिदास	सखी संप्रदाय
चंडीदास	बाऊल संप्रदाय
नित्यानंद गोस्वामी	चैतन्य पंथ
दादूदयाल	दादू पंथ
रामानंद	रामवत संप्रदाय
निरंजन	निरंजनी संप्रदाय

मुगलकालीन प्रमुख अनुवादित पुस्तकें

अनुवादित पुस्तक	अनुवादित भाषा	अनुवादक-लेखक
महाभारत (रज्जनामा)	फारसी	बदायूँनी, नकीब खाँ, मुल्लाशेरी
रामायण	फारसी	बदायूँनी
राजतरंगिणी	फारसी	शाह मुहम्मद शाबादी

खंड-3

आधुनिक भारत



भूमिका

1707 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उत्तर मुगल काल में मुगल बादशाह मात्र प्रतीकात्मक रह गए और उनकी सत्ता की बागडोर ईरानी, तूरानी गुट और हिंदुस्तानी मूल के अमीर सैय्यद बंधुओं के पास आ गई। 18वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही वैभवशाली मुगल साम्राज्य का पतन तेजी से होने लगा और मुगल साम्राज्य के इन्हीं अवशेषों पर अनेक क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ, जिससे कई स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आए। इन स्वतंत्र राज्यों के विवरण निम्नलिखित हैं-

हैदराबाद

- हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य (आसफ़जाही वंश) का संस्थापक निज़ाम-उल-मुल्क (चिनकिलिच खाँ) था। निज़ाम-उल-मुल्क तूरानी गुट का था। उसने सैय्यद बंधुओं के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- निज़ाम-उल-मुल्क, मुगल बादशाह मुहम्मद शाह द्वारा दक्कन में नियुक्त सूबेदार था। वर्ष 1720 से 1722 के बीच दक्कन में उसने अपनी स्थिति सुदृढ़ की तथा 1724 में उसने स्वतंत्र राज्य हैदराबाद की स्थापना की।
- निज़ाम-उल-मुल्क ने केंद्रीय सरकार से अपनी स्वतंत्रता की खुलेआम घोषणा कभी नहीं की, मगर व्यवहार में स्वतंत्र शासक के रूप में कार्य किया।
- निज़ाम-उल-मुल्क ने हिंदुओं के प्रति उदार नीति अपनाई, उसने एक हिंदू पूनर्चंद को अपना दीवान नियुक्त किया।
- निज़ाम-उल-मुल्क ने दक्कन में जागीरदारी प्रथा को अपनाया तथा राजस्व व्यवस्था में निहित भ्रष्टाचार को समाप्त करने का प्रयास किया।
- 1724 में सकूरखेड़ा के युद्ध में निज़ाम-उल-मुल्क ने मुगल सूबेदार मुबारिज खाँ को पराजित किया। तत्पश्चात् मुगल बादशाह ने निज़ाम-उल-मुल्क को 'दक्कन का वायसराय' नियुक्त कर दिया और उसे आसफ़जाह की उपाधि प्रदान की।
- 1748 में निज़ाम-उल-मुल्क की मृत्यु के पश्चात् हैदराबाद आंतरिक संघर्ष तथा कर्नाटक के प्रश्न पर अंग्रेजों एवं फ्राँसीसियों की कूटनीति का शिकार बना।

कर्नाटक

- कर्नाटक, मुगल दक्कन का एक सूबा था। कर्नाटक के नायब सूबेदार को कर्नाटक का नवाब कहा जाता था।
- दिल्ली की सरकार से स्वतंत्र होकर सआदतउल्ला खाँ ने 'अर्काट' को अपनी राजधानी बनाया।
- सआदतउल्ला खाँ के बाद उत्तराधिकार के संघर्षों को लेकर कर्नाटक की स्थिति बिगड़ती गई। फलस्वरूप कर्नाटक के उत्तराधिकार का

प्रश्न अंग्रेजों और फ्राँसीसियों के मध्य राजनीतिक हस्तक्षेप का कारण बना।

- अंततः कर्नाटक के नवाब मुहम्मद अली और उनके उत्तराधिकारी पर ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलेजली ने षड्यंत्रात्मक पत्राचार का आरोप लगाकर राजगद्दी का अधिकार छीन लिया।

बंगाल

- स्वतंत्र बंगाल राज्य की नींव डालने का श्रेय मुर्शिद कुली खाँ को दिया जाता है। 1700 में मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा मुर्शिद कुली खाँ को बंगाल का दीवान नियुक्त किया गया था। इस समय बंगाल का सूबेदार अजीमुशान था, जो राजदरबार से संबंधित होने के कारण प्रायः दिल्ली में रहता था। अतः बंगाल की वास्तविक शक्ति मुर्शिद कुली खाँ के पास थी। मुगल सम्राट फर्रुखसियर ने मुर्शिद कुली खाँ को 1717 में बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया, जिसने आगे चलकर मुगल साम्राज्य की कमजोर स्थिति का फायदा उठाकर स्वतंत्र बंगाल राज्य की नींव रखी।
- मुर्शिद कुली खाँ के शासन के दौरान केवल तीन विद्रोह हुए। पहला विद्रोह सीताराम राय, उदय नारायण और गुलाम मुहम्मद ने किया, दूसरा शुजात खाँ ने तथा तीसरा विद्रोह नजात खाँ का था।
- मुर्शिद कुली खाँ ने बंगाल की राजधानी ढाका के स्थान पर 'मुर्शिदाबाद' को बनाया।
- मुर्शिद कुली खाँ ने राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार करते हुए राज्य की वित्तीय व्यवस्था में नए सिरे से प्रबंध किया। उसने अपने नए भू-राजस्व बंदोबस्त के जरिये जागीर भूमि के एक बड़े हिस्से को 'खालसा भूमि' (प्रत्यक्ष रूप से बादशाह के नियंत्रण में रहने वाली भूमि) में तब्दील कर दिया तथा ठेके पर भू-राजस्व वसूली की नई प्रणाली 'इजारेदारी व्यवस्था' की शुरुआत की।
- मुर्शिद कुली खाँ ने गरीब किसानों को कृषि विकास तथा भू-राजस्व देने में सक्षम बनाने हेतु 'तकावी ऋण' प्रदान किया।
- 1727 में मुर्शिद कुली खाँ की मृत्यु के पश्चात् उसका दामाद शुजाउद्दीन (1727-1739) बंगाल का नवाब बना। शुजाउद्दीन के बाद उसका बेटा सरफराज खाँ (1739) बंगाल का नवाब बना।
- 1740 में बिहार के नायब सूबेदार अलीवर्दी खाँ ने सरफराज खाँ को गिरिया (कुछ स्रोतों में घेरिया) के युद्ध में हराकर बंगाल के नवाब का पद हस्तगत कर लिया। इसने तत्कालीन मुगल सम्राट को 2 करोड़ रुपये नज़राना देकर अपने पद की स्वीकृति प्राप्त की।
- मराठों के हमलों से दबाव में आकर अलीवर्दी खाँ ने रघुजी से 1751 में उड़ीसा प्रांत का एक बड़ा भाग और वार्षिक चौथ के रूप में एक निश्चित धनराशि देकर मराठों से संधि की।

भूमिका

1707 में मुगल बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् मुगल साम्राज्य की पतनोन्मुखी परिस्थितियों का लाभ उठाकर कई अधीनस्थ राज्यों ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर तो लिया, किंतु भारत में ऐसा कोई शक्तिशाली राज्य नहीं था, जो भारत को एक सूत्र में बांध सके। इस कारण भारत में प्रारंभिक व्यापारिक एकाधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से यूरोपीय कंपनियों के बीच क्षेत्रीय राज्यों के सहयोग से एक चतुर्भुजी संघर्ष प्रारंभ हो गया। अंततः इस संघर्ष में अंग्रेजों को विजयश्री प्राप्त हुई। कालांतर में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय राज्यों को जीतकर, भारत में अपने उपनिवेश की स्थापना की।

भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन

- भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। यूरोप के साथ भारत के व्यापारिक संबंध बहुत पुराने (यूनानियों के समय से) थे। मध्यकाल में यूरोप और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ भारत का व्यापार अनेक मार्गों से चलता था। सवाल उठता है, आखिर ऐसी क्या परिस्थितियाँ बनीं कि यूरोपीयों को एशिया से व्यापार के लिये पुनः नए मार्गों की खोज करनी पड़ी?
- ध्यातव्य है कि जब वर्ष 1453 में उस्मानिया सल्तनत ने एशिया माइनर को जीत लिया और कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार कर लिया तो पूर्व और पश्चिम के बीच के पुराने व्यापारिक मार्ग तुर्कों के नियंत्रण में आ गए। इस तरह पूर्वी देशों और यूरोप के बीच पारंपरिक व्यापारिक मार्ग पर अंकुश लग गया। इस प्रकार उत्पन्न परिस्थितियों के कारण पश्चिमी यूरोपीय देशों के व्यापारी भारत और इंडोनेशिया के स्पाइस आइलैंड (मसाले के द्वीप) के लिये नए और अधिक सुरक्षित समुद्री मार्गों की तलाश करने लगे।
- प्रारंभ में यूरोपीयों की मंशा व्यापार में लगे अरबों और वेनिसवासियों के एकाधिकार को तोड़ना, तुर्कों की शत्रुता मोल लेने से बचना और पूर्व के साथ सीधे व्यापार-संबंध स्थापित करने की थी।
- यूरोपीयों के लिये अब नए समुद्री मार्ग खोजना उतना कठिन कार्य नहीं था, क्योंकि 15वीं-16वीं सदी तक यूरोप में पुनर्जागरण व प्रबोधन के परिणामस्वरूप नई भौगोलिक खोजों को केंद्रीय सत्ता द्वारा प्रोत्साहन दिया जा रहा था, साथ ही जहाज निर्माण और समुद्री यातायात में प्रगति तथा कुतुबनुमा (दिशा सूचक) का आविष्कार भी हो गया था। फलतः यूरोपीय लोग अब यह कार्य करने में अच्छी तरह समर्थ थे।
- नए समुद्री मार्गों की खोज का पहला कदम पुर्तगाल और स्पेन ने उठाया। इन देशों के नाविकों ने अपनी-अपनी सरकारों की सहायता से भौगोलिक खोजों का एक नया युग प्रारंभ किया।
- इसी पृष्ठभूमि में स्पेन का नाविक कोलंबस 1492 में भारत की खोज में निकला, परंतु वह भटक कर अमेरिका चला गया। इस प्रकार उसने अमेरिका की खोज की। 1498 में पुर्तगाल के नाविक वास्कोडिगामा ने एक नया समुद्री मार्ग खोज निकाला, जिससे वह उत्तमाशा अंतरीप (केप ऑफ गुड होप) का चक्कर काटते हुए भारत के कालीकट तट (केरल) पर पहुँचा। ध्यातव्य है कि उत्तमाशा अंतरीप की खोज बार्थोलोम्यू डियाज़ ने 1488 में की थी।

पुर्तगालियों का आगमन

- सर्वप्रथम 1498 में 'वास्कोडिगामा' नामक पुर्तगाली नाविक उत्तमाशा अंतरीप का चक्कर काटते हुए एक गुजराती व्यापारी अब्दुल मजीद की सहायता से भारत के 'कालीकट' बंदरगाह पर पहुँचा। जहाँ 'कालीकट' के हिंदू शासक (उपाधि-जमोरिन) ने उसका स्वागत किया।
- वास्कोडिगामा ने कालीकट के राजा से व्यापार का अधिकार प्राप्त किया, जिसका अरबी व्यापारियों ने विरोध किया। विरोध का कारण आर्थिक हित था। अंततः वास्कोडिगामा जिस मसालों को लेकर वापस स्वदेश लौटा, वह पूरी यात्रा की कीमत के 60 गुना दामों पर बिका। परिणामतः इस लाभकारी घटना ने पुर्तगाली व्यापारियों को भारत आने के लिये आकर्षित किया।
- ध्यातव्य है कि पूर्व के साथ व्यापार हेतु 'इस्तादो-द-इंडिया' नामक कंपनी की स्थापना की गई। वास्तव में पोप अलैक्जेंडर-VI द्वारा 1453 में ही पूर्वी सामुद्रिक व्यापार हेतु आज्ञापत्र दे दिया गया था।
- 1500 में 'पेड्रो अल्वारेज कैब्राल' के नेतृत्व में दो जहाजी बेड़े भारत आए।
- वास्कोडिगामा 1502 में दूसरी बार भारत आया। इसके बाद पुर्तगालियों का भारत में निरंतर आगमन प्रारंभ हुआ। पुर्तगालियों की पहली फैक्ट्री कालीकट में स्थापित हुई, जिसे जमोरिन द्वारा बाद में बंद करवा दिया गया।
- 1503 में काली मिर्च और मसालों के व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से पुर्तगालियों ने कोचीन के पास अपनी पहली व्यापारिक कोठी बनाई। इसके बाद कन्नूर (1505) में पुर्तगालियों ने अपनी दूसरी फैक्ट्री बनाई।

पुर्तगाली वायसराय

- 'फ्रांसिस्को-डी-अल्मीडा' (1505-1509) भारत में पहला पुर्तगाली वायसराय बनकर आया। उसने भारत पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिये मजबूत सामुद्रिक नीति का संचालन किया, जिसे 'ब्लू वाटर पॉलिसी' अथवा 'शांत जल की नीति' कहा जाता है।

भूमिका

भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से क्रमशः पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, डेनिस व फ्राँसीसी भारत आए। प्रारंभ में ये कंपनियाँ भारत के राजा-रजवाड़ों से किसी विशेष क्षेत्र में एक निश्चित कर अदा करके व्यापार हेतु एकाधिकार प्राप्त करती थी। समय के साथ इन व्यापारिक कंपनियों की महत्वाकांक्षाएँ बढ़ने लगीं। भारतीय राज्यों की आपसी ईर्ष्या एवं धन लोलुपता का लाभ उठाकर ये व्यापारिक कंपनियाँ अपना अधिकार क्षेत्र बढ़ाने लगीं। 18वीं शताब्दी तक एक ओर जहाँ मुगल शक्ति प्रायः क्षीण हो चुकी थी, वहीं दूसरी ओर अन्य छोटे-बड़े राज्यों में भी किसी केंद्रीय शक्ति का अभाव था। परिणामतः इस स्वर्णिम अवसर का अंग्रेजों ने भरपूर लाभ उठाया और अपने साम्राज्य का बीजारोपण किया।

प्रारंभ में यूरोपीय कंपनियों— पुर्तगाली, डच, ब्रिटिश एवं फ्राँसीसी के बीच व्यापारिक एकाधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से एक चतुर्भुजी संघर्ष हुआ। अंततः इस संघर्ष में अंग्रेजों को सफलता मिली। चतुर्भुजी संघर्ष में सफल होने के बाद अंग्रेजों ने भारतीय राज्यों क्रमशः बंगाल, मैसूर, मराठा एवं सिख आदि को जीतना प्रारंभ किया। 1857 तक अपनी रणनीति और युद्धों से अंग्रेजों ने संपूर्ण भारत पर अधिकार कर लिया।

यूरोपीय कंपनियों के बीच संघर्ष

आंग्ल-फ्राँसीसी संघर्ष

भारत आने वाली यूरोपीय कंपनियों में पुर्तगाली व डच कंपनियाँ जहाँ व्यापारिक व राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में पहले ही परास्त हो गईं वहीं डेनिस कंपनी 1745 तक अपनी सारी संपत्ति ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बेचकर भारत से चली गई। अब ब्रिटिश और फ्रेंच कंपनियाँ ही भारत में प्रमुख व्यापारिक कंपनियाँ थीं जिनके पास पर्याप्त व्यापारिक एकाधिकार थे। अतः दोनों कंपनियों में व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा और राजनीतिक संघर्ष होना स्वाभाविक था। इन प्रतिस्पर्द्धाओं के चलते दोनों कंपनियों के मध्य तीन युद्ध हुए, जिन्हें 'कर्नाटक युद्ध' के नाम से जाना जाता है। इस आंग्ल-फ्राँसीसी संघर्ष में अंततः अंग्रेजों को सफलता प्राप्त हुई।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-1748)

- इस युद्ध को 'सेंट टोमे' का युद्ध भी कहा जाता है।
- इस युद्ध की पृष्ठभूमि यूरोप में दोनों शक्तियों (फ्राँस एवं ब्रिटेन) के मध्य लड़े गए ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध से ही तैयार हो गई थी। यूरोप में फ्राँस और ब्रिटेन एक-दूसरे के विरोधी थे, जिसका प्रभाव भारत में भी पड़ा।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध प्रारंभ होने का तात्कालिक कारण एक अंग्रेज अधिकारी कैप्टन बार्नेट द्वारा कुछ फ्राँसीसी जहाजों पर कब्जा कर लेना था।

- डूप्ले ने मॉरीशस के फ्राँसीसी गवर्नर ला बूर्डोने की सहायता से मद्रास को जीत लिया। अंग्रेजों ने कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन से डूप्ले के विरुद्ध सहायता मांगी। हालाँकि हस्तक्षेप के बाद भी डूप्ले ने मद्रास घेरा नहीं छोड़ा।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध फ्राँसीसी सेना और कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के मध्य लड़ा गया। इस युद्ध में फ्राँसीसी विजयी रहे। यह किसी विदेशी सेना की पहली विजय मानी जाती है। इस विजय का मुख्य कारण फ्राँसीसियों का तोपखाना था।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध का अंत 1748 में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति के पश्चात् हुई 'एक्स-ला-शैपेल' की संधि (1748) से हुआ। इस संधि की शर्तों के अनुसार मद्रास अंग्रेजों को तथा अमेरिका में लुईवर्ग फ्राँसीसियों को वापस मिल गया। इस तरह, युद्ध के प्रथम दौर में दोनों दल बराबर रहे।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध का कोई तात्कालिक राजनीतिक प्रभाव भारत पर नहीं पड़ा। न तो इस युद्ध से फ्राँसीसियों को कोई लाभ हुआ और न ही अंग्रेजों को, परंतु इस युद्ध ने भारतीय राजाओं की कमजोरियों को उजागर कर दिया और यह स्पष्ट हो गया कि यूरोपीय प्रणाली से प्रशिक्षित और सुव्यवस्थित छोटी सेना भी भारतीय नरेशों की बड़ी सेना को परास्त कर सकती है।
- फ्राँसीसी सत्ता और शक्ति का प्रभुत्व दक्षिण भारत के राज्यों पर जम गया और भारतीय नरेश अपनी राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिये फ्राँसीसी सहायता प्राप्त करने को उत्सुक हो गए।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-1754)

- इस युद्ध की पृष्ठभूमि भारतीय परिस्थितियों ने तैयार की। हैदराबाद के संस्थापक (एक स्वतंत्र राज्य के रूप में) निजाम-उल-मुल्क की 1748 में मृत्यु के बाद उसके पुत्र नासिर जंग और पौत्र मुजफ्फरजंग में गद्दी के लिये संघर्ष छिड़ गया।
- कर्नाटक में भी ऐसी स्थिति तब बन गई जब मराठों ने 7 वर्ष तक कैद में रखने के बाद चंदा साहब को आजाद कर दिया। ऐसे में अनवरुद्दीन व चंदा साहब के बीच भी गद्दी के लिये संघर्ष छिड़ गया।
- फ्राँसीसियों ने चंदा साहब व मुजफ्फरजंग का समर्थन किया तो अंग्रेजों ने अनवरुद्दीन व नासिरजंग का।
- 1749 में अंबर के युद्ध में अनवरुद्दीन मारा गया तथा उसके बेटे मुहम्मद अली ने त्रिचनापल्ली में शरण ले ली।
- 1750 में हैदराबाद में नासिरजंग भी मारा गया और मुजफ्फरजंग नवाब बना। उसने प्रसन्न होकर फ्राँसीसी गवर्नर डूप्ले को मसुलीपट्टनम व पाण्डिचेरी का क्षेत्र प्रदान कर दिया और साथ ही डूप्ले को कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक के क्षेत्र का गवर्नर बनाया।

- रामनगर का युद्ध (नवंबर 1848), चिलियाँवाला का युद्ध (जनवरी 1849) द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध से संबंधित है।
- लॉर्ड डलहौजी के शासनकाल में चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने फरवरी 1849 में गुजरात के युद्ध में अंतिम रूप से सिख सेना को परास्त किया।
- गुजरात युद्ध जीतने के पश्चात् लॉर्ड डलहौजी ने मार्च 1849 में पंजाब को अंग्रेजी राज्य के अंतर्गत विलय कर लिया। महाराजा दलीप सिंह को अंग्रेजों ने लगभग 5 लाख रुपये की वार्षिक पेंशन पर शिक्षा के लिये इंग्लैंड भेज दिया। दलीप सिंह से कोहिनूर हीरा लेकर ब्रिटिश राजमुकुट में लगा दिया गया।

अन्य युद्ध तथा संधियाँ

आंग्ल-नेपाल युद्ध

- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने सर्वप्रथम नेपाल राज्य के निवासी गोरखाओं से युद्ध किया। सीमावर्ती क्षेत्र होने के नाते इस प्रदेश का सामरिक महत्त्व अत्यधिक था।
- 1816 में गोरखाओं से बातचीत के माध्यम से 'सुगौली की संधि' हुई। जिसके तहत-
 - ◆ अंग्रेजों को गढ़वाल व कुमाऊँ के किले तथा तराई का अधिकांश भाग प्राप्त हुआ।
 - ◆ नेपाल ने सिक्किम राज्य से अपने समस्त अधिकार वापस ले लिये।
 - ◆ नेपाल की राजधानी काठमांडू में अंग्रेज रेजिडेंट तैनात की गई।

आंग्ल-बर्मा युद्ध

- पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्र बर्मा को तीन युद्ध व संधियों के पश्चात् ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।

- ◆ लॉर्ड एमहर्स्ट ने मणिपुर व आसाम में उनके प्रवेश को लेकर युद्ध (1824) किया। अंततः 1826 में 'यान्द्रबू की संधि' की गई।
- ◆ 1852 में डलहौजी ने इमारती लकड़ियों व बर्मा के जंगलों पर आधिपत्य की इच्छा से युद्ध किया और लोअर बर्मा (पेगू) के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।
- ◆ 1885 में डफरिन के समय में आंग्ल-बर्मा का तीसरा युद्ध लड़ा गया, तत्पश्चात् बर्मा का भारत में विलय कर लिया गया।

आंग्ल-अफगान युद्ध

- 1839-42 में गवर्नर जनरल लॉर्ड ऑकलैंड के समय में पहला युद्ध लड़ा गया।
- शाहशुजा को दोस्त मुहम्मद की जगह वहाँ का शासक बनाने के लिये त्रिपक्षीय संधि में रणजीत सिंह भी शामिल हुए। जॉन कीन के नेतृत्व में बोलन दर्रे से अंग्रेजी सेना भेजी गई और काबुल पर अधिकार प्राप्त कर लिया गया। 1840 में दोस्त मुहम्मद के आत्मसमर्पण पर शाहशुजा को शासक घोषित कर दिया गया।
- 1842-1878 अफगानिस्तान के प्रति अहस्तक्षेप की नीति को अपनाया गया। 1878-80 में लिटन ने अग्रगामी नीति को अपनाते हुए दूसरा आंग्ल-अफगान युद्ध छेड़ दिया। कुछ विजयों के उपरान्त वहाँ ब्रिटिश रेजिडेंटों की नियुक्ति की गई, किंतु अनियंत्रित स्थिति को देखते हुए बाद में अफगानिस्तान को 'बफर स्टेट' के रूप में स्वीकारा गया।

सिंध अभियान (1843)

- एलनबरो के शासनकाल में 1843 में सिंध का अंग्रेजी राज्य में विलय किया गया।

अभ्यास प्रश्न

1. सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यंत्रकारियों में निम्नलिखित में से कौन-कौन शामिल था?

1. रायदुर्लभ
2. अमीचंद
3. जगतसेठ
4. यार लतीफ

कूट:

- (a) केवल 2 व 3
- (b) केवल 1, 2 व 3
- (c) केवल 1, 2 व 4
- (d) उपर्युक्त सभी।

45th BPSC (Pre), 2001

2. निम्नलिखित में से प्रथम कर्नाटक युद्ध का कौन-सा तात्कालिक कारण था?

- (a) अंग्रेजों और फ्राँसीसियों के बीच प्रतिद्वंद्विता
- (b) ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकारी युद्ध
- (c) कर्नाटक का उत्तराधिकारी युद्ध
- (d) अंग्रेजों द्वारा कुछ फ्राँसीसी जहाजों पर कब्जा करना।

44th BPSC (Pre), 2000

3. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:

सूची-I

- A. प्रथम कर्नाटक युद्ध
- B. तृतीय कर्नाटक युद्ध
- C. द्वितीय कर्नाटक युद्ध
- D. प्रथम मैसूर युद्ध

सूची-II

1. पेरिस की संधि से अंत
2. ब्रिटिश की हार
3. अनिर्णायक युद्ध
3. एक्स-ला-शैपेल की संधि से अंत

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	3	4	2
(b)	2	4	1	3
(c)	4	1	3	2
(d)	3	1	4	2

UPPSC (Pre), 2016

4. निम्न में से किसने भारत में अंग्रेजों का सर्वाधिक विरोध किया?

- (a) मराठा
- (b) मुगल
- (c) राजपूत
- (d) सिख

UPPSC (Pre), 1993

भूमिका

1600 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी जब भारत आई, वह पूर्ण रूप से एक व्यापारिक कंपनी थी। किंतु कालांतर में भारत की कमजोर राजनीतिक स्थिति और व्याप्त अराजकता का लाभ उठाते हुए कंपनी ने सशस्त्र व्यापार नीति का अनुसरण किया। 1764 (बक्सर का युद्ध) तक अंग्रेज अपने अधिकांश यूरोपीय तथा बंगाल जैसे प्रमुख देशों प्रतिद्वंद्वियों का उन्मूलन कर चुके थे। अतः भारत अब ब्रिटिश विस्तार के लिये एक मुक्त क्षेत्र था। अंग्रेजों ने अपनी भारत विजय के दौरान कुछ महत्वपूर्ण सबक सीखे, जिनका ब्रिटिश शक्ति के विस्तार में भी अनुसरण किया। अंग्रेजों का विश्वास था कि भारत में एक ठोस राष्ट्रवादी विचारधारा के अभाव में वे भारतीय शासकों के आपसी झगड़ों का फायदा उठाकर अपनी राजनीतिक आकांक्षाओं को आसानी से पूर्ण कर सकते हैं। इसी नीति का अनुसरण करते हुए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में क्षेत्रीय विस्तार किया।

ब्रिटिश शक्ति के विस्तार में निहित कारण

- भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना चरणबद्ध रूप से हुई। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के लिये मुख्यतः पाँच व्यक्ति (लॉर्ड क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स, कॉर्नवालिस, वेल्लेजली और डलहौजी) प्रमुख रूप से उत्तरदायी थे।
- इन्होंने तत्कालीन भारतीय परिस्थितियों का लाभ उठाकर (केंद्रीय सत्ता का अभाव, राजनीतिक अस्थिरता, अदूरदर्शिता) ब्रिटिश शक्ति के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- अंग्रेज गवर्नरों द्वारा भारत में क्षेत्र विस्तार के संदर्भ में कहा जाता है कि “क्लाइव ने भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव डाली, वारेन हेस्टिंग्स ने उस नींव को मजबूत किया, कॉर्नवालिस ने इमारत खड़ी करनी प्रारंभ की, वेल्लेजली ने उस इमारत को पूरा किया और बाद के गवर्नर जनरलों ने उसे अंतिम शक्ति प्रदान की।”
- अंग्रेजों ने भारतीय राजाओं के साथ विजय अथवा कूटनीति के उद्देश्य से कई छोटे-बड़े युद्ध किये और 1857 तक अपनी कूटनीति, षड्यंत्रों, रणनीति और युद्धों से संपूर्ण भारत पर अधिकार कर लिया।
- सामाजिक-धार्मिक दृष्टि से भारत विभिन्न वर्गों, जातियों और संप्रदायों में विभक्त था, जिसके कारण उनकी वफ़ादारी केवल अपनी जाति एवं क्षेत्र तक सीमित रही। फलतः ब्रिटिश के विरुद्ध वे एकजुट होकर बड़ा प्रतिरोध नहीं कर सके।
- ब्रिटिश काल में अंग्रेजों ने रणनीतिक युद्धों के साथ-साथ भारत पर प्रभुत्व बनाये रखने हेतु तीन प्रमुख नीतियाँ अपनाई, जो निम्न हैं—
 1. लॉर्ड क्लाइव की द्वैध शासन की नीति
 2. वेल्लेजली की सहायक संधि की नीति
 3. लॉर्ड डलहौजी की व्यपगत सिद्धांत की नीति

लॉर्ड क्लाइव का द्वैध शासन

- प्लासी के युद्ध (23 जून, 1757) का परिणाम बंगाल विजय के रूप में सामने आया। बंगाल, मीर जाफ़र की महत्वाकांक्षा के कारण अराजकता की ओर अग्रसर हुआ, वहीं लॉर्ड क्लाइव ने आंतरिक संघर्ष का लाभ उठाकर कूटनीतिक षड्यंत्रों से बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को युद्ध में परास्त किया।
- बक्सर के युद्ध (22 अक्टूबर, 1764) के पश्चात् हुई इलाहाबाद की संधि (12 अगस्त, 1765) से अंग्रेजों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हो गई। कालांतर में बंगाल के नवाब नज़मुद्दौला से अंग्रेजों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी और निज़ामत (सूबेदारी) भी प्राप्त हो गई।
- ध्यातव्य हो, दीवान और सूबेदार मुगलकालीन प्रांतीय प्रशासन के स्तर पर दो प्रमुख अधिकारी होते थे। दीवानी से अभिप्राय भूमिकर वसूल करना और भूमि कर संबंधी दीवानी मुकदमों का निर्णय करना होता था, जबकि सूबेदारी/निज़ामत का अभिप्राय आंतरिक सुरक्षा, शांति तथा सुव्यवस्था, न्याय-व्यवस्था और फौजदारी मुकदमों का निर्णय करना आदि होता था।
- कंपनी दीवानी और निज़ामत के कार्यों का निष्पादन अपने भारतीय अधिकारियों के माध्यम से करती थी। दीवानी कार्य के लिये कंपनी ने बंगाल में रज़ा ख़ाँ, बिहार में शिताबराय तथा उड़ीसा में रायदुर्लभ को दीवान नियुक्त किया।
- उपरोक्त व्यवस्था के अतिरिक्त बाकी व्यवस्थाएँ पूर्ववत् ही बनी रहीं। नवाब के अधिकारी और कर्मचारी प्रशासन में दीवानी कार्यों को छोड़कर शेष समस्त कार्य पूर्ववत् ही संपन्न करते रहे। इस प्रकार बंगाल में एक ही समय में दो प्रकार की शासन व्यवस्थाएँ चलने लगीं। यह एक ऐसी व्यवस्था थी, जिसमें अधिकार एवं उत्तरदायित्व दोनों को अलग कर दिया गया।
- इस प्रकार, ब्रिटिश कंपनी, बंगाल की वास्तविक शासक थी। हालाँकि बंगाल का शासक नवाब ही था और प्रशासन का उत्तरदायित्व भी उसी के हाथों में था, किंतु नवाब के समस्त अधिकार छीन लिये गए। वह अब स्वतंत्र शासक नहीं था, अपितु वह कंपनी की अनुकंपा और वार्षिक अनुदान पर निर्भर हो गया। बंगाल में लॉर्ड क्लाइव द्वारा लागू इस व्यवस्था को ही ‘द्वैध शासन व्यवस्था’ कहते हैं।

द्वैध शासन स्थापित करने के कारण

- बक्सर युद्ध (1764) की विजय के पश्चात् कंपनी यदि सीधे ही सत्ता हाथ में ले लेती तो कंपनी का वास्तविक साम्राज्यवादी चेहरा जनता के समक्ष आ जाता, जिससे स्थानीय विद्रोह भड़कने तथा अन्य विदेशी प्रतिद्वंद्वियों के एकजुट होने का अंदेशा था।

भूमिका

भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश नीतियों का प्रभाव मुगल शासक औरंगजेब की मृत्यु के बाद ही सहज परिलक्षित होने लगा था। उत्तरवर्ती मुगल शासकों द्वारा तत्कालीन यूरोपीय व्यापारियों को दी गई उदारतापूर्ण रियायतों ने स्वदेशी व्यापारियों के हितों को नुकसान पहुँचाया। अंग्रेजों ने प्लासी (1757) और बक्सर (1764) युद्ध के बाद भारतीय व्यापार पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया। फलतः भारतीय अर्थव्यवस्था अधिशेष तथा आत्मनिर्भरता मूलक अर्थव्यवस्था से औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई।

अंग्रेजों की औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का उद्देश्य अपने उद्योगों के लिये भारत से कच्चा माल प्राप्त कर अपने उत्पादों को भारतीय बाजार में बेचना था। अंग्रेजों ने भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधित सभी पक्षों का केवल अपने हितों की पूर्ति हेतु प्रयोग किया। परिणामस्वरूप, भारत एक निर्यातक देश से आयातक देश बन गया।

भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण

उपनिवेशवाद एक विस्तारवादी अवधारणा है, जिसके तहत किसी देश का आर्थिक शोषण एवं उत्पीड़न होता है। इसके तहत एक राष्ट्र द्वारा किसी अन्य राष्ट्र की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना पर नियंत्रण किया जाता है। नियंत्रण करने वाला देश 'मातृदेश' कहलाता है। इस तरह, उपनिवेश के अंदर बनाई गई नीतियों का मुख्य लक्ष्य मातृदेश (औपनिवेशिक शक्ति) को लाभ पहुँचाना होता है। इस दृष्टि से ब्रिटिश ने अपने भारतीय उपनिवेश से आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिये समय-समय पर विभिन्न नीतियाँ बनाईं। भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद को तीन चरणों में विभक्त किया जा सकता है।

उपनिवेशवाद का प्रथम चरण : वाणिज्यिक

पूँजीवाद का चरण (1757-1813)

- 1757 में 'प्लासी युद्ध' के बाद इंग्लैंड की 'ईस्ट इंडिया कंपनी' ने बंगाल पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया। यहीं से भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की शुरुआत मानी जाती है।
- उपनिवेशवाद के प्रथम चरण में ब्रिटिश कंपनी का पूरा ध्यान आर्थिक लूट पर ही केंद्रित रहा। फलतः इस चरण में व्यापारिक एकाधिकार के लिये इन्हें पुर्तगाली, डच और फ्राँसीसी कंपनियों से कई युद्ध लड़ने पड़े। इस चरण में ब्रिटिशों के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे-

- ◆ भारत के व्यापार पर एकाधिकार करना।
- ◆ राजनीतिक प्रभाव स्थापित कर राजस्व प्राप्त करना।
- ◆ कम-से-कम मूल्यों पर वस्तुओं को खरीद कर यूरोप में उन्हें अधिक-से-अधिक मूल्यों पर बेचना।

- अपने यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों को हरसंभव तरीके से बाहर निकालना।
- पूँजी निवेश के माध्यम से लाभ कमाना (यहाँ पूँजी निवेश से तात्पर्य है कि बंगाल से प्राप्त राजस्व से कंपनी द्वारा भारतीय वस्तुओं की खरीद कर उसको यूरोप में निर्यात कर मुनाफा कमाना।) वस्तुतः इसके माध्यम से अब भारतीय वस्तुओं को खरीदने के लिये इंग्लैंड से धन लाने की आवश्यकता नहीं रही।
- भारतीय प्रशासन, परंपरागत न्यायिक कानूनों, यातायात, संचार तथा औद्योगिक व्यवस्था में विशेष मौलिक परिवर्तन किये बगैर पूँजी प्राप्त करना।
- कंपनी ने आर्थिक कोष बढ़ाने के लिये विजित क्षेत्रों की स्थानीय जनता पर कर लगाए। प्लासी के युद्ध के बाद जीते गए क्षेत्रों (बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि) की सरकारी आय पर कंपनी का पूरा नियंत्रण स्थापित हो गया।
- ब्रिटिश की आर्थिक नीति से उद्योग-धंधों का ह्रास हुआ। परिणामतः अब राष्ट्रीय धन का एकमात्र स्रोत कृषि रह गया और अधिकतर जनसंख्या कृषि पर निर्भर रहने लगी।
- किसानों से वसूली गई राशि (लगान के रूप में) अंग्रेजों द्वारा वस्तुओं और कीमती धातुओं के रूप में इंग्लैंड और यूरोप को निर्यात कर दी जाती थी। भारत की लूट इंग्लैंड में पूँजी संचय का अप्रत्यक्ष स्रोत थी। इस प्रकार, उपनिवेशवाद के प्रथम चरण में कंपनी का एकमात्र उद्देश्य किसी तरह यहाँ से धन को लूटना था। प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार पर्सिवल स्पीयर ने टिप्पणी की, "अब बंगाल में खुला तथा बेशर्म लूट का काल आरंभ हुआ।" 1765 से 1772 के काल को प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार के.एम. पणिकर ने 'डाकू राज्य' कहा है।

उपनिवेशवाद का द्वितीय चरण : औद्योगिक पूँजीवाद (1813-1858)

- 1813 में भारत के व्यापार से कंपनी का एकाधिकार समाप्त हो गया। तत्पश्चात् औद्योगिक पूँजीवाद द्वारा भारत के शोषण का नया रूप सामने आया। इस चरण में इंग्लैंड में हुई औद्योगिक क्रांति को ध्यान में रखकर नीतियाँ बनाई गईं। वस्तुतः इंग्लैंड में बड़े पैमाने पर उद्योगों की स्थापना हुई।
- विदित है कि 1765 से 1785 के बीच अनेक वैज्ञानिक आविष्कार हुए, जैसे- कताई की मशीन, स्टीम इंजन, पावरलूम, वाटरफ्रेम आदि। उद्योगों की स्थापना होने से जहाँ एक तरफ कच्चे माल एवं खाद्यान्न की आवश्यकता महसूस हुई, वहीं दूसरी तरफ कारखाना निर्मित उत्पादकों की बिक्री के लिये एक बड़े बाजार की आवश्यकता भी पड़ी। परिणामस्वरूप इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये ब्रिटिश ने भारत में नई नीतियाँ लागू कीं।

9. दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रतिपादित अपवाह सिद्धांत (Drain Theory) की सही परिभाषा नीचे के किस कथन में आती है?
- देश के संसाधनों का उपयोग ब्रिटेन के हित में किया जा रहा था।
 - भारत की राष्ट्रीय संपदा का एक भाग अथवा कुल वार्षिक उत्पाद ब्रिटेन को निर्यात कर दिया जाता था, जिसके लिये भारत को कोई वास्तविक प्रतिफल नहीं मिलता था।
 - साम्राज्यवादी शक्ति के संरक्षण में ब्रिटिश उद्योगपतियों को भारत में निवेश के अवसर दिये जाते थे।
 - भारत में ब्रिटिश समान का आयात किया जाता था और देश को आर्थिक रूप से कमजोर, गरीब बनाया जा रहा था।

IAS (Pre), 1993; UPPSC (Mains), 2004

10. 'पॉवर्टी एंड द अनब्रिटिश रूल इन इंडिया' नामक पुस्तक किसने लिखी?
- अमर्त्य कुमार सेन
 - रमेशचंद्र दत्त
 - गोपाल कृष्ण गोखले
 - दादाभाई नौरोजी

UPPSC (Mains), 2004

11. निम्नलिखित में से कौन, भारत में उपनिवेशवाद का/के आर्थिक आलोचक था/थे?
- दादाभाई नौरोजी
 - जी. सुब्रमण्यम अय्यर
 - आर.सी. दत्त

कूट:

- केवल 1
- केवल 1 और 2
- केवल 2 और 3
- 1, 2 और 3

IAS (Pre), 2015

12. रैय्यतबाड़ी बंदोबस्त के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
- किसानों द्वारा लगान सीधे सरकार को दिया जाता था।
 - सरकार रैय्यत को पट्टे पर देती थी।
 - कर लगाने के पूर्व भूमि का सर्वेक्षण और मूल्य निर्धारण किया जाता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

- केवल 1
- केवल 1 और 2

- 1, 2 और 3
- इनमें से कोई नहीं

IAS (Pre), 2012

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

दादाभाई नौरोजी की भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को सर्वाधिक प्रभावी देन थी कि-

- उन्होंने इस बात को अभिव्यक्त किया कि ब्रिटेन, भारत का आर्थिक शोषण कर रहा है।
- उन्होंने प्राचीन भारतीय ग्रंथों की व्याख्या की और भारतीयों में आत्मविश्वास जगाया।
- उन्होंने सभी सामाजिक बुराइयों के निराकरण की आवश्यकता पर सर्वोपरि जोर दिया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

- केवल 1
- केवल 2 और 3
- केवल 1 और 3
- 1, 2 और 3

IAS (Pre), 2012

14. 1793 में लॉर्ड कॉर्नवालिस की भू-व्यवस्था प्रणाली लागू होने के बाद कानूनी विवादों की प्रवृत्ति में बढ़ोतरी देखी गई थी। निम्नलिखित प्रावधानों में से किस एक को सामान्यतया इसके कारक के रूप में जोड़ कर देखा जाता है?

- रैय्यत की तुलना में ज़मींदार की स्थिति को अधिक सशक्त बनाना।
- ईस्ट इंडिया कंपनी को ज़मींदारों का अधिपति बनाना।
- न्यायिक पद्धति को अधिक कार्यकुशल बनाना।
- उपर्युक्त (a), (b) व (c) कथनों में से कोई भी सही नहीं है।

IAS (Pre), 2011

उत्तरमाला

- | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (c) | 2. (b) | 3. (a) | 4. (d) | 5. (c) |
| 6. (c) | 7. (d) | 8. (d) | 9. (b) | 10. (d) |
| 11. (d) | 12. (c) | 13. (a) | 14. (d) | |

भूमिका

1757 में 'प्लासी युद्ध' के बाद अंग्रेजों ने भारत में अपने उपनिवेश की शुरुआत की। ब्रिटिश उपनिवेश का प्रारंभिक उद्देश्य अधिकतम आर्थिक व व्यापारिक लाभ कमाना था जो कालांतर में भारत को कच्चे माल का निर्यातक और तैयार माल के आयातक बनाने तक केंद्रित हो गया। वहीं जहाँ एक तरफ भारत का तेजी से विऔद्योगीकरण हुआ तथा भारतीय समुदाय की कृषि पर निर्भरता अब पहले से और अधिक बढ़ गई। दूसरी तरफ भारी-भरकम कर, जमींदारों के अत्याचार व अंग्रेजों की भू-नीतियों के कारण किसान समुदाय भी निम्नतम स्थिति में पहुँच गया। कच्चे माल के निर्यात को बढ़ावा देने के लिये कृषि के वाणिज्यीकरण पर बल दिया गया जिसमें नील, कपास, अफीम, चाय, जूट, कॉफी आदि के उत्पादन हेतु कृषकों को मजबूर किया गया।

कृषि के वाणिज्यीकरण से खाद्यान्न में कमी आई जिससे अकाल की बारंबारता बढ़ने लगी। परिणामस्वरूप देश में अंग्रेजों के विरुद्ध जन आक्रोश बढ़ता गया, जो 1857 में एक व्यापक जनविद्रोह के रूप में भड़क उठा। 1857 के विद्रोह का आरंभ 10 मई, 1857 को मेरठ में कंपनी के भारतीय सिपाहियों द्वारा शुरू हुआ, जो धीरे-धीरे कानपुर, बरेली, झाँसी, दिल्ली, अवध आदि स्थानों तक फैल गया। इसकी शुरुआत एक सैन्य विद्रोह के रूप में हुई, परंतु कालांतर में उसका स्वरूप बदलकर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक 'जनव्यापी विद्रोह' का हो गया।

1857 के विद्रोह के प्रमुख कारण

राजनीतिक कारण

- 1857 की क्रांति के राजनीतिक कारणों में लॉर्ड वेल्लेजली की 'सहायक संधि' तथा लॉर्ड डलहौजी का 'व्यपगत का सिद्धांत' प्रमुख था।
- वेल्लेजली की 'सहायक संधि' के अनुसार भारतीय राजाओं को अपने राज्यों में कंपनी की सेना रखनी पड़ती थी। सहायक संधि से भारतीय राजाओं की स्वतंत्रता समाप्त होने लगी और राज्यों में कंपनी का हस्तक्षेप बढ़ने लगा था।
- लॉर्ड डलहौजी की 'राज्य हड़प नीति' या 'व्यपगत का सिद्धांत' (Doctrine of lapse) द्वारा अंग्रेजों ने हिंदू राजाओं के दत्तक पुत्र लेने के अधिकार को समाप्त कर दिया। वैध उत्तराधिकारी नहीं होने की स्थिति में राज्यों का विलय अंग्रेजी राज्यों में कर लिया जाता था।
- लॉर्ड डलहौजी द्वारा विलय किये गए राज्यों का क्रम—
सतारा (1848) → जैतपुर, संबलपुर (1849) → बघाट (1850) → उदयपुर (1852) → झाँसी (1853) → नागपुर (1854) → करौली (1855) → अवध (1856)
- रियासतों के विलय के अतिरिक्त पेशवा (नाना साहब) की पेंशन रोके जाने का विषय भी असंतोष का कारण बना।

नोट: डलहौजी ने 1855 में करौली को भी अपनी व्यपगत नीति के तहत विलय किया था, किंतु बोर्ड ऑफ कंट्रोल ने मान्यता नहीं दी। फलतः इसे वापस लौटाना पड़ा।

- 1856 में अवध का विलय कुप्रशासन के आधार पर किया गया क्योंकि डलहौजी की हड़प नीति यहाँ लागू नहीं हो रही थी।
- इसके लिये अवध के रेजिडेंट स्लीमैन से रिपोर्ट मांगी गई, किंतु उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया और कहा कि “अंग्रेजों के लिये उनका नाम किसी अन्य चीज से ज्यादा महत्वपूर्ण है।”
- बाद में आउट्रम को वहाँ रेजिडेंट बनाकर भेजा गया और इसी की रिपोर्ट के आधार पर 1856 में अवध का विलय किया गया।
- विलय के बाद हेनरी लॉरेंस को अवध का रेजिडेंट बनाया गया।

प्रशासनिक कारण

- अंग्रेजों ने भेदभावपूर्ण नीति अपनाते हुए, भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में सम्मिलित नहीं होने दिया तथा उच्च पदों पर भारतीयों को हटाकर ब्रिटिश लोगों को नियुक्त किया। अंग्रेज भारतीयों को उच्च सेवाओं हेतु अयोग्य मानते थे। इन सब बातों से क्षुब्ध होकर भारतीयों में आक्रोश का भाव जागृत हो चुका था, जो 1857 की क्रांति के रूप में सामने आया।
- अंग्रेज न्याय के क्षेत्र में भी स्वयं को भारतीयों से उच्च व श्रेष्ठ समझते थे। भारतीय जज किसी अंग्रेज के विरुद्ध मुकदमे की सुनवाई नहीं कर सकते थे। अंग्रेजों की न्याय प्रणाली पक्षपातपूर्ण, दीर्घावधिक व खर्चीली थी। अतः भारतीय इससे असंतुष्ट थे, जो 1857 के विद्रोह में जनाक्रोश का एक कारण बना।
- डलहौजी ने तंजौर तथा कर्नाटक के नवाबों की उपाधियाँ जब्त कर लीं, मुगल शासक बहादुरशाह को अपमानित कर लाल किला खाली करने को कहा और लॉर्ड कैनिंग ने घोषणा की कि बहादुरशाह के उत्तराधिकारी मुगल सम्राट नहीं सिर्फ राजा ही कहलायेंगे। परिणामतः मुगलों ने क्रांति के समय विद्रोहियों का साथ दिया।
- प्रशासन संबंधी कार्यों में योग्यता की जगह धर्म को आधार बनाया गया जिससे ईसाईयत की धर्मांतरण पद्धति का प्रसार हुआ, जिससे आम जन में विद्रोह की भावना उत्पन्न हुई।
- 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध से ही अकालों की बारंबारता ने ब्रिटिश प्रशासनिक तंत्र की पोल खोल दी।

सामाजिक एवं धार्मिक कारण

- सांस्कृतिक सुधार की नीतियों से पारंपरिक भारतीय संस्कृति को हीन मानकर बदलाव करना, इससे समाज का रूढ़िवादी वर्ग ब्रिटिशों के विरुद्ध खड़ा हो गया।

भूमिका

ब्रिटिश हुकूमत और भारतीय शोषकों, जैसे- जमींदार, राजा-रजवाड़े, कुलीन वर्ग आदि के खिलाफ 18वीं सदी से ही सामान्य-नागरिक, कृषक तथा जनजातीय लोग अपना असंतोष प्रकट करने लगे थे। कृषक आंदोलनों का कारण ब्रिटिशों की भू-नीतियाँ एवं राजस्व की दमनात्मक वसूली आदि थी। यद्यपि अधिकांश विद्रोहों का पुलिस तथा सेना की मदद से दमन किया गया, परंतु भारतीय किसानों ने विभिन्न स्थानों पर अपना प्रतिरोध दर्ज कराया। जनजातीय विद्रोह का कारण उनके परंपरागत अधिकारों का हनन था। आदिवासियों का वन पर परंपरागत अधिकार था परंतु सरकार ने वन नीति के तहत उसे सरकारी संपत्ति घोषित कर दिया। आबकारी कर, नमक कर जैसे करों की दमनकारी वसूली भी इन विद्रोहों का कारण बनी। ईसाई धर्म प्रचारकों ने भारतीय संस्कृति पर प्रहार किया। फलतः समय-समय पर विभिन्न जन विद्रोह हुए।

प्रमुख जन विद्रोह

संन्यासी विद्रोह (बंगाल, 1770-1820)

(अन्य स्रोतों में 1763-1800)

- इस आंदोलन का प्रमुख कारण अत्यधिक शोषण, अकालों की निरंतरता, अंग्रेजों की लूटखसोट, आर्थिक मंदी व राजनैतिक अशांति एवं तात्कालिक कारण अंग्रेजों द्वारा हिंदू व मुस्लिम तीर्थ स्थानों की यात्रा पर लगाया गया प्रतिबंध था।
- संन्यासी प्रभाव क्षेत्र ढाका, रंगपुर तथा मैमनपुर थे।
- इस आंदोलन के नेतृत्वकर्ता मंजु शाह एवं देवी चौधरानी थे।
- 1770 के अकाल के बाद तो इतना तीव्रगामी विद्रोह किया गया कि 1773 में विद्रोहियों ने समानांतर सरकार बना ली।
- बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा लिखित उपन्यास 'आनंदमठ' का कथानक संन्यासी विद्रोह पर आधारित है।
- संन्यासी विद्रोह को दबाने का श्रेय 'वारेन हेस्टिंग्स' को दिया जाता है।

फकीर विद्रोह (बंगाल, 1776-77)

- यह एक धार्मिक विद्रोह था, जो घुमक्कड़ मुसलमान फकीरों के गुट द्वारा किया गया था।
- इस विद्रोह के नेता मज्जूनूमाशाह ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह करते हुए जमींदारों और किसानों से धन की वसूली की।
- मज्जूनूमाशाह की मृत्यु के पश्चात् आंदोलन की बागडोर चिरागअली शाह ने संभाली। राजपूत, पठान एवं सेना के भूतपूर्व सैनिकों ने आंदोलन को सहयोग प्रदान किया।

- भवानी पाठक व देवी चौधरानी जैसे हिंदू नेताओं ने इस आंदोलन की सहायता की।
- कालांतर में इस आंदोलन के समर्थकों ने हिंसक गतिविधियाँ प्रारंभ कर दीं, जो अंग्रेजी फैक्ट्रियों एवं सैनिक साजो-सामान पर केंद्रित थीं।
- 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों तक अंग्रेजी सेनाओं ने आंदोलन को कठोरतापूर्वक दबा दिया।

पाइक विद्रोह (1817-1825)

- यह विद्रोह उड़ीसा की 'पाइक' जाति द्वारा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध एक सशस्त्र विद्रोह था। यह ओडिशा के खुर्दा जिले से शुरू हुआ।
- बक्शी जगबंधु विद्याधर के नेतृत्व में इस विद्रोह को अंजाम दिया गया जो कि खुर्दा के राजा के सैन्य कमांडर थे।
- पाइक जाति को परंपरागत रूप से खुर्दा के राजा द्वारा सैन्य गतिविधियों के लिये कर मुक्त भूमि का आवंटन किया जाता था। अंग्रेजों ने इस पर रोक लगा दी। अन्य कारणों में भारतीयों से अंग्रेजों द्वारा जबरन वसूली और उत्पीड़न भी शामिल रहा, जिससे यह आंदोलन आक्रोशित हो उठा।
- 1825 तक इस आंदोलन का पूर्णतः दमन कर दिया गया।

नोट: केंद्रीय बजट 2017-18 में इस विद्रोह के 200 साल पूरे होने पर एक भव्य समारोह मनाने की घोषणा की गई।

अहोम विद्रोह (1828-1833; असम)

- 1824 में बर्मा-युद्ध के बाद अंग्रेजों ने उत्तरी असम पर अधिकार कर लिया था, जिसे असम के अहोम-वंश के उत्तराधिकारियों ने नापसंद किया और ईस्ट इंडिया कंपनी से असम छोड़कर चले जाने को कहा, परिणामस्वरूप विद्रोह फूट पड़ा।
- 1828 से 1830 तक अहोमों ने गोमधर कुँवर के नेतृत्व में कंपनी के विरुद्ध विद्रोह किया, परंतु विद्रोह सफल न हो सका। अंग्रेज अधिकारियों ने गोमधर कुँवर को गिरफ्तार कर अंततः विद्रोह को दबा दिया।
- 1830 में अहोमों ने कुमार रूपचंद के नेतृत्व में दूसरे विद्रोह की योजना बनाई, परंतु इससे पहले विद्रोह होता, कंपनी ने शांति की नीति अपनाते हुए 1833 में उत्तरी असम के प्रदेश महाराज पुरंदर सिंह को दे दिये। इस तरह अहोम विद्रोह शांत हो गया।

फराजी/फरैजी विद्रोह (1838-1857; बंगाल)

- फरैजी विद्रोह का सूत्रपात शरीयतुल्ला द्वारा बंगाल में किया गया। इसका प्रचार-प्रसार शरीयतुल्ला के पुत्र मोहम्मद मोहसिन (दादू मियाँ) ने किया।

भूमिका

ब्रिटिश शासन के दौरान शुरू की गई नई सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक प्रणाली ने भारतीय समाज के आधारभूत ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन किया। नई एवं परंपरागत व्यवस्था के संघर्ष ने भारतीय समाज में आंतरिक उथल-पुथल को जन्म दिया। भारत में पाश्चात्य शिक्षा का प्रारंभ भी सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण का एक महत्वपूर्ण कारण था। यद्यपि कंपनी ने भारत के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप के प्रति संयम की नीति का पालन किया, लेकिन ऐसा उसने अपने औपनिवेशिक हितों के लिये किया। पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित लोगों ने हिंदू सामाजिक संरचना, धर्म, रीति-रिवाज व परंपराओं को तर्क की कसौटी पर कसना आरंभ कर दिया। परिणामतः सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों का जन्म हुआ। भारतीय समाज को पुनर्जीवन प्रदान करने का प्रयत्न प्रबुद्ध भारतीय सामाजिक एवं धार्मिक सुधारकों, सुधारवादी ब्रिटिश गवर्नर जनरलों एवं पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार ने किया।

भारत का सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति मानी जाती है। जब हमारा समाज और धर्म दोनों गतिहीन हो चला तो इस आंदोलन ने इस स्थिरता को तोड़ने का काम किया। 19वीं सदी में सुधार मुख्यतः नारी केंद्रित और 20वीं सदी में निम्न जाति केंद्रित रहे।

सुधार आंदोलन के कारण

- 1813 के चार्टर एक्ट के तहत ईसाई मिशनरियों का भारत में आगमन हुआ। इन प्रचारकों ने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार कर हिंदू व इस्लाम धर्म की मान्यताओं एवं व्यवहार पर चोट की। इसके पीछे निहित कारणों में भारतीय समाज का आधुनिकीकरण करना नहीं वरन् ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के लिये खरीददार तैयार करना तथा उपयोगितावादी विचारधारा का प्रयोग कर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति निकृष्टता का भाव पैदा करना था। प्रतिक्रियास्वरूप अपने धर्म की रक्षा एवं सामाजिक बुराइयों को दूर करने हेतु अनेक सामाजिक-धार्मिक आंदोलन हुए।
- बौद्धिक विकास की अनुकूल परिस्थितियों से आधुनिक चेतना के साथ समाज का शिक्षित वर्ग सामने आया, जिन्होंने धार्मिक, सामाजिक आडंबरों के प्रति सुधारवादी रवैया अपनाया और उन्हें समसामयिक संदर्भ में उपयोगी व युक्ति-संगत बनाने का प्रयास प्रारंभ किया। इन आंदोलनों को नेतृत्व देने में कुछ संगठनों और व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान था।

हिंदू धर्म से संबंधित सुधारक संस्थाएँ

ब्रह्म समाज

बंगाल में प्रारंभ हुए समाज सुधार आंदोलनों का नेतृत्व राजा राममोहन राय ने किया। इन्हें भारत में नवजागरण का अग्रदूत, सुधार आंदोलनों का

प्रवर्तक, आधुनिक भारत का पिता, नवप्रभात का तारा एवं भारतीय पत्रकारिता का जनक कहा जाता है। राजा राममोहन राय प्राच्य और पाश्चात्य चिंतन के मिले-जुले रूप के प्रतिनिधि थे।

- 1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म सभा की स्थापना कलकत्ता में की, जिसे बाद में 'ब्रह्म समाज' कहा गया। ब्रह्म समाज के मुख्य उद्देश्य 'हिंदू धर्म' में सुधार लाना, सभी धर्मों की अच्छाइयों को अपनाना, मूर्ति पूजा का विरोध, एक ब्रह्म की पूजा का उपदेश देना आदि थे। उन्होंने एकेश्वरवाद का समर्थन कर धर्मों की आपसी एकता पर जोर दिया। ब्रह्म समाज के सिद्धांतों और दृष्टिकोण के मुख्य आधार थे- मानव-विवेक (तर्क-शक्ति), वेद व उपनिषद्।
- राजा राममोहन राय धार्मिक, दार्शनिक व सामाजिक दृष्टिकोण में इस्लाम के एकेश्वरवाद, सूफीमत के रहस्यवाद, ईसाई धर्म की आचार शास्त्रीय नीतिपरक शिक्षा और पश्चिम के आधुनिक देशों के उदारवादी-बुद्धिवादी सिद्धांतों के समर्थक थे।
- सामाजिक क्षेत्र में राजा राममोहन राय हिंदू समाज की कुरीतियों- सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, वेश्यागमन, जातिवाद, बाल विवाह आदि के घोर विरोधी थे। विधवा पुनर्विवाह का इन्होंने समर्थन किया।
- धार्मिक क्षेत्र में उन्होंने मूर्ति पूजा की आलोचना करते हुए, अपने पक्ष को वेदोक्तियों के माध्यम से सिद्ध करने का प्रयास किया। इन्होंने कर्मकांड का विरोध किया तथा धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या के लिये पुरोहित वर्ग को अस्वीकार किया। उन्होंने यह भी कहा कि अगर धर्म सामाजिक सुधार की अनुमति नहीं देते तो उसे बदल दिया जाना चाहिये।
- एकेश्वरवादी मत के प्रचार हेतु उन्होंने 1815 में 'आत्मीय सभा' का भी गठन किया। 1822 में फारसी भाषा में उन्होंने मिरात-उल-अखबार (मिरातुल अखबार) का प्रकाशन किया। कलकत्ता यूनिटेरियन कमेटी का गठन 1823 में राजा राममोहन राय, द्वारकानाथ टैगोर और विलियम एडम द्वारा किया गया।
- 1821 में बांग्ला भाषा में 'संवाद कौमुदी' का भी प्रकाशन किया। सती-प्रथा के विरोध के लिये इन्होंने अपनी इस पत्रिका का उपयोग किया।
- राजा राममोहन राय ने डच घड़ीसाज डेविड हेयर के सहयोग से 1817 में कलकत्ता में 'हिंदू कॉलेज' की स्थापना की। 1825 में उन्होंने कलकत्ता में 'वेदांत कॉलेज' की स्थापना की।
- राजा राममोहन राय ने फारसी भाषा में 'तोहफत-उल-मुवाहहीदीन' (एकेश्वरवादियों को उपहार) का प्रकाशन किया, जिसमें उन्होंने एकेश्वरवाद के पक्ष में विवेकपूर्ण तर्क दिये।
- मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि प्रदान की थी।

9. पश्चिमी भारत के डी. के. कर्वे का नाम निम्नलिखित में से किस संदर्भ में आता है?

- (i) सती प्रथा (ii) बाल (शिशु) हत्या
(iii) स्त्री शिक्षा (iv) विधवा पुनर्विवाह

कूट:

- (a) (i) और (ii) (b) (iii) और (iv)
(c) (i) और (iv) (d) (ii) और (iii)

10. रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में किसके द्वारा की गई थी?

- (a) विवेकानंद (b) रामकृष्ण परमहंस
(c) गोपाल कृष्ण गोखले (d) श्यामजी कृष्ण वर्मा

MPPSC (Pre), 1996; UPPSC (Mains), 2004

UKPSC (Mains), 2006; RAS/RTS (Pre), Re-exam-2013

11. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिये:

सूची-I

सूची-II

- | | |
|---------------------|--|
| A. राजा राममोहन राय | 1. यह कहा कि ब्रह्मवाद को विश्व धर्म बनाना चाहिये। |
| B. केशव चंद्र सेन | 2. हिंदू धर्म की पहचान वेदों में संस्थापित धर्म से की। |
| C. दयानंद सरस्वती | 3. इस पर जोर दिया कि ईश्वर तक पहुँचने के कई मार्ग हो सकते हैं। |
| D. रामकृष्ण परमहंस | 4. यह कहा कि हिंदू धर्म का शुद्धतम रूप उपनिषदों में निहित है। |

कूट:

- | | | | | |
|-----|---|---|---|---|
| | A | B | C | D |
| (a) | 1 | 4 | 2 | 3 |
| (b) | 1 | 4 | 3 | 2 |
| (c) | 4 | 1 | 3 | 2 |
| (d) | 4 | 1 | 2 | 3 |

UPPSC Lower Sub (Pre), 1998

12. निम्न में से किसने कहा था, “अच्छा शासन स्वशासन का स्थानापन्न नहीं है”?

- (a) लोकमान्य तिलक (b) स्वामी विवेकानंद
(c) स्वामी दयानंद (d) रवींद्रनाथ टैगोर

13. ‘प्रार्थना समाज’ के संस्थापक कौन थे?

- (a) आत्माराम पांडुरंग (b) तिलक
(c) एनी बेसेंट (d) रास बिहारी बोस

Chhattisgarh PSC (Pre), 2004; UPUDA/LDA (Mains), 2010

53rd to 55th BPSC (Pre), 2011

14. सत्य शोधक समाज के संस्थापक, जिन्होंने गुलामगिरी पुस्तक लिखी-

- (a) बी.आर. अंबेडकर (b) ज्योतिबा फूले
(c) भास्कर राव जाधव (d) पेरियार

15. सत्य शोधक समाज ने संगठित किया था-

- (a) बिहार में आदिवासियों के उन्नयन का आंदोलन
(b) गुजरात में मंदिर प्रवेश का एक आंदोलन

(c) महाराष्ट्र का एक जाति विरोधी व पिछड़े वर्गों के उत्थान हेतु आंदोलन

(d) पंजाब का किसान आंदोलन

IAS (Pre), 1993, 1996, 2016

16. निम्नलिखित युग्मों में से कौन सुमेलित नहीं है?

- (a) राजा राममोहन राय - ब्रह्म समाज
(b) स्वामी दयानंद सरस्वती - आर्य समाज
(c) स्वामी विवेकानंद - रामकृष्ण मिशन
(d) महादेव गोविंद रानाडे - थियोसोफिकल सोसायटी

UPPSC (Mains), 2011

17. शारदा अधिनियम के अंतर्गत लड़कियों एवं लड़कों के विवाह की न्यूनतम आयु क्रमशः कितनी निर्धारित की गई थी?

- (a) 12 और 16 (b) 14 और 18
(c) 15 और 21 (d) 16 और 22

UPPSC (Pre), 2012; UPRO/ARO (Mains), 2013

18. ब्रह्म समाज का सिद्धांत आधारित है-

- (a) नास्तिकता पर (b) अद्वैतवाद पर
(c) एकदेववाद पर (d) बहुदेववाद पर

UPPSC (Pre), 1999; UPPSC (Pre), 2005

19. भारतीय राष्ट्रवाद का पैगंबर व आधुनिक पुरुष किसे माना जाता है?

- (a) नाना साहब (b) स्वामी विवेकानंद
(c) राजा राममोहन राय (d) ईश्वर चंद्र विद्यासागर

20. राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित प्रथम संस्था थी-

- (a) ब्रह्म समाज (b) प्रार्थना समाज
(c) आत्मीय सभा (d) तत्त्वबोधिनी सभा

41th BPSC (Pre), 1991; UPPSC (Mains), 2009

21. निम्नलिखित पर विचार कीजिये:

- कलकत्ता यूनिटेरियन कमेटी
- टेबरनेकल ऑफ न्यू डिस्पेंसेशन
- इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन

केशव चंद्र सेन का संबंध उपर्युक्त में से किसकी स्थापना से है?

- (a) केवल 1 और 3 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

UPPSC (Pre), 2012; IAS (Pre), 2016

22. राममोहन राय को ‘राजा’ की उपाधि किसने दी?

- (a) लॉर्ड विलियम बेंटिक
(b) अकबर द्वितीय
(c) ब्रह्म समाज के अनुयायियों ने
(d) सती प्रथा का विरोध करने वाले बुद्धिजीवियों ने

उत्तरमाला

- | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (d) | 3. (a) | 4. (c) | 5. (b) |
| 6. (c) | 7. (a) | 8. (a) | 9. (b) | 10. (a) |
| 11. (d) | 12. (c) | 13. (a) | 14. (b) | 15. (c) |
| 16. (d) | 17. (b) | 18. (c) | 19. (c) | 20. (c) |
| 21. (b) | 22. (b) | | | |

भूमिका

भारत में राजनीतिक चेतना का विकास 19वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण घटना है। ब्रिटिश शासन ने भारत में अपनी सत्ता बनाए रखने के लिये अनेक नीतियों का क्रियान्वयन किया, जिसके परिणामस्वरूप भारत में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ। पश्चिमी शिक्षा एवं पाश्चात्य जगत् से संपर्क की राजनीतिक चेतना एवं राष्ट्रीयता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अंग्रेजी के प्रचार-प्रसार ने उसे जनभाषा तो नहीं बनाया, लेकिन संपर्क भाषा के रूप में अवश्य स्थापित कर दिया। इस संपर्क भाषा ने यह मुमकिन बनाया कि विभिन्न भाषायी समुदाय के भारतीय आपस में विचारों का आदान-प्रदान कर वैचारिक, बौद्धिक एकता की स्थापना कर सकें।

विभिन्न समयांतरालों में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों के हितों के विरुद्ध उठाए गए कदम भी राष्ट्रीयता के विकास में सहायक सिद्ध हुए। इस दृष्टि से लॉर्ड लिटन का शासन विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। लिटन ने भारतीय शस्त्र अधिनियम (आर्म्स एक्ट-1878) द्वारा भारतीयों को निःशस्त्र कर दिया। इससे पहले वर्नाकुलर प्रेस एक्ट (1878) द्वारा भारतीय भाषा में समाचार-पत्रों पर कठोर नियंत्रण स्थापित कर दिये गए। सिविल सर्विस की परीक्षा केवल इंग्लैंड में आयोजित करना तथा आयु-सीमा को घटाकर 21 वर्ष से 19 वर्ष कर देना, ऐसे कदम थे जो भारतीय शिक्षित वर्ग की आकांक्षाओं और हितों पर चोट करते थे। परिणामतः जनता में आक्रोश बढ़ा, जिसने राजनीतिक चेतना के विकास में सहायता की। भारतीय प्रेस एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार ने भी राजनीतिक चेतना के विकास में योगदान दिया।

भारत में आधुनिक शिक्षा का विकास

- ईस्ट इंडिया कंपनी प्रारंभ में एक विशुद्ध व्यापारिक कंपनी थी। प्रारंभ में शिक्षा के लिये जो भी प्रयास किये गए, वे व्यक्तिगत तौर पर किये गए थे, जैसे- वारेन हेस्टिंग्स ने 1781 में अरबी व फारसी भाषा के अध्ययन हेतु कलकत्ता मदरसा की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य मुस्लिम कानूनों व इससे संबंधित अन्य विषयों की जानकारी देना था।
- 1784 में सर विलियम जोन्स ने कलकत्ता में 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' की स्थापना की, जिसने प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण योगदान दिया। चार्ल्स विल्किंस ने भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद किया। विलियम जॉन्स द्वारा कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुंतलम् का अंग्रेजी अनुवाद किया गया।

- बनारस के ब्रिटिश रेजिडेंट जोनाथन डंकन के प्रयत्न से 1791 में बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य हिंदू विधि एवं दर्शन का अध्ययन करना था।
- कालांतर में लॉर्ड वेलेजली ने कंपनी के असैन्य अधिकारियों की शिक्षा के लिये 1800 में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- भारतीय रियासतों के साथ पत्र व्यवहार के लिये कंपनी को अरबी, फारसी एवं संस्कृत के ज्ञाताओं की आवश्यकता थी। इसी समय प्रबुद्ध भारतीयों एवं मिशनरियों ने सरकार पर आधुनिक, धर्म निरपेक्ष एवं पाश्चात्य शिक्षा को प्रोत्साहित करने का दबाव डालना प्रारंभ कर दिया।
- कलकत्ता मदरसा एवं संस्कृत कॉलेज में शिक्षा पद्धति के ढाँचे को इस प्रकार तैयार किया गया था कि कंपनी को ऐसे शिक्षित व वफ़ादार वर्ग की प्राप्ति हो सके जो शास्त्रीय व स्थानीय भाषा के अच्छे ज्ञाता होने के साथ-साथ कंपनी के प्रशासन में भी मदद कर सकें। न्यायालयों में अंग्रेज न्यायाधीशों को ऐसे परामर्शदाताओं की आवश्यकता थी जो हिंदी, अरबी, उर्दू, फारसी और संस्कृत भाषाओं के ज्ञाता हों व मुस्लिम व हिंदू कानूनों की व्याख्या करने में सक्षम हों।
- प्रबुद्ध भारतीयों ने निष्कर्ष निकाला कि पाश्चात्य शिक्षा के माध्यम से ही सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दुर्बलता को दूर किया जा सकता है।
- मिशनरियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार-प्रसार से भारतीयों की उनके परंपरागत धर्म में आस्था समाप्त हो जाएगी तथा वे ईसाई धर्म की ओर प्रेरित होने लगेंगे, जिससे भारत में ब्रिटिश समर्थकों का एक बड़ा वर्ग तैयार हो जाएगा।
- ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारत में शिक्षा के क्षेत्र में वास्तविक प्रयास 1813 के चार्टर अधिनियम के तहत शुरू किया गया।
- 1813 के चार्टर एक्ट में गवर्नर जनरल को अधिकार दिया गया कि वह एक लाख रुपये, साहित्य के पुनरुद्धार और भारत में स्थानीय विद्वानों को प्रोत्साहन देने के लिये एवं ब्रिटिश शासित प्रदेशों के वासियों को विज्ञान व दर्शन की शिक्षा प्रदान करने हेतु खर्च करें।
- वस्तुतः ब्रिटिश सत्ता द्वारा भारत में आधुनिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छोटे प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति हेतु भारतीयों की आवश्यकता थी।
- राजा राममोहन राय तथा डेविड हेयर के प्रयत्नों से 1817 में बना हिंदू कॉलेज (कलकत्ता) पाश्चात्य पद्धति पर उच्च शिक्षा देने का प्रथम कॉलेज था।

- प्रेस समिति की अनुशंसाओं के आधार पर समाचार पत्र अधिनियम 1908 तथा भारतीय समाचार पत्र अधिनियम, 1910 को समाप्त कर दिया गया।

भारतीय समाचार पत्र (संकटकालीन शक्तियाँ) अधिनियम, 1931

- 20वीं शताब्दी में राजनीतिक आंदोलन में आई गति तथा महात्मा गांधी द्वारा प्रारंभ किये गए सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारण सरकार ने समाचार पत्रों पर अधिक नियंत्रण करने की भावना से एक नया समाचार पत्र अध्यादेश जारी किया। प्रांतों को सविनय अवज्ञा के प्रचार को दबाने के लिये अत्यधिक शक्तियाँ दी गईं।
- इस अधिनियम की धारा 4(1) में शब्द, संकेत अथवा आकृति द्वारा किसी की हत्या के या अन्य संज्ञेय (Cognizable) अपराध के बदले कठोर दंड की व्यवस्था की गई।
- 1932 में इस अधिनियम का विस्तार करके 'क्रिमिनल एमेंडमेंट एक्ट' लागू किया गया। इसमें वे सभी गतिविधियाँ शामिल कर दी गईं जो सरकार की प्रभुसत्ता को हानि पहुँचा सकती थी।

स्वतंत्रता के पश्चात्

समाचार पत्र जाँच समिति (1947)

- संविधान सभा में स्पष्ट किये गए, मूल अधिकारों के प्रकाश में समाचार पत्रों के कानूनों की समीक्षा करने के लिये भारत सरकार ने 1947 में एक समिति का गठन किया।

- इस समिति की सिफारिशों में 1931 के अधिनियम को रद्द करना, समाचार पत्र और पुस्तकों के पंजीकरण के अधिनियम में संशोधन, भारतीय दंड संहिता की धारा 124 ए और 153 ए में परिवर्तन, 1931 तथा 1934 के देशी राज्य अधिनियम को रद्द करना सम्मिलित था।

समाचार पत्र (आपत्तिजनक विषय) अधिनियम, 1951

- समाचार पत्र जाँच समिति (1947) के सुझाव तथा अदालती निर्णयों की पृष्ठभूमि में सरकार ने 'समाचार पत्र (आपत्तिजनक विषय) अधिनियम, 1951' पारित किया।
- 1954 में इस अधिनियम को आगे बढ़ाने के प्रश्न की जाँच के लिये प्रेस आयोग का गठन किया गया।
- यह कानून 1956 तक लागू रहा। इस कानून में इस बात का विशेष ख्याल रखा गया कि किसी कार्रवाई से पहले संबंधित व्यक्ति को अपना पक्ष प्रस्तुत करने का पर्याप्त मौका मिले।
- 1965 में समाचार पत्रों तथा पत्रकारों के आंतरिक नियमन हेतु 'प्रेस परिषद् अधिनियम, 1965' पारित किया गया। प्रेस परिषद् को यह ज़िम्मेदारी भी दी गई कि वह भारत में समाचार पत्रों के स्तर के उन्नयन तथा उसको बनाए रखने का प्रयास करे। यह कानून एक दशक तक लागू रहा तथा 1975 में आंतरिक आपातकाल लागू होने के बाद इसे निरसित कर दिया गया।

अभ्यास प्रश्न

1. ब्रिटिश सरकार के किस अधिनियम में पहली बार भारत में शिक्षा के लिये एक लाख रुपये खर्च करने का प्रावधान किया गया?
 - (a) लुड्स डिस्पैच अधिनियम, 1854
 - (b) चार्टर अधिनियम, 1813
 - (c) चार्टर अधिनियम, 1853
 - (d) भारतीय परिषद् अधिनियम, 1892

UPPSC (Mains), 2009

2. हंटर कमीशन की रिपोर्ट में विशेष जोर दिया गया—
 - (a) बालिकाओं की शिक्षा पर
 - (b) उच्च शिक्षा पर
 - (c) प्राथमिक शिक्षा पर
 - (d) तकनीकी शिक्षा पर

UPPSC (Pre), 2004

UP Lower Sub (Pre), 2004

3. शिक्षा में सुधार हेतु ब्रिटिश सरकार ने सैडलर विश्वविद्यालय आयोग कब नियुक्त किया?
 - (a) 1919
 - (b) 1917
 - (c) 1921
 - (d) 1896

48th to 52nd BPSC (Pre), 2008

4. किसके शासनकाल में भारत में अंग्रेजी शिक्षा आरंभ की गई?
 - (a) लॉर्ड विलियम बेंटिक
 - (b) लॉर्ड हार्डिंग
 - (c) लॉर्ड मिंटो
 - (d) लॉर्ड डलहौजी

UPPSC (Mains), 2011

5. निम्नलिखित कॉलेजों में सर्वप्रथम किसकी स्थापना हुई?
 - (a) हिंदू कॉलेज, कलकत्ता
 - (b) दिल्ली कॉलेज
 - (c) मेयो कॉलेज
 - (d) मुस्लिम एंग्लो-ओरियंटल कॉलेज

UPPSC (Pre), 2012

6. भारत का पहला समाचार पत्र था?
 - (a) बंगाल गजट
 - (b) हिंदुस्तान टाइम्स
 - (c) पायनियर
 - (d) संवाद कौमुदी

UPPSC Spl (Mains), 2004

7. भारत में सर्वप्रथम किसने प्रेस सेंसरशिप लागू की थी?
 - (a) लॉर्ड हेस्टिंग्स ने
 - (b) लॉर्ड वेलेजली ने
 - (c) जॉन एडम्स ने
 - (d) लॉर्ड डलहौजी ने

UPPSC (Pre), 2001

8. 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' किसने रद्द किया?
 - (a) लॉर्ड मिंटो
 - (b) लॉर्ड लिटन
 - (c) लॉर्ड कर्जन
 - (d) लॉर्ड रिपन

39th BPSC (Pre), 1994; IAS (Pre), 2005

9. 'अमृत बाजार पत्रिका' की स्थापना किसने की?
 - (a) गिरीशचंद्र घोष
 - (b) हरीश चंद्र मुखर्जी
 - (c) एस.एन. बनर्जी
 - (d) शिशिर कुमार घोष

47th BPSC (Pre), 2005

भूमिका

1857 की क्रांति के पश्चात् भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं का विकास उभरने लगा। इस दौर के क्रांतिकारियों ने भारतीय जनमानस में नायकों का स्थान प्राप्त किया। भारतवासियों ने देश के आर्थिक पिछड़ेपन को उपनिवेशी शासन का परिणाम माना। उनका मानना था कि देश के विभिन्न वर्ग के लोगों, यथा-कृषक, शिल्पकार, दस्तकार, मजदूर, बुद्धिजीवी, शिक्षित एवं व्यापारियों आदि सभी के हित विदेशी शासन की भेंट चढ़ गए हैं।

अंग्रेजों की भेदभाव पूर्ण नीतियों ने आधुनिक राष्ट्रवाद के विकास में योगदान दिया। देशवासियों का मानना था कि देश में जब तक विदेशी शासन रहेगा, लोगों के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा राजनीतिक हितों पर कुठाराघात होता रहेगा।

काँग्रेस की स्थापना (1885) से पूर्व भारत व लंदन में कई राजनीतिक संस्थाओं का गठन हुआ। बंगाल, बंबई एवं मद्रास में इन राजनीतिक संस्थाओं ने पत्र-पत्रिका, अखबार एवं जनसभाओं आदि माध्यमों से लोगों को अपने अधिकारों के लिये जागरूक किया। परिणामतः लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई। सामान्य जनता अब आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगी। निश्चित ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इस प्रारंभिक दौर में इन संस्थाओं ने राष्ट्रवादी विचारों के विकास में अपनी महती भूमिका निभाई।

बंगाल में राजनीतिक संस्थाएँ

लैंडहोल्डर्स सोसायटी या ज़मींदारी एसोसिएशन

- लैंडहोल्डर्स सोसायटी की स्थापना 1838 में द्वारकानाथ टैगोर द्वारा कलकत्ता में की गई थी।
- ध्यातव्य है कि लैंडहोल्डर्स सोसायटी पहली राजनीतिक सभा थी, जिसने संगठित राजनीतिक प्रयासों का शुभारंभ किया। इस संस्था ने ज़मींदारों के हितों की सुरक्षा तथा उनकी शिकायतों को दूर करने के लिये संवैधानिक उपचारों का प्रयोग किया।
- कलकत्ता के ज़मींदारों की यह सभा इंग्लैंड की 'ब्रिटिश इंडिया सोसायटी' को भी सहयोग करती थी, जिसकी स्थापना विलियम एडम्स द्वारा की गई थी।
- लैंडहोल्डर्स सोसायटी के प्रमुख भारतीय नेता द्वारकानाथ टैगोर, राधाकांत देव, प्रसन्न कुमार ठाकुर आदि ज़मींदार थे। इसलिये इसे 'ज़मींदारी एसोसिएशन' भी कहा जाता है।

बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसायटी

- 1843 में जॉर्ज थॉमसन की अध्यक्षता में 'बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसायटी' नामक राजनीतिक सभा की स्थापना हुई। यह भारतीय तथा गैर-सरकारी अंग्रेजों का सम्मिलित संगठन था।
- इस सभा का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी शासन में भारतीयों की वास्तविक अवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त कर उनका प्रचार-प्रसार करना

तथा जनता की उन्नति व न्यायपूर्ण अधिकारों के लिये शांतिमय और कानूनी साधनों का प्रयोग करना था।

ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन

- अक्टूबर 1851 में ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की स्थापना कलकत्ता में राधाकांत देव की अध्यक्षता में की गई। इसके अन्य प्रमुख सदस्यों में देवेन्द्रनाथ टैगोर, रामगोपाल घोष, प्यारी चंद्र मित्र, कृष्णदास पाल आदि थे।
- पूर्ववर्ती दोनों प्रमुख संस्थाओं (लैंडहोल्डर्स सोसायटी एवं बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसायटी) की असफलताओं के कारण इन दोनों को मिलाकर 'ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन' का गठन किया गया।
- यह संस्था भूमिपतियों के हितों के लिये मुख्य रूप से कार्यरत थी। इसी के प्रयासों से 1853 में चार्टर के नवीकरण के समय ब्रिटिश संसद को प्रार्थना पत्र भेजा गया था। इस प्रार्थना पत्र में एक लोकप्रिय विधानसभा, न्यायिक एवं दंडनायक कार्य पृथक् किये जाने, अधिकारियों के वेतन कम किये जाने तथा नमक, आबकारी व स्टांप कर को समाप्त किये जाने आदि की मांग की गई।
- इसके परिणामस्वरूप 1853 के चार्टर एक्ट में गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी में 6 नए सदस्यों को कानून बनाने के लिये जोड़ लिया गया।
- इस संगठन ने नील विद्रोह की जाँच हेतु आयोग बैठाने की मांग की थी।
- 'हिंदू पैट्रियट' इस संस्था का मुख्य पत्र था।

इंडियन लीग

- 25 सितंबर, 1875 को शिशिर कुमार घोष द्वारा इंडियन लीग की स्थापना कलकत्ता में की गई।
- इसके अस्थायी अध्यक्ष शंभू चंद्र मुखर्जी थे।
- इस संस्था का मुख्य उद्देश्य लोगों में राष्ट्रवाद की भावना का विकास कर राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहन देना था।

इंडियन एसोसिएशन (भारत संघ)

- 26 जुलाई, 1876 को सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने आनंद मोहन बोस के सहयोग से कलकत्ता के अल्बर्ट हॉल में इसकी स्थापना की। सुरेंद्रनाथ बनर्जी इसके संस्थापक तथा आनंद मोहन बोस इसके सचिव थे। सुरेंद्रनाथ बनर्जी को 'राष्ट्र गुरु' के नाम से भी जाना जाता है।
- इंडियन एसोसिएशन की स्थापना, इंडियन लीग के स्थान पर की गई थी।
- इसका उद्देश्य मध्यम वर्ग के साथ-साथ साधारण वर्ग को भी इसमें सम्मिलित करना था, इस कारण इसका चंदा पाँच रुपये वार्षिक रखा गया।

कॉंग्रेस की स्थापना (Establishment of Congress)

भूमिका

ब्रिटिश शासन से पूर्व भारत आर्थिक दृष्टि से एक आत्मनिर्भर राष्ट्र था, किंतु ब्रिटिश शासन की स्थापना और उनकी आर्थिक नीतियों के कारण भारत की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई। परिणामतः आर्थिक बदहाली के कारण भारत की जनता में भयंकर असंतोष पनपा जो समय-समय पर विभिन्न आंदोलनों के माध्यम से दिखने लगा था। हालाँकि अभी तक जो आंदोलन हुए, उनमें राजनीतिक सहभागिता या राजनीतिक हिस्सेदारी की मांग नगण्य ही थी। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ इस अंतराल को पाटने की एक शुरुआत की गई। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ छोटे पैमाने पर ही सही लेकिन संगठित रूप में विदेशी शासन से भारत की मुक्ति का संघर्ष प्रारंभ हो गया। राष्ट्रीय कांग्रेस राजनीतिक चेतना प्राप्त भारतीयों की इस आकांक्षा का प्रतिनिधित्व करती थी कि उनकी आर्थिक और राजनीतिक प्रगति के लिये कार्यरत एक राजनीतिक संगठन बनाया जाए। यह संस्था अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रवाद की पहली सुनियोजित अभिव्यक्ति थी।

कॉंग्रेस की स्थापना

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज आई.सी.एस. अधिकारी एलन ऑक्टेवियन ह्यूम (ए.ओ. ह्यूम) द्वारा दिसंबर 1885 में की गई। इसका प्रथम अधिवेशन पुणे में आयोजित किया जाना था, लेकिन उस समय पुणे में प्लेग फैल जाने के कारण यह अधिवेशन बंबई में आयोजित किया गया। इसका प्रथम अधिवेशन 28 दिसंबर, 1885 को बंबई के ग्वालिया टैंक में स्थित 'गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज' में हुआ।
- प्रारंभ में इसका नाम 'भारतीय राष्ट्रीय संघ' रखा गया था, लेकिन बाद में दादाभाई नौरोजी के सुझाव पर इसका नाम बदलकर 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' कर दिया गया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय भारत का वायसराय लॉर्ड डफरिन था।
- बंबई के पहले अधिवेशन में भाग लेने वाले अधिकतर नेता वकील एवं पत्रकार थे। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले सदस्यों की संख्या 72 थी जो कि अधिकांश वर्गों का प्रतिनिधित्व करते थे। इसमें सर्वाधिक सदस्य बंबई प्रांत से (38 सदस्य) थे। इस अधिवेशन के प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी तथा सचिव ए.ओ. ह्यूम थे। इसके प्रमुख सदस्यों में शामिल थे फिरोजशाह मेहता, बदरुद्दीन तैय्यबजी, डब्ल्यू.सी. बनर्जी, आनंद मोहन बोस और रोमेश चंद्र दत्त आदि। उल्लेखनीय है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थापना अधिवेशन

में सुरेंद्रनाथ बनर्जी शामिल नहीं हुए थे, क्योंकि इसी समय इंडियन एसोसिएशन कॉन्फ्रेंस का दूसरा 'अखिल भारतीय सम्मेलन' आयोजित होना था। 1886 में इंडियन एसोसिएशन कॉन्फ्रेंस का विलय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में हो गया।

- सर सैय्यद अहमद खाँ ऐसे व्यक्ति थे, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से कभी भी संबद्ध नहीं रहे। उल्लेखनीय है कि बाल गंगाधर तिलक कांग्रेस सदस्य होते हुए भी कभी भी इसके अध्यक्ष नहीं चुने गए।

कॉंग्रेस की स्थापना से संबंधित विवाद/मत/सिद्धांत

- विभिन्न इतिहासकारों के बीच मतभेद है कि कांग्रेस की स्थापना के पीछे वह दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति थी, जिससे भारतीय जन में पनपते असंतोष व विद्रोह की भावना को नियंत्रित किया जा सके। उनका मानना है कि तत्कालीन वायसराय लॉर्ड डफरिन (1884-88) के परामर्श पर ह्यूम ने इस संगठन को जन्म दिया।
- 'सेफ्टी वाल्व सिद्धांत' के मतानुसार डफरिन के निर्देश पर ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना इस उद्देश्य से की थी कि 1857 की क्रांति की विफलता के बाद भारतीय जनता में पनपता असंतोष किसी भी रूप में उग्र रूप धारण न करे और असंतोष के इस वाष्प को बिना खतरे के कांग्रेस रूपी सुरक्षा वाल्व (Safety Valve) से बाहर निकाला जा सके। सेफ्टी वाल्व का सिद्धांत लाला लाजपत राय ने 'यंग इंडिया' में प्रकाशित अपने एक लेख में दिया था।
- लाला लाजपत राय के अनुसार ह्यूम को इस बात का विश्वास हो चला था कि भारत में शीघ्र ही भयंकर विस्फोट होने की संभावना है, जिससे ब्रिटेन का भारतीय साम्राज्य विनष्ट हो जाएगा। उन्होंने अपने 'यंग इंडिया' में एक लेख में, 'कांग्रेस को डफरिन के दिमाग की उपज' बताया। इसके बाद अपनी बात आगे बढ़ाते हुए उन्होंने लिखा था कि "कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य राजनीतिक आजादी हासिल करने से कहीं ज्यादा यह था कि उस समय ब्रिटिश साम्राज्य पर आसन्न खतरों से उसे बचाया जा सके। कांग्रेस के लिये ब्रिटिश साम्राज्य के हित पहले स्थान पर थे और भारत के हित दूसरे स्थान पर। कोई यह नहीं कह सकता है कि कांग्रेस अपने उस आदर्श (अंग्रेजी साम्राज्य के प्रति निष्ठा) के प्रति ईमानदार नहीं रही है।"
- सेफ्टी वाल्व सिद्धांत के प्रत्युत्तर में कांग्रेस के आरंभिक नेताओं ने कांग्रेस के संस्थापक ए.ओ. ह्यूम का 'तड़ित चालक' के रूप में प्रयोग किया।

- प्रार्थना, याचना के बाद भी इन उदारवादियों की मांगों पर सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया। संभवतः गोखले को छोड़कर कॉन्ग्रेस के नरम नेताओं में स्वतंत्रता के लिये व्यक्तिगत बलिदान करने और आपत्तियाँ सहन करने को कोई तैयार नहीं था। इस प्रकार उदारवादी अपनी रणनीति में विफल रहे। वास्तविकता तो यह थी कि अंग्रेज दबाव और शक्ति की भाषा समझते थे, प्रार्थना की नहीं।

- उदारवादी परिस्थितियों के अनुसार अपनी रणनीतियों में परिवर्तन नहीं कर सके, जिस कारण युवा पीढ़ी का समर्थन न मिलने के कारण कॉन्ग्रेस का यह दौर अधिक सफल नहीं रहा।

नोट: वायसराय लॉर्ड डफरिन ने कॉन्ग्रेस को 'राष्ट्रद्रोहियों की संस्था' कहकर पुकारा।

राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय चरण (1905-1919 ई.) Second Phase of the National Movement (1905-1919 AD.)

उग्रवादी चरण (1905-1919)

उदारवादी नेताओं की अनुनय-विनय नीति के बावजूद जब मौलिक रूप से कुछ भी हासिल नहीं हुआ, तो कॉन्ग्रेस के भीतर ही एक नया गुट जो प्रारंभ से ही उदारवादियों की नीतियों का आलोचक था, उभरकर सामने आया। इस गुट को 'गरम दल' के नाम से जाना गया। 1905-06 तक कॉन्ग्रेस के भीतर इस गुट का स्पष्ट प्रभाव दिखने लगा। कॉन्ग्रेस के उग्रवादी अथवा अतिवादी कहे जाने वाले नेताओं में लाल (लाला लाजपत राय), बाल (बाल गंगाधर तिलक), पाल (विपिन चंद्र पाल) तथा अरविंद घोष आदि प्रमुख थे। इन नेताओं ने स्वराज प्राप्ति को ही अपना प्रमुख लक्ष्य एवं उद्देश्य बनाया।

उग्रवाद को जन्म देने वाले कारण

- अंग्रेजों द्वारा कॉन्ग्रेस के अनुनय-विनय एवं मांगों पर ध्यान न दिये जाने के कारण राजनीतिक रूप से जागृत कॉन्ग्रेस का एक वर्ग असंतुष्ट हो गया तथा वह राजनीतिक आंदोलन का कोई दूसरा रास्ता अपनाने पर विचार करने लगा। इनका विश्वास था कि स्वशासन ही भारत के विकास एवं आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।
- सरकार द्वारा जनता को भड़काने वाली नीतियाँ, जैसे- वर्नाकुलर प्रेस एक्ट (1878), विश्वविद्यालय अधिनियम (1904), इंडियन ऑफिशियल सीक्रेट्स एक्ट (1904), बंगाल विभाजन (1905) आदि। विभिन्न सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का प्रभाव।
- तात्कालिक अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम का प्रभाव, जैसे- इटली का इथियोपिया द्वारा पराजित होना (1895-96), जापान द्वारा रूस को पराजित करना (1904-05)। इसके अलावा आयरलैंड, चीन, तुर्की आदि में होने वाले जनवादी आंदोलन। इससे भारतीय युवाओं के मन में बैठी यूरोपीय अपराजेयता का मिथक टूट गया।
- 1896 से 1900 के बीच भयंकर अकाल के बाद, दूसरे दिल्ली दरबार (1903) का आयोजन, जिसमें भारी व्यय किया गया।
- तिलक व राष्ट्रवादी नेताओं पर राजद्रोह का मुकदमा लगाकर लंबे कारावास की सजा दिया जाना आदि।
- इन सब घटनाओं के प्रतिक्रिया स्वरूप इस भावना का जन्म हुआ कि 'स्वराज मांगने से नहीं अपितु संघर्ष से प्राप्त होगा'। भारतीय क्रांतिकारियों का संवैधानिक आंदोलन से विश्वास उठ गया। अतः संघर्ष द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति का भाव उग्र राष्ट्रवाद या उग्रवाद कहा गया।

विचारधारा एवं कार्यपद्धति

- उग्रवादी नेता ब्रिटिश शासन से घृणा करते थे और अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने की बात करते थे। इनका विश्वास था कि 'भारतीयों की मुक्ति स्वयं के प्रयत्नों से होगी, अंग्रेजों की कृपा से नहीं'।
- इसी क्रम में तिलक ने कहा कि "स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूँगा।"
- उग्रवादियों ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं स्वदेशी अपनाने पर बल दिया तो साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा पर भी बल दिया।
- उग्रवादी विचारधारा के समर्थक बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रवाद की पहचान हिंदुत्व की भावना से की। तिलक ने 1893 में 'गणपति महोत्सव' तथा 1895 में 'शिवाजी महोत्सव' की शुरुआत करवाई। तिलक ने धर्म का राजनैतिक अस्त्र के रूप में प्रयोग किया।
- उग्रवादियों ने क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की नीति अपनाई और इसी क्रम में असहयोग, धरना प्रदर्शन, अन्यायपूर्ण कानूनों के उल्लंघन की बात की।
- उग्रवादी, प्रार्थनापत्र, स्मरणपत्र जैसे साधनों में विश्वास नहीं रखते थे। अतः ऐसा करने वाली उदारवादी राजनीति को उन्होंने 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' की संज्ञा दी। दरअसल उग्रवादी नवीन राजनीतिक साधनों जैसे- हड़ताल, बहिष्कार, प्रदर्शन आदि जन आधारित कार्यक्रमों के प्रयोग पर बल दे रहे थे।
- आंदोलन को प्रभावी बनाने के लिये राष्ट्रीय शिक्षा योजना के तहत सर गुरुदास बनर्जी ने 'बंगाल राष्ट्रीय शिक्षा परिषद्' बनाई। इसी समय पंजाब का 'डी.ए.वी.' आंदोलन भी तेजी से फैला।
- उग्रवादियों ने ग्राम सफाई, प्रतिबंधक पुलिस कार्य, मेलों का आयोजन आदि कार्य किये व विभिन्न सहकारी संगठन, स्वयंसेवी संस्थाएँ, गुप्त संगठन आदि स्थापित किये।

उग्रवादियों की सीमाएँ

- उग्रवादी नेताओं ने धार्मिक प्रतीकों पर बल दिया, जैसे तिलक ने शिवाजी महोत्सव, गणेश महोत्सव की बात की। फलतः सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिला।
- उदारवादियों के साथ वैचारिक संघर्ष से 1907 में सूरत में कॉन्ग्रेस का विभाजन हो गया, परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आंदोलन कमजोर हुआ और ब्रिटिश सरकार को आंदोलन के दमन का अवसर मिला।

आंदोलन की उपलब्धियाँ

- आंदोलन ने शिक्षित वर्ग के साथ-साथ जनसामान्य की महत्ता को भी प्रतिपादित किया तथा सुधारवादियों द्वारा तय किये गए स्वतंत्रता आंदोलन की मानचित्रावली को स्थायी तौर पर परिवर्तित कर दिया।
- आंदोलन ने जुझारू राष्ट्रवादियों की एक नई पीढ़ी को जन्म दिया।
- अगस्त 1917 में मॉण्टेग्यू घोषणा पत्र जिसमें 'उत्तरदायी सरकार' का वादा किया गया तथा 1919 में मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार' काफी हद तक होमरूल लीग आंदोलन का परिणाम थे।
- तिलक एवं एनी बेसेंट के प्रयासों से कॉन्ग्रेस के लखनऊ अधिवेशन (1916) में नरम दल एवं गरम दल के राष्ट्रवादियों के मध्य समझौता होने में सहायता मिली। लीग के नेताओं का यह योगदान राष्ट्रीय आंदोलन की प्रक्रिया में मील का पत्थर साबित हुआ।
- संगठनात्मक दृष्टिकोण से देखें तो इस आंदोलन ने पहली बार अखिल भारतीय आंदोलन के लिये स्थानीय कमेटियों की महत्ता को प्रतिस्थापित किया। इसके पूर्व स्वदेशी आंदोलन के दिनों में सिर्फ बंगाल में ही स्थानीय कमेटियाँ स्थापित की गई थीं।
- होमरूल लीग आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा व नया आयाम प्रदान किया।

नोट: होमरूल आंदोलन के बढ़ते प्रभाव व कॉन्ग्रेस में आई सक्रियता से ब्रिटिश सरकार ने चिंतित होकर जून 1917 में होमरूल लीग के मुख्य नेताओं- एनी बेसेंट, जॉर्ज अरंडेल, वी.पी. वाडिया को गिरफ्तार कर लिया। इसके विरोध में सुब्रह्मण्यम अय्यर ने 'सर की उपाधि' वापस कर दी।

लखनऊ समझौता (1916)

- 1916 में लखनऊ में हुए कॉन्ग्रेस के वार्षिक सम्मेलन की अध्यक्षता अंबिका चरण मजूमदार ने की थी। यह सम्मेलन दो घटनाओं की दृष्टि से ज्यादा महत्वपूर्ण रहा।
 - ◆ पहला, उग्रवादियों की 9 वर्ष उपरांत कॉन्ग्रेस में पुनः वापसी, जिन्हें 1907 के सूरत अधिवेशन में कॉन्ग्रेस से निष्कासित कर दिया गया था।
 - ◆ दूसरा, कॉन्ग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच हुआ ऐतिहासिक 'लखनऊ समझौता'।
- लीग व कॉन्ग्रेस परस्पर सहयोग द्वारा संवैधानिक सुधार की योजना बनाने व लागू करवाने हेतु सरकार पर दबाव डालने पर सहमत हो गए। इस संयुक्त योजना को 'लखनऊ समझौता' या 'कॉन्ग्रेस लीग योजना' नाम दिया गया।
- कॉन्ग्रेस ने मुस्लिमों की पृथक् सांप्रदायिक निर्वाचन मंडल की मांग को स्वीकार कर लिया।
- लखनऊ समझौते के अंतर्गत उन्नीस स्मरण पत्र (Nineteen Memorandum) में ब्रिटिश सरकार से भारत को अविलंब स्वशासन प्रदान करने, प्रांतीय विधान परिषदों में भारतीयों की संख्या बढ़ाने तथा उन्हें और अधिक अधिकार प्रदान करने एवं वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में आधे से ज्यादा भारतीय सदस्यों को शामिल करने की मांग की गई।
- कॉन्ग्रेस और मुस्लिम लीग की यह निकटता असहयोग आंदोलन के स्थगित होने तक बनी रही। असहयोग आंदोलन के स्थगन के साथ ही लखनऊ समझौता भंग हो गया।
- मदन मोहन मालवीय ने कॉन्ग्रेस व लीग के मध्य होने वाले इस समझौते का विरोध किया था।

राष्ट्रीय आंदोलन का अंतिम चरण (1919-1947 ई.) The Last Phase of the National Movement (1919-1947 AD.)

गांधीवादी चरण

1919-1947 के काल को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के काल का 'तृतीय चरण' या 'गांधी युग' के नाम से जाना जाता है। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अंतिम चरण था। स्वतंत्रता संग्राम के पहले दो चरणों में नरमपंथी एवं गरमपंथी दलों के नेताओं के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन चलाया गया। वहीं तीसरे चरण में महात्मा गांधी स्वतंत्रता आंदोलन के केंद्र बिंदु रहे। इस युग के राष्ट्रीय आंदोलन ने जनसंघर्ष का रूप धारण कर लिया। राष्ट्रवादियों, क्रांतिकारियों, सैनिकों, किसानों, मजदूरों, सामान्यजन सभी ने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस काल में कॉन्ग्रेस ने पहले तो ब्रिटिश सरकार के साथ असहयोग और फिर अहिंसात्मक संघर्ष की नीति अपनाई, जिसके तीन निरंतर प्रगतिशील चरण-असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन थे।

इस चरण में हिंदू-मुस्लिम मतभेद अपने चरम स्तर पर पहुँच गए। परिणामतः 1940 में जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने पृथक् राष्ट्र

'पाकिस्तान' की मांग की। 1942 में 'करो या मरो' नारे के साथ 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन चलाया गया। अंततः भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की विजय हुई और 15 अगस्त, 1947 को देश स्वतंत्र हो गया।

गांधी : सामान्य परिचय

- गांधीजी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 में गुजरात के एक संपन्न परिवार में पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। अपनी वकालत की पढ़ाई इंग्लैंड से पूरी करने के बाद गांधीजी 1892-1893 में दक्षिण अफ्रीका में व्यापार करने वाले एक भारतीय मुसलमान व्यापारी दादा अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने के लिये डरबन (दक्षिण अफ्रीका) चले गए। इस मुकदमे में इन्होंने सफलता हासिल की।
- इस दौरान इन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के प्रति रंगभेद नीति को स्पष्ट रूप से महसूस किया। वहाँ प्रत्येक भारतीय को पंजीकरण प्रमाण पत्र लेना और यह प्रमाण पत्र हर समय अपने पास रखना आवश्यक था। गांधीजी ने इस संबंध में 'एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट' का विरोध किया।

अध्याय संबंधी परीक्षापयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज अधिकारी ए.ओ. ह्यूम द्वारा दिसंबर 1885 में की गई थी।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 28 दिसंबर, 1885 को बंबई के ग्वालिया टैंक में स्थित 'गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज' में हुआ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नाम दादाभाई नौरोजी ने सुझाया था।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता व्योमेश चंद्र बनर्जी ने की थी।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गांधीजी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को समाप्त करने का सुझाव दिया था।
- अमृतसर के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन (1919) के प्रस्ताव के अनुसार महात्मा गांधी द्वारा कांग्रेस का नया संविधान लिखने हेतु एन.सी. केलकर तथा आई.बी. सेन को चुना गया।
- 1921 के अहमदाबाद अधिवेशन में सी.आर.दास को अध्यक्ष नामित किया गया, परंतु इस दौरान उनके जेल में रहने के कारण इस अधिवेशन की अध्यक्षता हकीम अजमल खां ने की और सी.आर.दास ने जेल से कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।
- लाला लाजपत राय ने 'यंग इंडिया' में लिखे एक लेख में "कांग्रेस को डफरिन के दिमाग की एक उपज बताया।"
- 1885 से 1905 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उदारवादी नेताओं का वर्चस्व रहा, इसलिये इस काल को उदारवादी चरण कहा जाता है।
- उदारवादी नेताओं में दादाभाई नौरोजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोज शाह मेहता, मदन मोहन मालवीय आदि प्रमुख थे।
- लंदन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लिये समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से 1889 में विलियम वेडरबर्न की अध्यक्षता में 'ब्रिटिश कमिटी ऑफ इंडिया' की स्थापना की गई।
- उग्रवादी नेताओं में लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चंद्र पाल तथा अरविंद घोष आदि प्रमुख थे।
- तिलक ने 1893 में गणपति महोत्सव तथा 1895 में शिवाजी महोत्सव की शुरुआत की।
- 'बंगवासी', 'केसरी' और 'द हिंदू' जैसे पत्र-पत्रिकाओं में कांग्रेस की उदारवादी नीतियों का विरोध किया गया।
- बाल गंगाधर तिलक को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष कभी नहीं चुना जा सका। 1 अगस्त, 1920 को तिलक की मृत्यु हो गई, उनकी मृत्यु के उपरान्त उनकी अर्था को महात्मा गांधी, शौकत अली तथा डॉ. सैफुद्दीन किचलू आदि नेताओं ने उठाया था।
- लाल, बाल, पाल त्रिगुट में मात्र लाला लाजपत राय ने 1920 में कलकत्ता के विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन के काल में 1905 में बंगाल का विभाजन किया गया।
- बंगाल विभाजन सांप्रदायिक विभाजन था, पश्चिमी बंगाल हिंदू बहुल तथा पूर्वी बंगाल मुस्लिम बहुल क्षेत्र था।
- बंगाल विभाजन के विरोध में 7 अगस्त, 1905 में कलकत्ता के टाउन हॉल में हुई बैठक में स्वदेशी आंदोलन की घोषणा हुई तथा बहिष्कार प्रस्ताव पारित हुआ।
- 16 अक्टूबर, 1905 को लोगों ने बंगाल विभाजन के विरोध में 'शोक दिवस' मनाया।
- स्वदेशी आंदोलन में पहली बार महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली।
- 1906 में राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी ने अपने भाषण के दौरान पहली बार कांग्रेस के मंच से 'स्वराज' शब्द का उल्लेख किया।
- ढाका के नवाब सलीमुल्लाह खाँ के नेतृत्व में 30 दिसंबर, 1906 को ढाका में आयोजित एक बैठक में 'अखिल भारतीय मुस्लिम लीग' की स्थापना की घोषणा की गई।
- 1909 में मॉर्ले-मिंटो सुधार के माध्यम से मुसलमानों के लिये पृथक् निर्वाचन मंडल की मांग स्वीकार कर ली गई।
- 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधार के तहत केंद्रीय तथा प्रांतीय विधानमंडलों के आकार एवं उनकी शक्ति में वृद्धि की गई।
- 12 दिसंबर, 1911 को इंग्लैंड के सम्राट जॉर्ज पंचम तथा महारानी मैरी के स्वागत में एक भव्य दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया। इसी आयोजन में बंगाल विभाजन रद्द किया गया।
- दिल्ली दरबार में ही भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा की गई।
- 1 नवंबर, 1913 को संयुक्त राज्य अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को नगर में लाला हरदयाल ने 'गदर पार्टी' की स्थापना की।
- गदर पार्टी द्वारा 'गदर' नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया।
- कामागाटामारू प्रकरण (1914) कनाडा में भारतीयों के प्रवेश से संबंधित था, जिसमें ऐसे भारतीयों का प्रवेश वर्जित था, जो सीधे भारत से कनाडा न आए हो।
- प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) में उदारवादियों ने ताज के प्रति निष्ठा प्रकट की और ब्रिटेन को पूर्ण समर्थन दिया।
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ही दिसंबर 1915 में काबुल (अफगानिस्तान) में महेंद्र प्रताप के नेतृत्व में एक अस्थायी सरकार का गठन किया गया। बरकतुल्ला इस सरकार के प्रधानमंत्री नियुक्त किये गए थे। इस सरकार को जर्मनी व रूस ने मान्यता प्रदान की थी।
- 1916 में पूना में बाल गंगाधर तिलक ने 'होमरूल लीग' की स्थापना की।
- 'मराठा' (अंग्रेजी में) व 'केसरी' (मराठी में) बाल गंगाधर तिलक के प्रमुख पत्र थे।
- 'कॉमनवील' व 'न्यू इंडिया' ऐनी बेसेंट की पत्रिका थी।

- क्रिप्स मिशन की वापसी के बाद गांधीजी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव को कॉन्ग्रेस की वर्धा बैठक में स्वीकार कर लिया गया जो 'भारत छोड़ो आंदोलन' का प्रस्ताव था।
- 'भारत छोड़ो आंदोलन' (1942) को 'अगस्त क्रांति' के नाम से भी जाना जाता है। भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अंतिम महान लड़ाई थी।
- कॉन्ग्रेस की ग्वालिया टैंक, बंबई (8 अगस्त, 1942) बैठक में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पारित किया गया।
- आज़ाद हिंद फौज का विचार सबसे पहले मोहन सिंह के मन में आया, वे ब्रिटेन की भारतीय सेना के अधिकारी थे।
- 1 सितंबर, 1942 को आज़ाद हिंद फौज की पहली डिवीज़न का गठन किया गया।
- 2 जुलाई, 1943 को सुभाष चंद्र बोस सिंगापुर पहुँचे। इन्हें आज़ाद हिंद फौज का सर्वोच्च सेनापति घोषित किया गया।
- लाल किला मुकदमा (1945) आज़ाद हिंद फौज के सिपाही सरदार गुरुबख्श सिंह, श्री प्रेम सहगल तथा शाहनवाज़ पर चलाया गया। अदालत में इनकी वकालत भूलाभाई देसाई, तेज बहादुर सप्रू, काटजू तथा जवाहरलाल नेहरू ने की।
- सी.आर. फॉर्मूला, राजगोपालाचारी द्वारा 1944 में लाया गया, जिसमें कॉन्ग्रेस और मुस्लिम लीग के समझौते की बात रखी गई।
- अक्टूबर 1943 में लिनलिथगो की जगह लॉर्ड वेवेल भारत के वायसराय बनकर आए। 14 जून, 1945 को वेवेल द्वारा 'वेवेल योजना' प्रस्तुत की गई।
- वेवेल प्रस्ताव पर विचार-विमर्श हेतु जून 1945 में शिमला सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुस्लिम लीग की अनुचित मांगों के कारण यह सम्मेलन असफल रहा।
- भारतीय नेताओं से अनौपचारिक स्तर पर बातचीत के लिये 24 मार्च, 1946 को कैबिनेट मिशन भारत आया। कैबिनेट मिशन के सदस्यों में शामिल थे- सर स्टैफोर्ड क्रिप्स, ए.वी. अलेक्जेंडर तथा पेंथिक लॉरेंस।
- कैबिनेट मिशन की संस्तुतियों के आधार पर संविधान सभा का गठन किया गया।
- 9 दिसंबर, 1946 को डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा की अस्थायी अध्यक्षता में संविधान सभा की पहली बैठक आयोजित की गई।
- 11 दिसंबर, 1946 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद को संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष बनाया गया।
- अगस्त 1946 में पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत की पहली अंतरिम राष्ट्रीय सरकार की घोषणा की गई, इसमें मुस्लिम लीग की भागीदारी नहीं थी।
- 3 जून, 1947 को माउंटबेटन ने भारत के विभाजन के साथ सत्ता हस्तांतरण की एक योजना प्रस्तुत की, जिसे माउंटबेटन योजना कहा जाता है।
- माउंटबेटन योजना के आधार पर ब्रिटिश संसद ने 18 जुलाई, 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 पारित किया। इस अधिनियम के तहत ही 15 अगस्त, 1947 को भारत व पाकिस्तान को डोमिनियन का दर्जा प्राप्त हुआ।

अभ्यास प्रश्न

1. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना की थी?

(a) ए.ओ. ह्यूम	(b) महात्मा गांधी
(c) सच्चिदानंद सिन्हा	(d) इनमें से कोई नहीं

44th BPSC (Pre), 2000
2. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना का वर्ष था?

(a) वर्ष 1885 में	(b) वर्ष 1886 में
(c) वर्ष 1887 में	(d) वर्ष 1888 में

*43rd BPSC (Pre), 1999; Jharkhand PCS (Pre), 2003
UK PSC (Mains), 2006; UPPSC (Mains), 2010*
3. 1927 की बटलर कमेटी का उद्देश्य था-

(a) केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकारों की अधिकारिता निश्चित करना।
(b) भारत के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट की शक्तियाँ निश्चित करना।
(c) राष्ट्रवादी प्रेस पर सेंसर-व्यवस्था अधिरोपित करना।
(d) भारत सरकार एवं देशी रियासतों के बीच संबंध सुधारना।

IAS, 2017
4. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का प्रथम अधिवेशन कहाँ हुआ था?

(a) कलकत्ता	(b) लाहौर
(c) मुंबई	(d) पुणे

*42nd BPSC (Pre), 1997; UK. UDA/LDA (Mains), 2007
UPPSC (Mains), 2007; IAS, 2008*
5. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के पहले अध्यक्ष कौन थे?

(a) ए.ओ. ह्यूम	(b) डब्लू. सी. बनर्जी
(c) दादाभाई नौरोजी	(d) इनमें से कोई नहीं

MP PSC (Pre), 1994
6. किसने कॉन्ग्रेस की स्थापना के समय भारत का वायसराय कौन था?

(a) लॉर्ड रिपन	(b) लॉर्ड लिटन
(c) लॉर्ड कैनिंग	(d) लॉर्ड डफरिन

UPPSC (Mains), 2006, 2011, 2012
7. किसने कॉन्ग्रेस को 'सूक्ष्मदर्शीय अल्पसंख्यक जनता का प्रतिनिधि' बताते हुए उसका मज़ाक उड़ाया था?

(a) लॉर्ड रिपन ने	(b) लॉर्ड डफरिन ने
(c) लॉर्ड कर्ज़न ने	(d) लॉर्ड वेलेजली ने

UPPSC (Mains), 2012
8. निम्न कथनों पर विचार कीजिये:
 1. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष सरोजिनी नायडू थीं।
 2. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैय्यबजी थे।

137. स्वराज पार्टी को संस्थापित किया था-
- बाल गंगाधर तिलक तथा महात्मा गांधी ने
 - विपिन चंद्र पाल तथा लाला लाजपत राय ने
 - सी.आर. दास तथा मोतीलाल नेहरू ने
 - सरदार पटेल तथा राजेंद्र प्रसाद ने

UP. Lower Sub (Pre), 1998
Uttarakhand (Pre), 2002; MPPSC (Pre), 2006
Uttarakhand UDA/LDA (Pre), 2007

138. निम्न में से कौन 'स्वराज पार्टी' के गठन से संबंधित थे?

1. सुभाष चंद्र बोस
2. सी.आर. दास
3. जवाहरलाल नेहरू
4. मोतीलाल नेहरू

नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

- (a) 1, 2, 3 तथा 4
- (b) केवल 1, 2 तथा 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) केवल 2 तथा 4

UPPSC (Pre), 1998

139. मोतीलाल नेहरू और सी.आर. दास द्वारा 1923 में गठित पार्टी का नाम क्या था?

- (a) इंडिपेंडेंट पार्टी
- (b) गदर पार्टी
- (c) स्वराज पार्टी
- (d) इंडियन नेशनल पार्टी

UPPSC (Pre), 2016

140. मोतीलाल नेहरू स्वराज दल के नेता थे। निम्न में से कौन दल में नहीं था-

- (a) श्रीनिवास आयरंगर
- (b) चित्तरंजन दास
- (c) विट्ठलभाई पटेल
- (d) सी. राजगोपालाचारी

UPPSC (Pre), 1991, 1993

141. निम्नलिखित में से किन लोगों ने 16 दिसंबर, 1922 को इंडिपेंडेंट पार्टी बनाने का निर्णय लिया था? नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये:

1. लाला हरदयाल
2. मदनमोहन मालवीय
3. मुहम्मद अली जिन्ना
4. मोतीलाल नेहरू

- (a) 1 तथा 2
- (b) 2 तथा 3
- (c) 3 तथा 4
- (d) 2 तथा 4

UPPSC (Mains), 2006

142. साइमन कमीशन के आने के विरुद्ध भारतीय जन-आंदोलन क्यों हुआ?

- (a) भारतीय, 1919 के अधिनियम की कार्यवाही का पुनरीक्षण कभी नहीं चाहते थे
- (b) साइमन कमीशन द्वारा प्रांतों में द्विशासन की समाप्ति की संस्तुति
- (c) साइमन कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था
- (d) साइमन कमीशन ने देश के विभाजन का सुझाव दिया था

IAS, 2013

143. भारतीयों ने साइमन कमीशन का बहिष्कार किया था क्योंकि:

- (a) इसे भारत विभाजन हेतु बनाया गया था।
- (b) इसमें लेबर पार्टी का कोई प्रतिनिधि नहीं था।
- (c) इसका कोई सदस्य भारतीय नहीं था।
- (d) जनरल डायर इसके अध्यक्ष थे।

IAS, 1998; UPPSC (Mains), 2003; UPPSC (Pre), 2004

144. नीचे दो व्यक्त कथन (A) एवं कारण (R) दिये गए हैं-

कथन (A) : कॉन्ग्रेस ने साइमन आयोग का बहिष्कार किया था।

कारण (R) : साइमन आयोग में एक भी सदस्य भारतीय नहीं था।

उपर्युक्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन एक सही है?

- (a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), सही व्याख्या है (A) की।
- (b) (A) और (R) दोनों सही हैं, किंतु (R) सही व्याख्या नहीं है (A) की।
- (c) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
- (d) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।

UPPSC (Pre, Mains), 2010
UPUDA/LDA Spl (Pre), 2010

145. साइमन कमीशन की सिफारिशों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन सही है?

- (a) इसने प्रांतों में द्वैध शासन को उत्तरदायी सरकार द्वारा प्रतिस्थापित करने की संस्तुति की।
- (b) इसने गृह विभाग के अधीन अंतर-प्रांतीय परिषद् स्थापित करने का सुझाव दिया।
- (c) इसने केंद्र में द्विसदन विधायिका के उन्मूलन का सुझाव दिया।
- (d) इसने भारतीय पुलिस सेवा इस प्रावधान के साथ सृजित करने की संस्तुति की, कि ब्रिटिश भर्ती का, भारतीय भर्ती की तुलना में वेतन तथा भत्ता अधिक होगा।

IAS, 2010

उत्तरमाला

1. (a)	2. (a)	3. (d)	4. (c)	5. (b)
6. (d)	7. (b)	8. (b)	9. (b)	10. (b)
11. (d)	12. (a)	13. (c)	14. (a)	15. (d)
16. (c)	17. (a)	18. (d)	19. (d)	20. (d)
21. (a)	22. (c)	23. (c)	24. (c)	25. (d)
26. (b)	27. (b)	28. (d)	29. (c)	30. (a)
31. (a)	32. (c)	33. (c)	34. (d)	35. (b)
36. (c)	37. (c)	38. (b)	39. (d)	40. (c)
41. (a)	42. (a)	43. (d)	44. (a)	45. (a)
46. (b)	47. (c)	48. (b)	49. (b)	50. (d)
51. (d)	52. (a)	53. (b)	54. (b)	55. (b)
56. (a)	57. (c)	58. (b)	59. (b)	60. (a)
61. (b)	62. (c)	63. (d)	64. (a)	65. (a)
66. (d)	67. (c)	68. (a)	69. (b)	70. (d)
71. (c)	72. (b)	73. (b)	74. (b)	75. (a)
76. (c)	77. (a)	78. (b)	79. (c)	80. (d)
81. (a)	82. (b)	83. (b)	84. (c)	85. (b)
86. (b)	87. (d)	88. (d)	89. (d)	90. (a)
91. (b)	92. (c)	93. (a)	94. (d)	95. (c)
96. (a)	97. (b)	98. (a)	99. (d)	100. (b)
101. (c)	102. (a)	103. (b)	104. (a)	105. (c)
106. (c)	107. (c)	108. (b)	109. (b)	110. (b)
111. (d)	112. (c)	113. (c)	114. (b)	115. (b)
116. (c)	117. (b)	118. (a)	119. (d)	120. (a)
121. (b)	122. (a)	123. (a)	124. (c)	125. (d)
126. (b)	127. (a)	128. (a)	129. (a)	130. (b)
131. (b)	132. (a)	133. (b)	134. (c)	135. (d)
136. (c)	137. (c)	138. (d)	139. (c)	140. (d)
141. (d)	142. (c)	143. (c)	144. (a)	145. (a)

भारत के गवर्नर जनरल तथा वायसराय (Governor General and Viceroy of India)

बंगाल के गवर्नर	
गवर्नर	कार्यकाल की महत्वपूर्ण घटनाएँ
रॉबर्ट क्लाइव (1757-60 और 1765-67)	<ul style="list-style-type: none"> 1757 का प्लासी का युद्ध बंगाल के समस्त क्षेत्र के लिये उप-दीवान नियुक्त बंगाल के लिये मुहम्मद रजा खाँ, बिहार के लिये राजा शिताबराय तथा उड़ीसा के लिये रायदुर्लभ की नियुक्ति की। बंगाल में द्वैध शासन का जनक श्वेत विद्रोह 1765 में इलाहाबाद की संधियाँ (अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय के साथ) सलावत जंग तथा आलमगीर-II द्वारा 'उमरा' की उपाधि दी गई। क्लाइव ने सेना के तीन केंद्रों की स्थापना की- इलाहाबाद, मुंगेर व बांकीपुर (पश्चिम बंगाल)
वेन्सिटार्ट (1760-64)	<ul style="list-style-type: none"> बक्सर का युद्ध (1764)
कर्टियर (1769-72)	<ul style="list-style-type: none"> बंगाल में अकाल (1770)
वारेन हेस्टिंग्स (1772-74)	<ul style="list-style-type: none"> बंगाल का अंतिम गवर्नर बंगाल में द्वैध शासन को समाप्त किया। 1772 में प्रत्येक जिले में एक फौजदारी तथा दीवानी अदालतों की स्थापना।
बंगाल के गवर्नर जनरल	
वारेन हेस्टिंग्स (1774-85)	<ul style="list-style-type: none"> रेग्युलेंटिंग एक्ट (1773) के तहत वारेन हेस्टिंग्स को बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल बनाया गया। 1781 का अधिनियम- इसके तहत गवर्नर जनरल तथा उसकी काउंसिल एवं कलकत्ता उच्च न्यायालय के मध्य शक्तियों का कार्यक्षेत्र स्पष्ट रूप से विभाजित कर दिया गया। नंद कुमार पर अभियोग लगाकर फाँसी; इस मुकदमे को 'न्यायिक हत्या' की संज्ञा दी जाती है। 1781 में मुस्लिम शिक्षा सुधार के लिये कलकत्ता में प्रथम मदरसा स्थापित। 1775-82 का प्रथम मराठा युद्ध तथा 1782 में सालबाई की संधि। 1780-84 का द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध व मंगलौर की संधि। 1784 का पिट्स इंडिया एक्ट, जिसमें परिषद् के सदस्यों की संख्या 4 से घटाकर 3 कर दी गई। 1784 में विलियम जॉन्स द्वारा 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' की स्थापना। चार्ल्स विलकिंस द्वारा 'गीता व हितोपदेश' का अंग्रेजी में अनुवाद। राजकीय कोषागार मुर्शिदाबाद से कलकत्ता स्थानांतरित। इजारेदारी प्रथा का प्रारंभ। हिंदू और मुस्लिम कानूनों को संहिताबद्ध किया। अभिज्ञान शाकुंतलम का अंग्रेजी अनुवाद कराया गया। देशी रियासतों के साथ घरे की नीति अपनाई। 1775 में आसफुद्दौला के साथ फैजाबाद की संधि।
नोट: पिट्स इंडिया एक्ट (1784) के विरोध में इस्तीफा देकर जब वारेन हेस्टिंग्स 1785 में इंग्लैंड पहुँचा तो एडमंड बर्क द्वारा उसके ऊपर महाभियोग का मुकदमा दायर किया गया परंतु 1795 में इसे सभी आरोपों से मुक्त कर दिया गया।	

<p>लॉर्ड कर्जन (1899-1905)</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● भारत का सबसे अलोकप्रिय वायसराय। रोनाल्डसे ने कर्जन की जीवनी लिखी। ● कर्जन के कार्यों को आधार बताते हुए गोखले ने इनको 'आधुनिक भारत का औरंगजेब' कहा। ● केंद्रीय गुप्तचर व्यवस्था की शुरुआत हुई। ● 1899 में भारतीय टंकण व पत्र मुद्रा अधिनियम के द्वारा पाउंड को भारत में मान्य घोषित किया। (1 पाउंड = 15 रुपये)। ● 1900 में 'पंजाब भूमि अन्याक्रमण एक्ट' पारित किया जिससे किसानों की भूमि गैर कृषकों के पास न जाए। ● 1901 में भारत में पहली बार जातिगत आधार पर जनगणना की गई। ● 1903 में पूसा में एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई। ● कर्जन 1903 में फारस गया और फारस-अफगान झगड़े को सुलझाने के लिये मैकमोहन को नियुक्त किया। ● 1904 में 'ऑफिशियल सीक्रेट एक्ट' को पारित कर सरकारी नियंत्रण को और बढ़ा दिया। ● पुलिस प्रशासन के सुधार हेतु एंड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में पुलिस आयोग का गठन (1902) किया। ● सर टॉमस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना (1902) तथा विश्वविद्यालय सुधार अधिनियम (1904) पारित। ● मॉनक्रीफ की अध्यक्षता में एक सिंचाई आयोग नियुक्त किया गया। ● उद्योग व वाणिज्य विभाग की स्थापना। ● प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904 ● भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना। ● सर एंटनी मैकडोनाल्ड की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन ● तिब्बत में 'यंग हस्बैंड मिशन' (1903-04) ● 1905 का बंगाल विभाजन। ● मुख्य सेनापति किचनर से विवाद के कारण कर्जन ने अगस्त 1905 में त्यागपत्र दे दिया। ● कर्जन ऐसा वायसराय था जो अत्यधिक केंद्रीकरण व निरंकुश शासन का हिमायती था। ● भारत की शिक्षा व्यवस्था पर चोट करते हुए उसने कहा कि "पूर्व एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ विद्यार्थी को कभी डिग्री नहीं मिलती।" ● कलकत्ता नगरपालिका की स्थिति पर व्यंग्य करते हुए इसने कहा कि "मैं वायसराय के बाद कलकत्ता का महापौर बनना चाहूँगा।" ● कॉन्ग्रेस पर व्यंग्य करते हुए कहा कि "कॉन्ग्रेस अब मरणशील है और मेरी इच्छा है कि मैं इसकी शांतिपूर्ण मृत्यु में सहयोग कर सकूँ।"
<p>लॉर्ड मिंटो द्वितीय (1905-1910)</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● बंग-भंग विरोधी तथा स्वदेशी आंदोलन दबाने का प्रयास। ● 'मुस्लिम लीग' की स्थापना (1906) ● खुदीराम बोस को फाँसी, बाल गंगाधर तिलक को राजद्रोह के आरोप में 6 वर्ष का कारावास (1908) ● 'भारतीय परिषद् अधिनियम-1909' अथवा मार्ले-मिंटो सुधार अधिनियम (1909) पारित, जिसमें सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली की शुरुआत हुई। ● सूत में कॉन्ग्रेस का विभाजन (1907) ● 1908 का समाचार-पत्र अधिनियम पारित। ● वायसराय की कार्यकारिणी में पहला भारतीय सदस्य एस.पी. सिन्हा की नियुक्ति हुई।
<p>लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (1910-16)</p>	<ul style="list-style-type: none"> ● बंगाल विभाजन रद्द, भारत की राजधानी का कलकत्ता से दिल्ली हस्तान्तरण, तृतीय दिल्ली दरबार (1911) का आयोजन। ● 1912 में एस्लिंगटन आयोग का गठन हुआ। इस आयोग ने नागरिक सेवाओं में 25 प्रतिशत भारतीयों की नियुक्ति की बात कही। ● 1913 में शिक्षा संकल्प प्रस्ताव लाया गया, जिसके तहत सरकार ने भारत में अशिक्षा को समाप्त करने का दायित्व लिया।

अभ्यास प्रश्न

- कलकत्ता में एशियाटिक सोसायटी की स्थापना के समय बंगाल का गवर्नर जनरल कौन था?
(a) लॉर्ड कॉर्नवालिस (b) लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स
(c) लॉर्ड वेलेजली (d) लॉर्ड बेंटिक
UPPSC (RI), 2014
- भारतीय लोक सेवा का प्रवर्तन किया गया—
(a) बेंटिक के शासनकाल में (b) कॉर्नवालिस के शासनकाल में
(c) कर्जन के शासनकाल में (d) डलहौजी के शासनकाल में
UPPSC (Spl) (Mains), 2004
- भारतीय राज्यों पर अंग्रेजी प्रभुत्व स्थापित करने के लिये किसने प्रशासन में सहायक संधि प्रणाली का सूत्रपात किया?
(a) वारेन हेस्टिंग्स (b) लॉर्ड वेलेजली
(c) लॉर्ड कॉर्नवालिस (d) लॉर्ड डलहौजी
UPPSC (Mains), 2016
- सती प्रथा पर पाबंदी किसने लगाई?
(a) वारेन हेस्टिंग्स (b) लॉर्ड कर्जन
(c) विलियम बेंटिक (d) लॉर्ड केनिंग
*UPPSC (Pre), 1990; MPPSC (Pre), 1993, 1998
UPPSC (Mains), 2013*
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना किसके काल में हुई थी?
(a) वारेन हेस्टिंग्स (b) लॉर्ड वेलेजली
(c) लॉर्ड कर्जन (d) लॉर्ड विलियम बेंटिक
*UP Lower (Pre), 2009
UPPSC (Mains), 2010*
- निम्नलिखित में से कौन एक भारत का प्रथम वायसराय था?
(a) लॉर्ड क्लाइव (b) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(c) लॉर्ड केनिंग (d) लॉर्ड रिपन
UPPSC (GIC), 2010
- निम्नलिखित में से किस गवर्नर जनरल ने भारत में दास प्रथा को समाप्त किया था?
(a) लॉर्ड कॉर्नवालिस (b) लॉर्ड एलनबरो ने
(c) लॉर्ड विलियम बेंटिक ने (d) सर जॉन शोर ने
*UPPSC (SPL) (Pre), 2008
UPUDA/LDA (Mains), 2010
UPPSC (Mains), 2011*
- भारत में स्थानीय स्वायत्त शासन को किसने प्रोत्साहित किया था?
(a) लॉर्ड मेयो (b) लॉर्ड लिटन
(c) लॉर्ड केनिंग (d) लॉर्ड रिपन
*Uttarakhand PSC (Mains), 2002
UPPSC (Pre), 1996, 2010*
- भारत में अंग्रेजों के समय में प्रथम जनगणना हुई?
(a) लॉर्ड डफरिन के कार्यकाल में
(b) लॉर्ड लिटन के कार्यकाल में
(c) लॉर्ड मेयो के कार्यकाल में
(d) लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में
UPPSC (Pre), 2000; UP Lower Sub (SPL) (Pre), 2004
- निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. राबर्ट क्लाइव बंगाल के प्रथम गवर्नर जनरल थे।
2. विलियम बेंटिक भारत के प्रथम गवर्नर जनरल थे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2
IAS (Pre), 2007
- किस गवर्नर जनरल पर महाभियोग का मुकदमा चलाया गया था?
(a) वारेन हेस्टिंग्स (b) लॉर्ड क्लाइव
(c) लॉर्ड कॉर्नवालिस (d) लॉर्ड वेलेजली
MPPSC (Pre), 1992
- लॉर्ड कॉर्नवालिस की कब्र कहाँ स्थित है?
(a) गाजीपुर (b) बलिया
(c) वाराणसी (d) गोरखपुर
UPPSC (Mains), 2011
- निम्नलिखित में से कौन-सा युग सुलेमित नहीं है?
(a) हेक्टर मुनरो - बक्सर का युद्ध
(b) लॉर्ड हेस्टिंग्स - आंग्ल-नेपाल युद्ध
(c) लॉर्ड वेलेजली - चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध
(d) लॉर्ड कॉर्नवालिस - तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध
UPUDA/LDA (Mains), 2010
- तथाकथित कुप्रशासन के आधार पर किस गवर्नर जनरल ने मैसूर राज्य के प्रशासन को ले लिया था?
(a) लॉर्ड वेलेजली (b) लॉर्ड हेस्टिंग्स
(c) लॉर्ड विलियम बेंटिक (d) लॉर्ड हार्डिंग
*UPPSC (Pre), 2003
UP Lower Sub (Pre), 2004*
- उगों के दमन में निम्नलिखित में से कौन संबद्ध था?
(a) जनरल हेनरी ग्रेंडरगास्ट (b) कैप्टन स्लीमैन
(c) एलेक्जेंडर बर्न्स (d) कैप्टन राबर्ट पेम्बरटन
IAS (Pre), 1997
- अंग्रेजों द्वारा सिंध विजय संपन्न हुई—
(a) लॉर्ड एलनबरो के समय (b) लॉर्ड हार्डिंग के समय
(c) लॉर्ड ऑकलैंड के समय (d) लॉर्ड एमहर्स्ट के समय
UPPSC (Mains), 2012
- भारत में प्रथम रेल लाइन का निर्माण किन नगरों के बीच हुआ?
(a) हावड़ा और सीरामपुर (b) बंबई और थाणे
(c) मद्रास और गुंटूर (d) दिल्ली और आगरा
*UPPSC (Pre), 2001
UP Lower Sub (Pre), 2004*

उत्तरमाला

- | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (b) | 3. (b) | 4. (c) | 5. (c) |
| 6. (c) | 7. (b) | 8. (d) | 9. (c) | 10. (b) |
| 11. (a) | 12. (a) | 13. (d) | 14. (c) | 15. (b) |
| 16. (a) | 17. (b) | | | |

भूमिका

1765 में कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई। दीवानी अधिकार मिलते ही कंपनी के कर्मचारियों ने बंगाल में लूट-खसोट एवं व्यक्तिगत व्यापार द्वारा धन एकत्र करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन दिया। साथ ही, कंपनी द्वारा लगातार युद्धरत रहने से कंपनी की वित्तीय स्थिति खराब हुई तथा उसे भारी आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ा। स्थिति इतनी गंभीर थी कि वह अपने कर्मचारियों के वेतन भुगतान में भी असमर्थता का अनुभव कर रही थी। फलतः कंपनी ने ब्रिटिश संसद से आर्थिक सहायता के लिये प्रस्ताव किया। प्रतिवेदन के फलस्वरूप ब्रिटिश संसद द्वारा रेग्युलेशन एक्ट पारित किया गया।

रेग्युलेशन एक्ट, 1773

भारत के संवैधानिक इतिहास में सन् 1773 का रेग्युलेशन एक्ट विशेष महत्त्व रखता है। यह अधिनियम (Act) भारत में कंपनी के प्रशासन पर ब्रिटिश संसदीय नियंत्रणों के प्रयासों की शुरुआत थी। परिणामतः अब कंपनी के शासनाधीन क्षेत्रों का प्रशासन कंपनी के व्यापारियों का निजी मामला नहीं रहा। इस एक्ट में उल्लिखित प्रावधान निम्नवत् थे-

- इस एक्ट के द्वारा कलकत्ता में उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) की स्थापना की गई। इसमें एक मुख्य न्यायाधीश तथा तीन अन्य न्यायाधीश होते थे। उच्चतम न्यायालय को प्राथमिक तथा अपील के अधिकार दिये गए। यह न्यायालय सन् 1774 में गठित किया गया तथा सर एलियाज इम्पे (Elijah Impey) को इसका मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया तथा चेम्बर्स, लिमेस्टर एवं हाइड अन्य न्यायाधीश नियुक्त हुए।
- इस अधिनियम के द्वारा बंगाल के गवर्नर को 'बंगाल का गवर्नर जनरल' पद नाम दे दिया गया। साथ ही, उसे कुछ विशेष मामलों में मद्रास तथा बंबई की प्रेसिडेंसियों का अधीक्षण भी करना था। बंगाल में एक प्रशासक मंडल बनाया गया, जिसमें गवर्नर जनरल तथा चार सदस्यों को नियुक्त किया गया। प्रथम गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स तथा चार अन्य सदस्य फिलिप फ्राँसिस, क्लेवरिंग, मॉनसन तथा बारवेल थे। ये कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स की सिफारिश पर केवल ब्रिटिश सम्राट द्वारा ही हटाये जा सकते थे।
- प्रशासक मंडल के सदस्यों का निर्वाचन 5 वर्षों के लिये किया जाना था। इस मंडल में बहुमत से निर्णय होते थे। मत बराबर होने की स्थिति में अध्यक्ष अपना मत देता था।
- इस अधिनियम के अनुसार कंपनी के अधीन कोई सैनिक अथवा असैनिक अधिकारी निजी व्यापार तथा भारतीयों से किसी भी प्रकार का उपहार, दान या पारितोषिक ग्रहण नहीं कर सकते थे।

- इस अधिनियम में यह व्यवस्था की गई कि कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स अब 4 वर्ष के लिये चुना जाएगा और इनकी संख्या बढ़ाकर 24 कर दी गई, जिसमें एक चौथाई (6 सदस्य) प्रतिवर्ष अवकाश प्राप्त करेंगे।
- इस अधिनियम के द्वारा ब्रिटिश क्राउन का 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स' के माध्यम से कंपनी पर नियंत्रण और सशक्त हो गया। इसको भारत के राजस्व, नागरिक एवं सैन्य मामलों संबंधी जानकारी ब्रिटिश क्राउन के साथ साझा करना अनिवार्य कर दिया गया।
- कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का वेतन बढ़ा दिया गया।

1781 का संशोधनात्मक अधिनियम

- यह संशोधन अधिनियम 1773 के रेग्युलेशन एक्ट की विसंगतियों को दूर करने के लिये लाया गया।
- इसे 'एक्ट ऑफ सेटलमेंट' के नाम से भी जाना जाता है।
- इस अधिनियम के अनुसार कंपनी के पदाधिकारी अपने शासकीय रूप में किये गए कार्यों के लिये उच्चतम न्यायालय के अधिकार क्षेत्र से बाहर हो गए।
- उच्चतम न्यायालय के अधिकार क्षेत्र को और स्पष्ट किया गया तथा उसे कलकत्ता के सभी निवासियों पर लागू कर दिया गया।
- इस अधिनियम में यह प्रावधान किया गया कि, उच्चतम न्यायालय को अपनी आज्ञाएँ व आदेश लागू करते समय एवं सरकार को नियम व विनियम बनाते समय भारतीयों के धार्मिक तथा सांस्कृतिक रीति-रिवाजों को ध्यान में रखना होगा।
- अब गवर्नर जनरल की परिषद् द्वारा बनाए गए नियम को सर्वोच्च न्यायालय में पंजीकृत कराना आवश्यक नहीं था।
- कुल मिलाकर, 1781 का संशोधनात्मक अधिनियम कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के बीच शक्ति पृथक्करण की दिशा में बड़ा कदम था।

पिट्स इंडिया एक्ट, 1784

- सरकार का कंपनी के मामलों में नियंत्रण बढ़ गया।
- छह सदस्यीय नियंत्रण बोर्ड (Board of Control) का गठन किया गया तथा सभी असैनिक, सैनिक तथा राजस्व संबंधी मामलों को एक नियंत्रण बोर्ड के अधीन कर दिया गया। इसमें यह भी निर्दिष्ट था कि गवर्नर जनरल की परिषद् के सदस्य अनुबंधित सेवक (Covenanted Servant) ही होंगे।
- भारत में प्रशासन गवर्नर जनरल तथा उसकी चार के स्थान पर तीन सदस्यों वाली परिषद् के हाथ में दे दिया गया। यद्यपि उसे अभी भी बहुमत के आधार पर कार्य करना होता था।

9. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिये तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये:

सूची-I

- A. नियंत्रण परिषद् की स्थापना
B. सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना
C. ईसाई मिशनरियों को भारत में कार्य करने की अनुमति
D. गवर्नर जनरल परिषद् में कानूनी सदस्य की नियुक्ति

सूची-II

1. नियामक अधिनियम, 1773
2. पिट का भारतीय अधिनियम, 1784
3. चार्टर अधिनियम, 1813
4. चार्टर अधिनियम, 1833

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	1	3	4
(c)	1	2	4	3
(d)	2	4	1	3

UP UDA/LDA (Pre), 2002

10. बोर्ड ऑफ कंट्रोल की स्थापना किस अधिनियम के अंतर्गत की गई?
(a) रेग्युलेटिंग एक्ट, 1773
(b) सेटलमेंट अधिनियम, 1781
(c) चार्टर अधिनियम, 1813
(d) पिट्स इंडिया अधिनियम, 1784

UPPSC (Mains), 2015

11. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने चाय के व्यापारिक एकाधिकार को खो दिया—
(a) 1793 के चार्टर एक्ट द्वारा (b) 1813 के चार्टर एक्ट द्वारा
(c) 1833 के चार्टर एक्ट द्वारा (d) 1853 के चार्टर एक्ट द्वारा

UPPSC (Pre), 2015

12. भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से क्राउन को स्थानांतरित किया गया—
(a) 1833 के चार्टर अधिनियम के अंतर्गत
(b) 1853 के चार्टर अधिनियम के अंतर्गत
(c) 1858 के भारत सरकार अधिनियम के अंतर्गत
(d) 1861 के भारतीय परिषद् अधिनियम के अंतर्गत

UPPSC (Mains) 2007, UPPSC (GIC) 2010

13. निम्नांकित में से किस एक्ट के द्वारा भारत के गवर्नर जनरल को अध्यादेश जारी करने की शक्ति प्रदान की गई?
(a) चार्टर एक्ट, 1833
(b) इंडियन काउंसिल्स एक्ट, 1861
(c) इंडियन काउंसिल्स एक्ट, 1892
(d) इंडियन काउंसिल्स एक्ट, 1909

UPPSC (Pre), 1997

UP UDA/LDA (Pre), 2001

14. मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड की रिपोर्ट—
(a) भारतीय परिषद् अधिनियम, 1909 का आधार बनी
(b) भारत शासन अधिनियम, 1919 का आधार बनी

- (c) भारत शासन अधिनियम, 1935 का आधार बनी
(d) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 का आधार बनी

Jharkhand PSC (Pre), 2011
53rd to 55th BPSC (Pre), 2011

15. प्रांतों में द्वैध शासन प्रणाली (Dyarchy) किस अधिनियम के अंतर्गत लागू की गई थी?
(a) भारतीय परिषद् अधिनियम, 1892
(b) भारतीय परिषद् अधिनियम, 1909
(c) भारत शासन अधिनियम, 1919
(d) भारत शासन अधिनियम, 1935

UPPSC (Pre), 2004,
UPPSC (Pre), 2005

16. मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड प्रस्ताव किससे संबंधित थे?
(a) सामाजिक सुधार (b) शैक्षिक सुधार
(c) पुलिस प्रशासन में सुधार (d) सांविधानिक सुधार

IAS (Pre), 2016

17. भारत शासन अधिनियम, 1935 के मुख्य तत्वों में सम्मिलित थे—
1. एक संघ का प्रावधान
2. प्रांतों को स्वायत्तता देना
3. प्रांतों में द्विशासन की प्रस्तावना
4. केंद्रीय विधायिका को संप्रभुता प्रदान करना

नीचे दिये कूट संरचना में से ही सही उत्तर का चयन कीजिये:
(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 2 और 3 (d) 3 और 4

UPUDA/LDA (Pre), 1998

18. बंबई, मद्रास और कलकत्ता में उच्च न्यायालयों की स्थापना कब हुई?
(a) 1862 में (b) 1851 में
(c) 1871 में (d) 1922 में

19. निम्नलिखित में से किसने भारत शासन अधिनियम, 1935 को 'गुलामी का अधिकार पत्र' कहा था?
(a) जवाहरलाल नेहरू (b) एम.ए. जिन्ना
(c) डॉ. राजेंद्र प्रसाद (d) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

UPUDA/LDA Spl (Pre), 2010

20. यह किसने कहा— "मुझे इस आरोप के संबंध में कोई क्षमा नहीं मांगनी है कि संविधान के प्रारूप में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1935 के एक बड़े भाग को पुनः उत्पादित कर दिया गया है।"
(a) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(b) सरदार पटेल
(c) जवाहरलाल नेहरू
(d) डॉ.बी.आर. अंबेडकर

UPPSC (Mains), 2015

उत्तरमाला

1. (c)	2. (c)	3. (a)	4. (a)	5. (b)
6. (a)	7. (a)	8. (c)	9. (b)	10. (d)
11. (c)	12. (c)	13. (b)	14. (b)	15. (c)
16. (d)	17. (a)	18. (a)	19. (a)	20. (d)

स्वाधीनता संग्राम के समय की कुछ प्रमुख कृतियाँ

पुस्तक	लेखक/लेखिका	पुस्तक	लेखक/लेखिका
अनहैप्पी इंडिया	: लाला लाजपत राय	अ नेशन इन द मेकिंग	: सुरेंद्रनाथ बनर्जी
बंदी जीवन	: सचींद्र नाथ सान्याल	फाउंडेशन ऑफ इंडियन कल्चर	: श्री अरबिंदो
इंडिया डिवाइडेड	: राजेंद्र प्रसाद	गिल्डी मैन ऑफ इंडियाज़ पार्टीशन	: राम मनोहर लोहिया
पाकिस्तान और द पार्टीशन ऑफ इंडिया	: बी.आर. अंबेडकर	माई एक्सपेरिमेंट विद ट्रुथ	: महात्मा गांधी
द फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब	: भगवती चरण बोहरा	इंडियन स्ट्रगल	: सुभाष चंद्र बोस
सत्यार्थ प्रकाश	: दयानंद सरस्वती	आनंद मठ	: बंकिम चंद्र चटर्जी
पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया	: दादाभाई नौरोजी	तराना-ए-हिंद	: मोहम्मद इकबाल
इंडिया विन्स फ्रीडम	: मौलाना अबुल कलाम आज़ाद	इंडिया फ्रॉम कर्जन टू नेहरू एंड आफ्टर	: दुर्गा दास
डिस्कवरी ऑफ इंडिया	: जवाहरलाल नेहरू	द इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस, 1857	: वी.डी. सावरकर
द स्कोप ऑफ हैप्पीनेस	: विजयलक्ष्मी पंडित	द लाइफ डिवाइन	: श्री अरबिंदो
सॉक्स ऑफ इंडिया	: सरोजिनी नायडू	गीतांजलि (अंग्रेज़ी संस्करण 1912)	: रवींद्रनाथ टैगोर
द बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स	: जवाहरलाल नेहरू	नील दर्पण	: दीनबंधु मित्र
इंडियन फिलॉसफी	: डॉ. राधाकृष्णन	हिंदू फॉर सेल्फ कल्चर	: लाला हरदयाल
रिडल्स इन हिंदूइज्म	: भीमराव अंबेडकर	इंडिया अनरेस्ट	: वैंलेन्टाइन शिरोल
हिंद स्वराज	: महात्मा गांधी	इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया	: आर. सी. दत्त
गीता रहस्य	: बाल गंगाधर तिलक	द क्रीसेंट मून, द पोस्ट ऑफिस	: रवींद्रनाथ टैगोर
मदर इंडिया	: कैथरीन मेयो	भवानी मंदिर	: बारींद्र कुमार घोष

ब्रिटिश भारत में प्रकाशित समाचार-पत्र एवं पत्रिका

समाचार पत्र	भाषा	वर्ष	प्रकाशन-स्थल	संस्थापक/संपादक
बंगाल गजट	अंग्रेज़ी	1780	कलकत्ता	जेम्स ऑगस्टस हिककी (भारत का पहला समाचार पत्र)
उदन्त मार्तण्ड	हिंदी (हिंदी भाषा में पहला साप्ताहिक समाचार पत्र)	1826	कलकत्ता	जुगल किशोर
अमृत बाज़ार पत्रिका	बांग्ला, 1878 से अंग्रेज़ी में प्रकाशन	1868	कलकत्ता	मोतीलाल घोष, शिशिर कुमार घोष
पायनियर	अंग्रेज़ी	1865	इलाहाबाद	जॉर्ज एलन (कुछ मानक स्रोतों में जुलियन रॉबिन्सन भी मिलता है।)
सोमप्रकाश	बांग्ला	1859	कलकत्ता	ईश्वर चंद्र विद्यासागर
हिंदू	अंग्रेज़ी	1878	मद्रास	वीर राघवाचारी
केसरी, मराठा	केसरी मराठी में, जबकि मराठा अंग्रेज़ी में प्रकाशित	1881	पुणे	बाल गंगाधर तिलक

विभिन्न किसान आंदोलन : एक नज़र में					
आंदोलन	वर्ष	प्रभावित क्षेत्र	नेतृत्व	कारण	प्रगति, दिशा व परिणाम
रंगपुर विद्रोह	1783	दिनाजपुर (बंगाल)	धीरज नारायण नूरुलुद्दीन	ईस्ट इंडिया कंपनी ने जमींदारों पर कर बढ़ा दिया जिसका बोझ अंत में किसानों पर पड़ा।	किसानों ने कचहरियों, खाद्यान्न भंडारों और सरकारी पदाधिकारियों पर आक्रमण किया और अपनी सरकार बनाई।
मोपला विद्रोह (प्रथम चरण)	1836	मालाबार	-	अंग्रेजों द्वारा नई राजस्व व्यवस्था लागू करना।	सन् 1836 में विद्रोह हुआ, अंग्रेज अधिकारियों व बिचौलियों पर हमला किया गया। कई वर्षों तक ब्रिटिश सेना इन्हें दबा न सकी।
नील विद्रोह	1859-60	बंगाल	दिगंबर विश्वास, विष्णु विश्वास	यूरोपीय लोगों द्वारा किसानों से बलपूर्वक नील की खेती करवाना	प्रारंभ में अर्जियाँ दी गईं व शांतिपूर्ण प्रदर्शन हुए। लोगों ने लगान देना बंद कर दिया। सन् 1860 में यह विद्रोह समाप्त हो गया।
पाबना विद्रोह	1873-76	बंगाल	ईशानचंद्र राय, शंभुनाथ पाल तथा केशव चंद्र राय	अधिक लगान तथा 1859 के अधिनियम के तहत मिली काश्त-कारों की ज़मीन पर कब्जे के विरुद्ध षड्यंत्र और बेदखली।	यह लड़ाई मुख्यतः कानूनी स्तर पर ही सीमित थी। हिंसक घटनाएँ न के बराबर हुईं। सन् 1885 में बंगाल काश्तकारी कानून बनाकर राहत पहुँचाई गई।
दक्कन विद्रोह	1874-75	महाराष्ट्र के पूना, अहमदनगर, शोलापुर व सतारा जिले	बाबा साहब देशमुख	रैयतवाड़ी इलाके के किसान कर्ज अदायगी को लेकर महाजनों के जाल में फँस गए। कपास की गिरती कीमतें व अकाल के बावजूद लगान की दर में अत्यधिक वृद्धि।	महाजनों का सामाजिक बहिष्कार, दक्कन कृषक राहत अधिनियम, 1879 से किसानों को महाजनों के विरुद्ध संरक्षण प्रदान किया गया।
चंपारण सत्याग्रह	1917	चंपारण, रामनगर मोतिहारी, बेतिया, मधुबनी	महात्मा गांधी	तिनकठिया प्रणाली के विरोध में।	गांधीजी का आगमन हुआ तथा एक आयोग द्वारा बागान मालिक अवैध वसूली का 25 फीसदी वापस करने पर सहमत हो गए।
खेड़ा सत्याग्रह	1918	खेड़ा (गुजरात)	महात्मा गांधी, वल्लभभाई पटेल	फसल बर्बाद होने के बावजूद सरकार द्वारा मालगुजारी वसूल किया जाना।	गांधीजी ने कहा कि यदि सरकार गरीब किसानों के लगान माफ कर दे तो जो लगान देने में सक्षम हैं, वे पूरा लगान देंगे।
अवध किसान आंदोलन	1920	प्रतापगढ़, रायबरेली, सुल्तानपुर, फैजाबाद	झींगुरी लाल सिंह, बाबा रामचंद्र	अवैध लगान व बेदखली अधिनियम लागू। अवध मालगुजारी (संशोधन अधिनियम) से लगान में बढ़ोतरी।	प्रतापगढ़ में 'नाई-धोबी सेवा बंद' तथा सामाजिक बहिष्कार। बाबा रामचंद्र के जेल भेजने पर प्रदर्शन।
एका आंदोलन	1921-22	बाराबंकी, हरदोई बहराइच, सीतापुर	मदारी पासी	लगान में बढ़ोतरी।	इस आंदोलन में छोटे ज़मींदार भी शामिल हुए।
मोपला विद्रोह (द्वितीय चरण)	1921	मालाबार	अली मुसलियार	अधिक लगान व बेदखली	पुलिस स्टेशन, सरकारी दफ्तर व जमींदारों के घर पर हमला। बाद में इसका स्वरूप सांप्रदायिक हो गया। सन् 1921 में विद्रोह को कुचल दिया गया।
बारदोली सत्याग्रह	1928	सूरत का बारदोली ताल्लुका	सरदार वल्लभभाई पटेल	लगान में बढ़ोतरी	वल्लभभाई के नेतृत्व में लगान अदा करने वाले किसानों के सामाजिक बहिष्कार का अस्त्र इस्तेमाल किया गया।

सामाजिक सुधार अधिनियम : एक नज़र में			
अधिनियम	वर्ष	गवर्नर जनरल/ वायसराय	विषय
शिशु वध प्रतिबंध	1795 और 1804	सर जॉन शोर (1795), लॉर्ड वेल्लेजली (1804)	शिशु हत्या को साधारण हत्या माना जाने वाला
सती प्रथा पर प्रतिबंध	1829	लॉर्ड विलियम बेंटिक	सती प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध।
दास प्रथा पर प्रतिबंध	1843	लॉर्ड एलनबरो	दासता को प्रतिबंधित कर दिया गया।
विधवा पुनर्विवाह अधिनियम	1856	लॉर्ड कैनिंग	विधवा पुनर्विवाह की अनुमति।
सिविल मैरिज एक्ट	1872	लॉर्ड नॉर्थब्रुक	इस अधिनियम के द्वारा लड़कियों के विवाह की निम्नतम आयु 14 वर्ष और लड़कों की 18 वर्ष निर्धारित की गई।
सम्मति आयु अधिनियम	1891	लॉर्ड लैंसडाउन	लड़की के लिये विवाह-योग्य आयु 12 वर्ष निर्धारित की गई।
शारदा अधिनियम	1929	लॉर्ड इरविन	लड़की के लिये विवाह-योग्य आयु 14 वर्ष तथा लड़कों की 18 वर्ष निर्धारित।
हिंदू महिला संपत्ति अधिनियम	1937	लॉर्ड लिनलिथगो	हिंदू महिलाओं को संपत्ति का अधिकार।

भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के प्रमुख नारे	
नारा	व्यक्ति
भारत छोड़ो, करो या मरो	महात्मा गांधी
स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है	बाल गंगाधर तिलक
साइमन कमीशन वापस जाओ	लाला लाजपत राय
सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है	रामप्रसाद बिस्मिल
इन्कलाब जिंदाबाद	भगत सिंह
साम्राज्यवाद का नाश हो	भगत सिंह
दिल्ली चलो	सुभाष चंद्र बोस
सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा	मोहम्मद इकबाल
पूर्ण स्वराज्य, आराम हराम है	जवाहरलाल नेहरू
मारो फिरंगी को	मंगल पांडेय
जय जवान, जय किसान	लाल बहादुर शास्त्री (1965 में पाकिस्तान युद्ध के समय)
कर मत दो	सरदार वल्लभभाई पटेल
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा	श्यामलाल गुप्ता
वंदे मातरम्	बंकिम चंद्र चटर्जी
जन-गण-मन अधिनायक जय हे	रवींद्रनाथ ठाकुर
तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा	सुभाषचंद्र बोस
हू लिक्स इफ इंडिया डाइज	जवाहरलाल नेहरू

Think
IAS...



Think
Drishti

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. के लिये दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम Distance Learning Programme

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों की भारी मांग एवं सुझावों को ध्यान में रखते हुए 'दृष्टि टीम' ने अपने दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम (Distance Learning Programme) के अंतर्गत मध्य प्रदेश पी.सी.एस. परीक्षा पर आधारित पाठ्य-सामग्री तैयार की है।

दृष्टि की अनुसंधान एवं विश्लेषण टीम ने देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों के मार्गदर्शन में पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए विषय-वस्तुओं का बहुमूल्य संकलन किया है जो आपकी सफलता में निश्चित रूप से मील का पत्थर साबित होगा।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत इच्छुक अभ्यर्थियों को निम्नलिखित खंडों पर अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी:

सामान्य अध्ययन (प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा)

सीसैट [प्रारंभिक परीक्षा (द्वितीय प्रश्नपत्र) + मुख्य परीक्षा (तृतीय प्रश्नपत्र)]

अभ्यास हेतु मॉडल प्रश्नपत्र (प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत कुल 36 बुकलेट्स दी जाएंगी

सामान्य अध्ययन + सीसैट

(28 + 8 बुकलेट्स)

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें- 8130392351, 8130392356



For any query please contact:

8130392354, 56, 87501-87501, 011-47532596

दृष्टि पब्लिकेशन्स की प्रमुख पुस्तकें



हमारी आगामी प्रस्तुतियाँ



641, 1st Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-9
Ph.: 011-47532596, 87501 87501

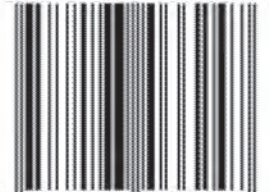
Website:

www.drishtipublications.com, www.drishtiias.com

E-mail:

info@drishtipublications.com

ISBN 978-81-934662-4-7



9 788193 466247

मूल्य : ₹ 340